Our London Office :
11, Aldwych. W. C. 2

Tele phone : 205
Tele grams 'Bhavishya'

सम्पादक :—
श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... १२) रु०
छः माही चन्दा ... ६॥) रु०
तिमाही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य चार आने
Annas Four Per Copy

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़्री कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

वर्ष १, खण्ड ३ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; ३० अप्रैल, १९३१ | सं० ७, पूर्ण सं० ३१
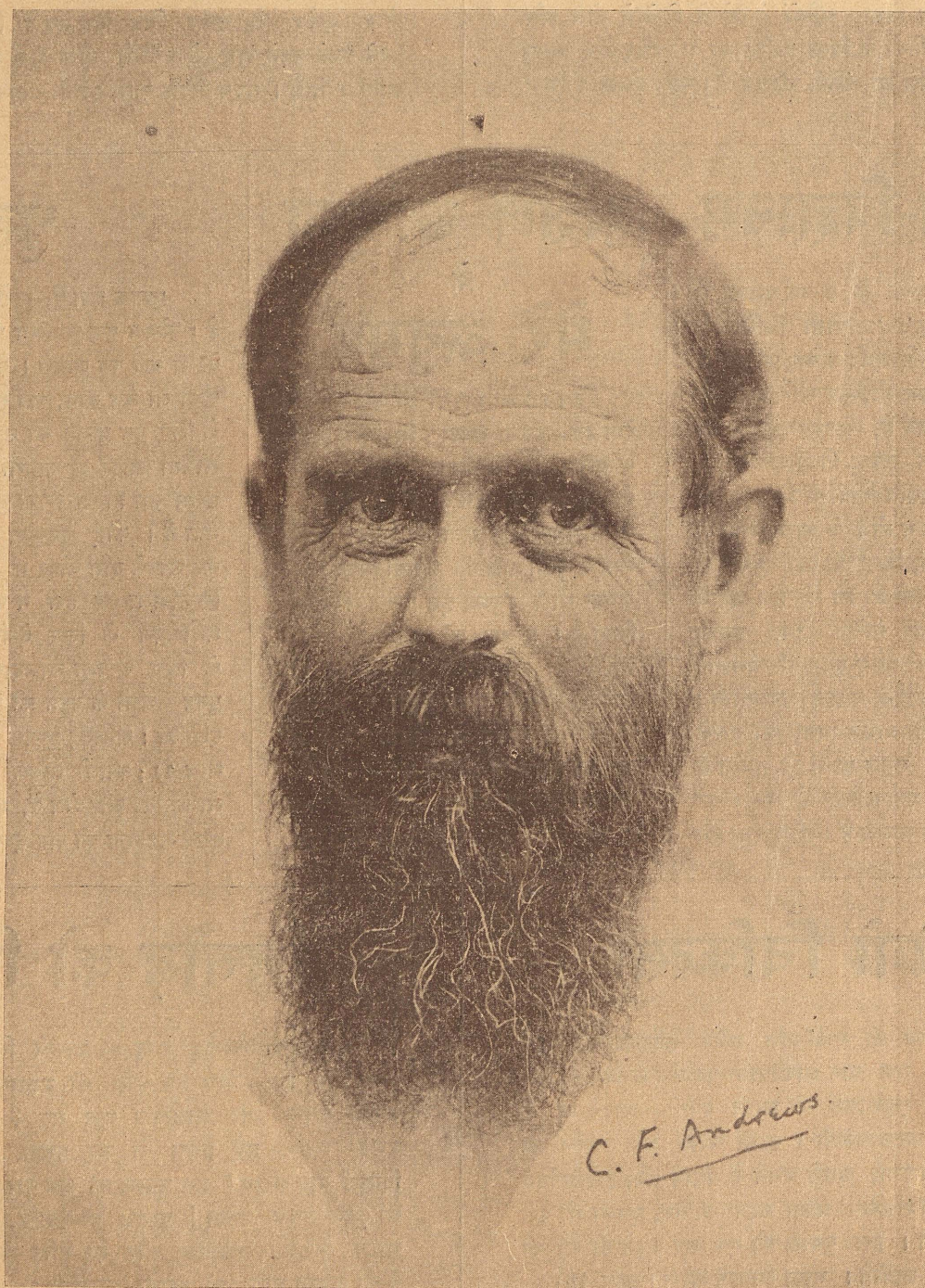
मनुष्य मात्र के शुभचिन्तक, दीन-बन्धु—रेवरेण्ड सी० एफ़० एण्ड्रयूज़

THE FINE ART PRINTING COTTAGE, CHANDRALAK, ALLAHABAD.

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य केवल ३) रु०

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है।
लाख दो लाख में बस एक है लम्बी दाढ़ी॥

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु-सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार स्वयं कर सकती हैं। मूल्य २॥) रु०

दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव

जिन प्रवासी भाइयों की करुण स्थिति देख कर महात्मा गाँधी; मि० सी० एफ़० एण्डरूज़ और मिस्टर पोलक आदि बड़े-बड़े नेताओं ने ख़ून के आँसू बहाए हैं; उन्हीं भाइयों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पं० भवानीदयाल जी ने अपना सारा अनुभव इस पुस्तक में चित्रित किया है। पुस्तक को पढ़ने से प्रवासी भाइयों की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति तथा वहाँ के गौराङ्ग प्रभुओं की स्वार्थपरता, अन्याय एवं अत्याचार का पूरा दृश्य देखने को मिलता है। एक बार अवश्य पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए!! मूल्य २॥) रु०

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन की अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम हास्यरस-पूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। भोजन के पश्चात् मनोरञ्जन के लिए ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत-मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य १॥)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्मबल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना, आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) रु०

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' और विद्याविनोद-ग्रन्थमाला का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!
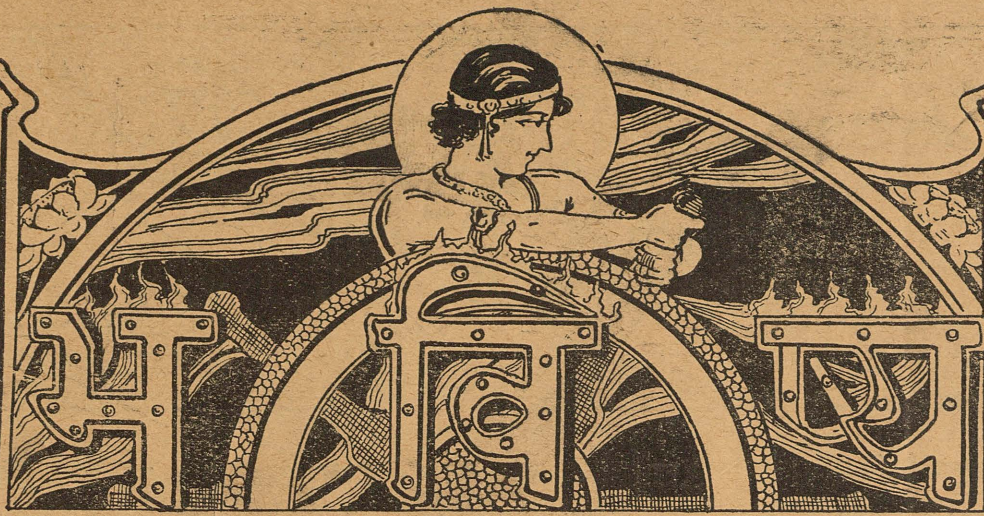
पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड ३ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार ; ३० अप्रैल, १९३१ | सं० ७, पूर्ण सं० ३१

चिटगाँव में सशस्त्र-विप्लववादियों के आक्रमण की आशङ्का !

दंगे के भय से बाबा ख़लीलदास काशी से निकाले गए !!

लंका में पं० जवाहरलाल नेहरू का अभूतपूर्व स्वागत

क्या कानपुर में एक नए षड्यन्त्र-केस की योजना हो रही है ??

देहली, बम्बई तथा इलाहाबाद आदि स्थानों में बकरीद का त्योहार सकुशल निबट गया

(एसोसिएटेड प्रेस द्वारा २९वीं अप्रैल की रात तक आए हुए 'भविष्य' के विशेष तार)

—सहयोगी "सीलोन ऑब्ज़रवर" का कहना है, कि भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू के आगमन की सूचना पाते ही लङ्का के निवासी प्रेमोन्मत्त हो गए थे। आपके स्वागतार्थ एक विशेष स्वागतकारिणी-समिति का निर्माण किया गया था। पं० जवाहरलाल जी के कोलम्बो पहुँचते ही हज़ारों की संख्या में नर-नारी आपका स्वागत करने के लिए कोलम्बो-बन्दर पर एकत्र हुए थे। चारों ओर राष्ट्रीय झण्डे और गाँधी टोपियाँ ही दिखाई देती थीं। "क्रेकोविया" नामक जहाज़ के पहुँचते ही, जिस पर जवाहरलाल जी बम्बई से गए थे—सारा जहाज़ दर्शकों से घेर लिया गया। स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री० डी० बी० जयतिलाका, उपाध्यक्ष श्री० एफ़० ए० ओबेस्करे, श्रीयुत और श्रीमती देसाई, श्री० अन्थोनी, श्री० सोमा सुन्दरम्, श्री० एडमेली, श्री० पेरेरा आदि अनेक प्रतिष्ठित नगर-निवासियों तथा राष्ट्रीय नेताओं ने आपके तथा श्रीमती कमला नेहरू के गले में फूलों के हार डाले और उन पर मनों फूलों की वर्षा की गई। एक विशेष रूप से सुसज्जित मोटर में आपका जुलूस निकाला गया। दर्शकों ने जगह-जगह मोटर को रोक कर नेहरू महोदय के बोसे लिए और उन पर पुष्पों की वर्षा की। जुलूस में लगाए जाने वाले राष्ट्रीय नारों से सारा कोलम्बो एक बार ही प्रकम्पित हो उठा। जवाहरलाल जी की मोटर के फ़ुटबोर्ड पर चढ़ कर स्थान-स्थान पर प्रेमोन्मत्त नगर-निवासियों ने अपनी प्रथानुसार उन्हें चूमा। भीड़ इतनी अधिक थी कि स्वयंसेवकों के छक्के छूट गए। उन्हें कई मान-पत्र भेंट किए गए, जिसके उत्तर में भूतपूर्व राष्ट्रपति ने बड़े ही सारगर्भित एवं हृदयग्राही व्याख्यान दिए। सारांश यह, कि जवाहरलाल जी के वहाँ जाने से लङ्का में एक नवीन जीवन का सञ्चार हो गया है। शेष समाचार 'भविष्य' के आगामी अङ्क में प्रकाशित होंगे।

—शिमला का २९वीं अप्रैल की रात का समाचार है, कि देहली तथा बम्बई में बकरीद का त्योहार सकुशल निबट गया। इलाहाबाद में भी किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ। कॉङ्ग्रेस कमिटी की ओर से मुसलमानों के लिए 'सबील' का विशेष प्रबन्ध किया गया था। इस सम्बन्ध में प्रयाग के अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

—'हिन्दुस्तान टाइम्स' के विशेष सम्वाददाता को विश्वस्तसूत्र से पता चला है, कि सरकार एक नया 'षड्यन्त्र केस' खड़ा करना चाहती है। कहा जाता है, कि इस मामले में कम से कम ४० व्यक्ति फँसाए जायँगे। यह भी पता चला है, कि कानपुर ही इस मामले का केन्द्रस्थल होगा। यह आशङ्का की जाती है, कि संयुक्त-प्रान्त, दिल्ली और मध्यप्रान्त में गिरफ़्तारियाँ की जायँगी। कुछ सन्दिग्ध व्यक्तियों पर, जो गिरफ़्तार किए गए थे, किन्तु पीछे छोड़ दिए गए थे, कड़ी निगरानी रक्खी जाती है।

—चटगाँव का २७वीं अप्रैल का समाचार है, कि वहाँ के अधिकारियों को एक विशेष परिस्थिति उत्पन्न हो जाने से पल-पल यह आशङ्का हो रही है कि कहीं विप्लवकारी फिर आक्रमण न कर बैठें। इसी कारण बिना लाइसेन्स के जुलूस निकालने या सभाएँ करने की मनाही कर दी गई है। शहर में 'करफ़्यू ऑर्डर' जारी कर दिया गया है। ख़तरनाक स्थानों में मिलिटरी का पहरा नियुक्त किया गया है।

आज के स्पेशल ट्रिब्यूनल में भी आर्मरी रेड केस (Armoury raid case) के सभी अभियुक्त एक पिञ्जड़े में बन्द रक्खे गए, जो ख़ास तौर पर इन्हीं लोगों के लिए बनवाया गया है। अदालत में हथियारबन्द सिपाहियों का कड़ा पहरा था, और बिना तलाशी के कोई भीतर नहीं जाने पाता था।

—बनारस का २७वीं अप्रैल का समाचार है कि वहाँ के ज़िला मैजिस्ट्रेट ने बाबा ख़लीलदास पर १४४वीं धारा जारी की है। कहा जाता है कि आप इस बात की कोशिश में थे कि बनारस के मुसलमान बक़रीद के अवसर पर दङ्गे की आशङ्का से, दो महीने के लिए बनारस छोड़ कर अन्यत्र चले जायँ। उन्हें बनारस से बाहर निकाल दिया गया है।

—लखनऊ का २८वीं अप्रैल का समाचार है, कि कालाकाँकर के राजा साहब की जो चल-सम्पत्ति गत मार्च में मालगुज़ारी की ख़रीफ़-क़िस्त न देने के कारण ज़ब्त कर ली गई थी, वह लौटा देने की आज्ञा दे दी गई है। पाठकों को स्मरण होगा कि इस सम्बन्ध में प्रान्तीय कौन्सिल में अविश्वास का प्रस्ताव भी पास हुआ था।

—बोरसद की ख़बर है कि महात्मा जी कुछ दिनों तक आराम करेंगे, इसलिए सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना उन्होंने कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया है। कहा जाता है कि समझौते के कारण जो परिस्थिति उत्पन्न हो गई है, वह जब तक हल नहीं हो जायगी, तब तक वे वहीं रहेंगे।

—लाहौर का २६वीं अप्रैल का समाचार है कि शेख़पूरा में पुलिस की ओर से एक विदेशी कपड़े की दूकान खोली गई है। कहा जाता है कि अन्य दूकानों पर कॉङ्ग्रेस वालों की पिकेटिङ्ग रहने से विदेशी कपड़े के व्यापार में धक्का पहुँचता है, इसीलिए यह योजना की गई है। इस दूकान से, पुलिस वाले किफ़ायत में कपड़े ख़रीद सकेंगे।

—बारडोली का समाचार है कि सर काउस जी जहाँगीर और श्री० के० एफ़० नारीमन नवसारी में ठहरे हुए हैं। कहा जाता है कि जिन पारसियों ने आन्दोलन के समय सरकार की ज़ब्त की हुई ज़मीन को ख़रीदा था, उन्हें वे किसानों को लौटा देने के लिए समझाएँगे। उन लोगों ने मि० गार्दा से इस सम्बन्ध में बातें कीं। मि० गार्दा ही इस प्रकार की ज़मीनों के मुख्य ख़रीदार हैं। कहा जाता है कि मि० गार्दा ने उन ज़मीनों के ख़रीदने में जितने रुपए लगे हैं उतने ही, अर्थात् १२,०००) रुपए लेकर ज़मीनों को लौटा देना स्वीकार कर लिया है।

—लाहौर का २६ वीं अप्रैल का समाचार है, कि शाहपुर के ज़मींदारों के मानपत्र का उत्तर देते हुए पञ्जाब के गवर्नर ने कहा है, कि हमारी सरकार ने समझौते की शर्तों का अक्षरशः पालन किया है, किन्तु कॉङ्ग्रेस वाले उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। आगे आपने, देश की परिस्थिति के सम्बन्ध में ज़िक्र करते हुए कहा, कि अब सरकार धैर्य धारण नहीं कर सकती। अब जहाँ वह आवश्यकता देखेगी, अपनी शक्ति का प्रयोग करेगी।

—कानपूर का समाचार है, कि श्री० गणेशशङ्कर विद्यार्थी की हत्या करने वाला मुसलमान पकड़ लिया गया है। पुलिस को उसके विरुद्ध पूरे प्रमाण मिले हैं। दो अन्य मुसलमान भी इसी सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए हैं।
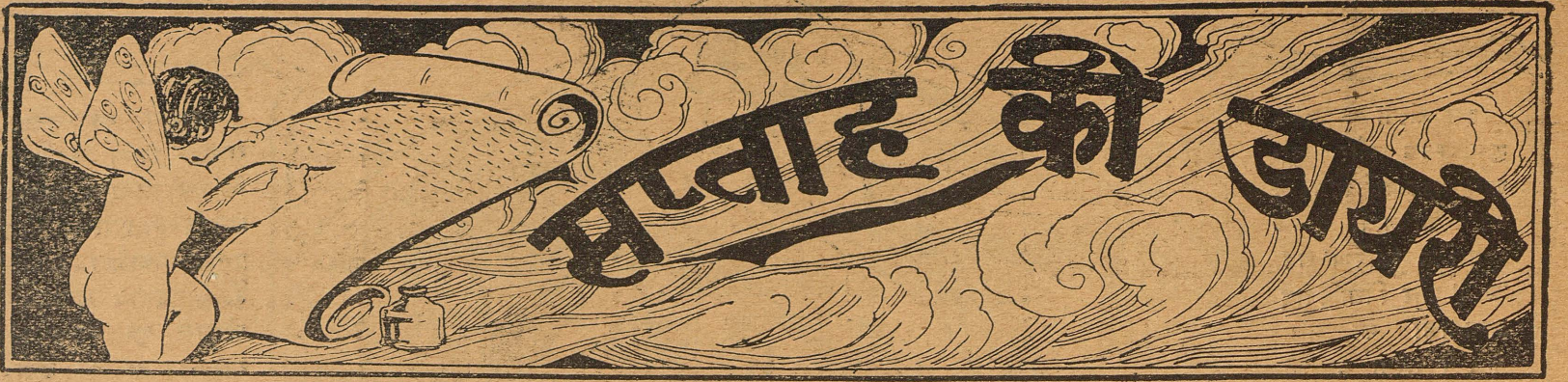
—गत १८वीं अप्रैल का एक समाचार है, कि आगरा मेडिकल स्कूल के लगभग ३०० विद्यार्थियों ने, १० लड़कों के स्कूल से निकाल दिए जाने के कारण अनशन व्रत धारण किया है।

कहा जाता है कि गत साम्प्रदायिक दङ्गों के समय, मेडिकल स्कूल तथा अन्य कॉलेजों के लड़के लाचार होकर १५ दिनों के लिए शहर से बाहर चले गए थे। उनके लौटने पर मेडिकल स्कूल के ३ विद्यार्थी हत्या के अभियोग में ३०२ धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। स्कूल की परीक्षा समीप थी, इस कारण विद्यार्थियों ने इन गिरफ़्तारियों का प्रतिवाद किया। उन्होंने स्कूल के प्रिन्सिपल से इस बात की प्रार्थना की, कि परीक्षा एक महीने के बाद ली जाय; किन्तु उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया। इसके बाद उन्होंने शिक्षा-विभाग के अधिकारियों के पास तार भेजा। जब उनकी बातों पर कान नहीं दिया गया, तो उन्होंने परीक्षा न देने का विचार कर लिया। फलतः वे परीक्षा में नहीं बैठे। केवल कुछ विद्यार्थी, अधिकारियों के कहने-सुनने से हॉल में परीक्षा देने के लिए बैठे। अब अन्य विद्यार्थियों ने भी परीक्षा देने की इच्छा प्रकट की ; किन्तु प्रिन्सिपल ने इन्कार कर दिया तथा पुलिस के बुलाने की धमकी दी तथा वास्तव में फ़ोन के द्वारा पुलिस को ख़बर भी दे दी। विद्यार्थियों को प्रिन्सिपल के इस व्यवहार पर क्रोध आ गया। उन्होंने परीक्षा-कार्य में बाधा डालना शुरू किया। प्रिन्सिपल साहब तुरत १५० हथियार-बन्द पुलिस, ज़िला मैजिस्ट्रेट के साथ लेकर आ पहुँचे। परीक्षा-गृह में पुलिस का पहरा बिठा दिया गया। इसके बाद होस्टल से १३ लड़के पकड़ कर लाए गए, जिनमें १० को प्रिन्सिपल ने बिना समय दिए स्कूल से निकल जाने की आज्ञा दी। ज़िला मैजिस्ट्रेट ने भी उन्हें आगरा छोड़ देने का ज़बानी हुकुम सुनाया। ये लड़के जेल की गाड़ी द्वारा छावनी पहुँचाए गए। यही कारण है कि विद्यार्थियों ने अनशन व्रत धारण किया है। प्रिन्सिपल ने उनकी शिकायतों को सुनने से इन्कार कर दिया है। होस्टल पर पुलिस का अधिकार है। लड़कों को न तो होस्टल के अहाते से बाहर जाने दिया जाता है और न किसी बाहरी आदमी को ही उनसे मिलने दिया जाता है। बाहर से आने वाली और बाहर जाने वाली चिट्ठियों पर कड़ी नज़र रक्खी जाती है। जो लड़के स्कूल से निकाल दिए गए हैं, उनका असबाब, किताब आदि पुलिस उठा ले गई है। अनशन करने वाले विद्यार्थियों की दशा भी चिन्ताजनक हो रही है। अस्पतालों के इन्स्पेक्टर जनरल और शिक्षा-विभाग के मन्त्री के पास इनकी दशा के सम्बन्ध में तार भेजा गया है।

—बङ्गलोर का १९वीं अप्रैल का समाचार है, कि बिन्नी मिल्स के किसी गोरे अफ़सर ने किसी कर्मचारी से गाँधी टोपी उतार देने को कहा। कर्मचारी के ऐसा करने से इन्कार करने पर गोरे ने स्वयं उसकी टोपी उतार कर फेंक दी और उसे बाहर निकाल दिया। इसके बाद उसने अन्य कर्मचारियों की गाँधी टोपियाँ भी उतार लीं। इस मनमानी से इन कर्मचारियों में बड़ी सनसनी फैली हुई है।

ख़ुफ़िया-पुलिस का मुँह काला

मर्दान का १९वीं अप्रैल का समाचार है, कि पञ्जाब के गवर्नर पर गोली चलाने वाले श्री० हरकृष्ण के पिता श्री० गुरुदासराम 'तलवार' जब लाहौर से वापस आ रहे थे, तो ख़ुफ़िया-पुलिस का कोई आदमी उनके साथ था। कहा जाता है, कि रश्की रेलवे-स्टेशन पर उतरने पर कोई अज्ञात व्यक्ति उस आदमी के मुँह में कालिख पोत कर चलता बना।

—मैमनसिंह का २०वीं अप्रैल का समाचार है, कि किशोरगञ्ज के बाबू महेशचन्द्र दास गुप्त के घर की तलाशी ली गई और उनके तृतीय पुत्र कविराज शतीश चन्द्र दास गुप्त, और बाबू चन्द्रकुमार विश्वास के एक पुत्र गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। कहा जाता है, कि बाबू चन्द्रकुमार विश्वास के पुत्र ट्रेन-डकैती के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

'आगामी युद्ध १२ दिनों में समाप्त हो जायगा'

किसानों को ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए

अहमदाबाद का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि यहाँ की एक विराट सभा में सरदार पटेल का भाषण हुआ। आपने कहा कि सरकारी कर्मचारी समझौते की शर्तों को तोड़ रहे हैं। मैं यह बात प्रमाणित करने के लिए तैयार हूँ। किसान अक्षरशः शर्तों का पालन कर रहे हैं। समझौता हो जाने पर भी सरकार की सारी शक्ति दमन करने के लिए तैयार है। सरकार के लिए आवश्यक है कि वह अपनी मनोवृत्ति को बदल दे।

किसानों से अनुरोध करते हुए, आपने कहा कि उन्हें ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए। यदि सत्याग्रह आन्दोलन फिर शुरू किया गया, तो इस बार इस ढङ्ग से युद्ध किया जायगा कि १२ दिन में ही वह समाप्त हो जायगा।

विदेशी कपड़े के व्यापारियों को चेतावनी देते हुए, आपने कहा कि भारत के लिए अब विदेशी वस्त्र का व्यापार असहनीय हो उठा है।

—मद्रास का २०वीं अप्रैल का समाचार है, कि आज सवेरे ३ घायल मनुष्य कुदप्पा से लाए गए, जिन्हें गोलियों की चोट लगी थी। कहा जाता है, कि इन लोगों ने गत १४वीं अप्रैल को पुलिस के एक सब-इन्स्पेक्टर पर आक्रमण किया था। इन्स्पेक्टर ने अपनी आत्म-रक्षा के लिए फ़ायर कर दिया, जिसके फल-स्वरूप वे घायल हो गए। ये तीनों व्यक्ति अस्पताल में रक्खे गए हैं। इन पर पुलिस का कड़ा पहरा है।

—टाँगाइल का २०वीं अप्रैल का समाचार है, कि एक गाँजा के दूकानदार की पत्नी ने आत्म-हत्या कर ली है। कहा जाता है, कि उस स्त्री ने अपने पति से गाँजे का व्यापार छोड़ देने की प्रार्थना की, किन्तु जब उसने ऐसा करने से इन्कार किया तो वह अपने शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़क कर जल मरी।

—कलकत्ते का २०वीं अप्रैल का समाचार है, कि बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेन्डमेण्ट-एक्ट के अभियुक्त श्री० सुबोध दे की मृत्यु हो गई। आपकी अवस्था केवल १८ वर्ष की थी। जेल ही में आपको टायफ़ाइड बुख़ार हो गया था। चिन्ताजनक दशा हो जाने के कारण आप छोड़ दिए गए थे। डॉक्टरों को आशा थी कि आप अच्छे हो जायँगे, किन्तु अचानक मृत्यु हो गई।

—ऊरगाँव का २१वीं अप्रैल का समाचार है, कि यहाँ शराब की दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी कर दी गई है। पिकेटिङ्ग का सङ्गठन ह्युमेनिटेरियन लीग (Humanitarian League) वालों ने किया है। यह पिकेटिङ्ग शान्तिपूर्वक हो रही है। इस पिकेटिङ्ग से शराब की बिक्री बहुत कम हो गई है।

—मद्रास का २१वीं अप्रैल का समाचार है, कि यूरोपियन एसोसिएशन की स्थानीय शाखा ने इस आशय का प्रस्ताव पास किया है, कि यूरोपियन ऐसोसिएशन की कौन्सिल इस बात का पूरा प्रबन्ध करे, कि भारत के शासन-विधान सम्बन्धी समझौते की बातचीत में यहाँ के यूरोपियन समाज का 'उचित प्रतिनिधित्व रहे, इस बात का ध्यान रक्खा जावे कि यहाँ के यूरोपियन व्यापारियों, चाय के काश्तकारों तथा कारख़ाने वालों के हितों की उपेक्षा न की जाय।

—अहमदाबाद का २१वीं अप्रैल का समाचार है, कि सरकार ने जो नवजीवन प्रेस और प्रेस की ज़मीन ज़ब्त कर ली थी, उसके सम्बन्ध में प्रेस के मैनेजर और सरकार से झगड़ा चल रहा है। सरकार की ओर से मैनेजर को सूचना दी गई कि मशीन और टाईप कुछ बम्बई और कुछ अहमदाबाद में पड़े हुए हैं ; उन्हें उठा कर ले जाइए। मैनेजर ने उत्तर दिया है कि पुलिस जहाँ से उन वस्तुओं को उठा कर ले गई है वहीं पहुँचा दे। सरकार प्रेस की ज़मीन भी लौटा देने के लिए तैयार है, किन्तु मालगुज़ारी के अलावा नोटिस की फ़ीस भी वसूल करना चाहती है। मैनेजर मालगुज़ारी देने के लिए तैयार है, किन्तु नोटिस की फ़ीस अदा करने से उन्होंने इन्कार कर दिया है और सरकार को उन्होंने लिखा है, कि मालगुज़ारी अदा हो चाहे न हो, समझौते की शर्तों के अनुसार वह ज़मीन लौटा देने के लिए बाध्य है।

—दिल्ली की २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि दिल्ली षड्यन्त्र-केस के एक अभियुक्त श्री० विश्वम्भरनाथ की मृत्यु सिविल अस्पताल में हो गई। आपको परिशिष्ट-शोथ (Appendicitis) नामक रोग हो गया था, जिसके लिए अस्पताल में ऑपरेशन भी किया गया था।

—मिदनापुर का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि मिदनापुर के मैजिस्ट्रेट स्वर्गीय जेम्स पेड्डी के हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में एक पते की बात मालूम हुई है। कहा जाता है, कि जिस स्कूल में मि० पेड्डी को गोली मारी गई थी, उसीके समीप रहने वाली एक नौकरानी के छोटे लड़के ने लोगों से कहा है कि "बिमल भैया ने साहब (मि० पेड्डी) को मारा और मार कर वह भाग गया।" पुलिस ने यह समाचार पाकर श्री० विमलकुमार गुप्त के पिता श्री० अक्षयकुमार गुप्त के मकान की तलाशी ली। विमलकुमार स्कूल का विद्यार्थी है।

कहा जाता है कि अक्षयकुमार गुप्त ने पुलिस से कहा है, कि मेरे लड़के से मेरी नहीं बनती, इसलिए इस घटना से १५ दिन पहले मैंने उसे अपने घर से निकाल दिया था। मुझे यह नहीं मालूम कि आजकल वह क्या करता है।

कहा जाता है कि उस नौकरानी ने भी अपने लड़के की बातों का समर्थन किया है।

—अहमदाबाद का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि श्री० मणिलाल कोठारी, जो फ़ॉरेनर्स एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, आज छोड़ दिए गए हैं। कलक्टर के पूछने पर आपने ज़मानत देने से इन्कार किया। पीछे बम्बई-सरकार ने उन्हें छोड़ देने की आज्ञा दी। कहा जाता है, कि फ़ॉरेनर्स एक्ट के अनुसार जो मामला इन पर चलाया जाने वाला था, वह उठा लिया गया है।

—लाहौर का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि लाहौर हाईकोर्ट की आज्ञानुसार लाहौर षड्यन्त्र-केस के ४ मुख़बिर पुलिस की हिरासत से हटा कर सेण्ट्रल जेल में रक्खे गए हैं।

महिलाओं को निर्वाचन-अधिकार

दिल्ली का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि आज यहाँ की म्युनिसिपैलिटी में महिलाओं के वोट देने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पेश किया गया। गत वर्ष यहाँ की म्युनिसिपैलिटी ने स्त्रियों के वोट देने के अधिकार को सिद्धान्त के तौर पर स्वीकार कर लिया था। इस बार मुसलमानों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उन्होंने यह उज़्र पेश किया कि उनकी स्त्रियाँ आगामी १० वर्षों तक इस प्रस्ताव से लाभ नहीं उठा सकेंगी। अन्त में यह निश्चित हुआ कि वोट देने वाली महिला में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए :—

(१) उसकी उम्र कम से कम २१ वर्ष की हो।

(२) उसके नाम से कोई ऐसा मकान हो, जिसका सालाना किराया कम से कम १२०) रु० हो। अथवा—

(अ) वह पढ़ी-लिखी हो और चुनाव के पहले, नवम्बर मास तक के ६ महीने वह यहाँ की म्युनिसिपैलिटी में रह चुकी हो। अथवा—

(ब) वह किसी ऐसे पुरुष की धर्मपत्नी या विधवा हो, जिसकी सम्पत्ति का सूद कम से कम १२०) रु० हो। अथवा—

(स) वह किसी ऐसे पुरुष की धर्मपत्नी हो, जो चुनाव के पहले इनकम टैक्स देता रहा हो।

—पटने का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि गङ्गाविशुन सुनार और भगवान सुनार, जिन पर बम रखने के सम्बन्ध में मुक़दमा चलाया गया था, निर्दोष पाकर छोड़ दिए गए हैं।

—लाहौर का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि वहाँ के एक उर्दू साप्ताहिक 'थड़दल' के सम्पादक श्री० फ़तहचन्द और मालिक श्री० रामलाल ३०२ धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। कहा जाता है, कि उक्त पत्र में 'अङ्गरेज़ों को क़त्ल करो' शीर्षक एक लेख निकला था। ये गिरफ़्तारियाँ इसी के सम्बन्ध में की गई हैं।

—कलकत्ते का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि कलकत्ता हाईकोर्ट की स्पेशल बेञ्च ने मछुआ बाज़ार बम-केस का फ़ैसला कर दिया। सेशन्स जज के स्पेशल ट्रिब्यूनल ने १७ अभियुक्तों को ३ वर्ष से लेकर १० वर्ष तक की सज़ाएँ दी थीं। हाईकोर्ट ने ६ अभियुक्तों को छोड़ दिया है और निरञ्जनदास गुप्त की सज़ा १० वर्ष से घटा कर ७ वर्ष कर दी है। शेष अभियुक्तों की सज़ा ३-३ वर्ष की कर दी गई है।

देवघर षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त श्री० सेन की शोचनीय दशा

'अमृतबाज़ार पत्रिका' ने हज़ारीबाग सेन्ट्रल जेल से छूटे हुए एक क़ैदी का पत्र प्रकाशित किया है, जिससे पता चलता है कि देवघर षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त श्री० सुशीलकुमार सेन, जिन पर भारतीय दण्ड-विधान १२१-ए धारा के अनुसार अभियोग लगाया गया था, पागल हो गए हैं। कहा जाता है, कि जब आप गया-जेल में 'सी' श्रेणी में रक्खे गए थे, तो जेल के अधिकारियों के व्यवहार से तङ्ग आकर, आपने अनशन शुरू कर दिया था, और ४२ दिनों तक भूखे रहे थे। पहले ४ दिनों तक उन्हें ज़बरदस्ती खिलाने की कोशिश की गई थी। चाहे तो इस बल-प्रयोग से अथवा भूखे रहने के कारण, आपका मस्तिष्क बिगड़ गया है। अनशन तोड़ने पर भी आपकी दशा नहीं सुधरी। इसके बाद आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए। किन्तु भोजन, वस्त्र में परिवर्तन हो जाने पर भी अवस्था वैसी ही बनी रही। २६वीं मार्च को जेल के डॉक्टर ने उनके हिस्ट्री टिकट में लिखा था—"उदासीनता का भाव दिखलाता है और सबों से अलग रहना चाहता है। इसके मस्तिष्क के सम्बन्ध की रिपोर्ट, रिपोर्ट-बुक में लिख ली गई है।"

इसके बाद श्री० सुशीलकुमार हज़ारीबाग सेण्ट्रल जेल लाए गए और पञ्जाबी सेल में साधारण क़ैदियों के साथ रक्खे गए। इस समय से इनकी दशा ऐसी ही बनी हुई है। इनकी आँखें भी कुछ ख़राब हो गई हैं। वे क़रीब-क़रीब आधे पागल हो चुके हैं। अपने साथियों को भी नहीं पहचान सकते। उन्हें देखते ही क्रोधित हो उठते हैं। इनकी आधी सज़ा पूरी हो चुकी है। इनके स्वास्थ्य और मस्तिष्क की ऐसी नाज़ुक अवस्था हो गई है, कि यदि ये शीघ्र नहीं छोड़े गए तो फिर अच्छे होने की आशा जाती रहेगी।

—गत २३वीं अप्रैल का समाचार है, कि स्थानीय हाईकोर्ट ने मेरठ षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त श्री० निम्बकर और श्री० हचिन्सन को इस शर्त पर ज़मानत पर छोड़ा है, कि जब तक उनका मामला चलता रहे, वे किसी प्रकार के प्रचार-कार्य में भाग न लें।

—बारडोली का २४वीं अप्रैल का समाचार है, कि सरदार बल्लभभाई पटेल, श्री० जयरामदास दौलतराम के साथ नवसारी से यहाँ पहुँचे। उन्होंने अफ़वा नामक ग्राम के घरों की नींव डाली, जो किसानों के छोड़ देने पर जला डाले गए थे। सरदार पटेल ने किसानों से कहा कि उन्हें स्वतन्त्र पक्षियों की तरह अपने घरों के नष्ट हो जाने की परवाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि घर तो बार-बार बनाया जा सकता है, किन्तु प्रतिष्ठा एक बार चली जाने पर फिर नहीं लौटती। इसलिए उन्हें और भी अधिक त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

—बारडोली का २४वीं अप्रैल का समाचार है, कि आज महात्मा जी की उन किसानों से बातें हुईं, जिनकी ज़ब्त जायदादें किसी तीसरे आदमी के हाथों चली गई हैं। महात्मा जी ने उन्हें समझाया, कि वे उन ख़रीदारों को किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचावें। महात्मा जी ने कहा कि उन्हें विश्वास रखना चाहिए, कि बहुत शीघ्र उनकी जाय़दाद उन्हें मिल जायगी। इस समय वे यह समझ कर सन्तोष करें, कि स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अपनी सम्पत्ति का त्याग कर दिया है।

—दैनिक 'लीडर' ने एक ज़मींदार का पत्र प्रकाशित किया है, जिससे विदित होता है कि कन्नौज के ज़मींदार रायबहादुर बाबू स्वरूपनारायण वकील की मोटर, ज़मींदारी की लगान न देने के कारण ज़ब्त कर ली गई है। पत्र से पता चलता है, कि उन्होंने लगान के रुपयों में से ७५ फ़ी सदी चुका दिया था।

—रङ्गून का २४वीं अप्रैल का समाचार है, कि थामेटमेयो ज़िले में ३० विद्रोही मारे गए हैं। पुलिस की ओर से कोई घायल नहीं हुआ है। कुछ बर्मी सेना यहाँ सहायता के लिए भेजी जा रही है।

—खुलना का एक समाचार है, कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रमुख कार्यकर्ता श्री० सतीशचन्द्र चक्रवर्ती, जो समझौते की शर्तों के अनुसार जेल से छोड़ दिए गए थे, अपने घर पर ही नज़रबन्द रक्खे गए हैं।

—लाहौर का २४वीं अप्रैल का समाचार है, कि अमृतसर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० आर्यमुनि छोड़ दिए गए हैं और श्री० सुशील से २ वर्षों तक नेकचलनी के लिए १,०००) रुपए का मुचलका माँगा गया है। अन्य दो अभियुक्तों की सज़ाएँ क़ायम रक्खी गई हैं।

—कलकत्ते का २५ वीं अप्रैल का समाचार है, कि स्थानीय यूरोपियन क्लब में किसी ने एक बम फेंक दिया, किन्तु बम फटा नहीं। कहा जाता है, बम बहुत भयानक था; ठीक ऐसा ही बम सर चार्ल्स टेगार्ट पर फेंका गया था। बम फेंकने वाले का कोई पता नहीं मिला।

—कराची का २३वीं अप्रैल का समाचार है, कि कल सन्ध्या-समय अचलसिंह पार्क में एक बम का धड़ाका हुआ, जिसके फल-स्वरूप एक स्त्री और ४ बालकों को चोट आई। इनमें से दो की दशा चिन्ताजनक है। घटना की जाँच की गई, किन्तु कुछ पता नहीं लगा।

—रङ्गून का २७वीं अप्रैल का समाचार है, कि अपयौक येले नामक स्थान में एक नया विद्रोह उठ खड़ा हुआ है। कहा जाता है, कि एक मुखिया, जो स्पेशल कॉन्स्टेबिल बनाया गया था, बाग़ी हो गया और ३० विद्रोहियों के साथ उसने पुलिस पोस्ट पर आक्रमण कर दिया, जिसके फल-स्वरूप एक स्पेशल कॉन्स्टेबिल मारा गया और एक सब-इन्स्पेक्टर घायल हुआ है। विद्रोही एक रिवॉल्वर, ७ बन्दूक़ें तथा अन्य सामान भी उठा ले गए हैं।

—बेसीन में एक बर्मी गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि वह वहाँ विद्रोह खड़ा करने का प्रयत्न कर रहा था। पेगू में दो हत्याएँ हुई हैं। इनसीन और हेपज़ादा में अनेक डकैतियाँ भी हुई हैं।

—कोलम्बो २६वीं अप्रैल—पायोनियर का सम्वाददाता ख़बर देता है कि पं० जवाहरलाल नेहरू कल कण्डी पहुँचे। वहाँ उन्होंने टाउन हॉल में एक भाषण दिया। आपने भाषण में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर विचार किया।

श्री० सेन गुप्त पर आक्रमण

मैमनसिंह का २४वीं अप्रैल का समाचार है कि श्री० जे० एम० सेनगुप्त, जो यहाँ की विद्यार्थी-परिषद के सभापति मनोनीत हुए थे, आज यहाँ पहुँचे। बार-लाइब्रेरी की अभ्यर्थना का उत्तर देकर आप अपने रहने के स्थान पर गए। यहाँ उनके विरोधी दल के कुछ नवयुवक लाठी आदि हथियार लेकर उनके आने की प्रतीक्षा में थे। जब आप परिषद में जाने के लिए मोटर पर रवाना हुए तो इन लोगों ने उन पर आक्रमण किया। श्री० सेन गुप्त को तो चोट नहीं आई, किन्तु परिषद के कुछ सङ्गठनकर्त्ता घायल हुए। अब परिषद वालों और उसके विरोधियों में युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों ओर से ईंट-पत्थर की वर्षा होने लगी। श्री० सेन गुप्त ने दोनों दलों को शान्त करना चाहा। परिषद के विरोधियों को जब इस तरह सफलता नहीं मिली तो उन्होंने, परिषद के सङ्गठनकर्त्ताओं को परिषद स्थगित कर देने, और स्थान बदल देने के लिए कहा।

श्री० सेन गुप्त ने अपने वक्तव्य में इस घटना पर शोक प्रकट किया है, और कहा है कि यह कार्य उस दल के लोगों का है, जिन्हें अहिंसात्मक नीति पर विश्वास नहीं है। परिषद अन्त में स्थगित कर दी गई।

क्या वास्तव में भगतसिंह आदि की लाशें टुकड़े-टुकड़े कर डाली गई थीं ?

"मेरी यह धारणा है, कि मृत-शरीरों के प्रति अपमान-जनक व्यवहार किया गया है" —श्री० धन्नामल

जाँच कमिटी के सामने आँखों देखी गवाहियाँ

लाला चिन्तराम थापड़ का बयान

लाहौर का २२वीं अप्रैल का समाचार है, कि भगत-सिंह जाँच-कमिटी के सामने, आज सुखदेव के चचा लाला चिन्तराम थापड़ की गवाई हुई। अध्यक्ष के पूछने पर गवाह ने कहा, कि २३वीं मार्च को ७: बजे श्री० सुखदेव को फाँसी दी गई। उन्होंने आगे कहा, कि फाँसी के दिन मैं लाहौर ही में था, क्योंकि अपने भतीजे से अन्तिम भेंट करने की मेरी इच्छा थी। यह मुझे नहीं मालूम था कि फाँसी कब दी जायगी। १२ बजे दोपहर के समय मैंने सेण्ट्रल जेल के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट से पूछा, कि फाँसी किस तारीख़ को और किस समय दी जायगी, किन्तु मुझे कोई सूचना नहीं मिली। एक सभा में लाला जगन्नाथ ने मुझसे कहा कि ७ बज कर ४५ मिनट पर फाँसी दे दी गई है। यह ख़बर पाकर मैं सरदार किशन-सिंह के साथ पं० सन्तानम् के यहाँ पहुँचा, जो सेण्ट्रल जेल के समीप ही रहते हैं। यहाँ हमें मालूम हुआ, कि जेल के भीतर 'इन्क़लाब ज़िन्दाबाद' के नारे लगाए गए थे, जो बाहर भी सुनाई पड़े थे। इन्हीं नारों की आवाज़ से बाहर के लोगों को मालूम हो गया कि फाँसी दे दी गई। यहाँ मुझे मालूम हुआ कि सिटी-मैजिस्ट्रेट की मोटर पं० सन्तानम् के घर के समीप ही खड़ी है। सवा आठ बजे के लगभग मैं सरदार किशनसिंह के साथ सेण्ट्रल जेल के मुख्य दरवाज़े पर गया। फिर हम लोग जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट के क्वार्टर में गए। एक वार्डर ने आकर कहा कि डिप्टी सुप-रिण्टेण्डेण्ट बाहर गए हैं। हम लोगों ने वार्डर से किसी जेल के अफ़सर को बुला देने के लिए कहा, जिससे हम लोग लाशें माँगें। वार्डर ने कहा, कि कोई भी अफ़सर यहाँ नहीं है और हम लाशों के बारे में कुछ नहीं जानते। इसके बाद हम जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट मेजर चोपड़ा के यहाँ गए। किन्तु मालूम हुआ कि मेजर चोपड़ा भी कहीं बाहर गए हैं। तब हम लोग पं० सन्तानम् के यहाँ लौट आए। यहीं से डॉ० गोपीचन्द ने पञ्जाब-सरकार के होम-सेक्रेटरी, ज़िला मैजिस्ट्रेट, सिटी मैजिस्ट्रेट आदि से फ़ोन के द्वारा बातें कीं, किन्तु कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। १०॥ बजे रात्रि के समय एक सरकारी कर्म-चारी ने सरदार किशनसिंह को सूचना दी, कि लाशें लाहौर से बाहर भेजी गई हैं। मेरे कुछ आदमी सेण्ट्रल जेल के दोनों दरवाज़ों पर खड़े थे, किन्तु इन दरवाज़ों से लाश ले जाते हुए उन्होंने नहीं देखा। १ बजे रात को एक आदमी ने मुझे सूचना दी कि लाशें सतलज के किनारे जला डाली गई हैं और इसकी सूचना भी ज़िला मैजिस्ट्रेट ने निकाल दी है; जो शहर की दीवालों पर चिपका दी गई है। मैंने स्वयं इस प्रकार का छपा हुआ नोटिस देखा।

अध्यक्ष के पूछने पर गवाह ने कहा, कि यदि श्री० सुखदेव का शरीर मुझे दे दिया जाता, तो तो आर्य-समाज के नियमानुसार मैं उसकी दाह-क्रिया करता। मैं मृत-शरीर को अच्छी तरह स्नान करा कर, उसे सफ़ेद खद्दर में लपेट देता और तब घी और अन्य सामग्रियों के साथ वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के बाद दाह-क्रिया करता। मलिक जीवनलाल कपूर के पूछने पर गवाह ने कहा कि हम लोग सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच के समय में दाह-क्रिया नहीं करते। हमारे धर्म में ऐसा करना निषिद्ध है। लाश के जलाने में या चिता में आग लगाने के लिए किरोसिन के तेल का व्यवहार नहीं किया जाता। हिन्दू या सिक्ख कोई भी ऐसा नहीं करता। ग़रीब से ग़रीब मनुष्य ऐसे अवसर पर घी काम में लाता है। एक लाश को जलाने के लिए कम से कम १२ मन लकड़ी की आवश्यकता है। इस काम के लिए चीड़ की लकड़ी काम में कभी नहीं लाई जाती।

तीन आदर्श बहिनें

पञ्जाब की विख्यात देश-सेविकाएँ, जो गाँधी-इर्विन समझौते के समय लाहौर के नारी-जेल से मुक्त की गई थीं। दाहिनी ओर से—कुमारी श्यामा ज़ुतशी, एम० ए०; कुमारी जानकी ज़ुतशी, एम० ए० और कुमारी मनमोहिनी ज़ुतशी, बी० ए०।

डॉ० सत्यपाल के पूछने पर गवाह ने कहा, कि ६ फ़ीट चौड़े और ८ फ़ीट लम्बे स्थान में तीन लाशें अलग-अलग कदापि नहीं जलाई जा सकती हैं। तीन लाशें एक चिता पर भी नहीं जलाई जा सकती हैं। निकट सम्बन्धी ही मृत-शरीर को स्नान करा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति उसे नहीं छू सकता है। यदि एक मृत-देह को अच्छी तरह जलाया जाय, तो तीन दिन से पहले भस्म इकट्ठा नहीं किया जा सकता। तीन दिन से पहले हड्डियों का अच्छी तरह जलना सम्भव नहीं। तीन घण्टे में लाश भस्म नहीं हो सकती।

इसके बाद गवाह ने कहा, कि २५वीं मार्च को सबेरे मैं अन्य सम्बन्धियों के साथ दाह-स्थान पर गया। वहाँ मुझे मांस के छोटे-छोटे टुकड़े मिले, जो मेरी स्त्री के पास रक्खे हैं।

अध्यक्ष के पूछने पर गवाह ने कहा, कि मुझे एक विश्वसनीय व्यक्ति से—जिसका नाम मैं नहीं बतलाना चाहता—पता चला है कि जेल ही में लाशों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गए थे और तब कम्बलों में बाँध कर, जिस दरवाज़े से जेल का कूड़ा-कर्कट उस रात को बाहर निकाला गया, उसी दरवाज़े से लाशें बाहर निकाली गईं।

भगत धन्नामल का बयान

इसके बाद फ़िरोज़पुर के रहने वाले भगत धन्नामल का बयान हुआ। गवाह ने अध्यक्ष के पूछने पर कहा, कि फ़िरोज़पुर के लाला कृपाराम के साथ मैं २५वीं मार्च को १० बजे सबेरे दाह-स्थान पर गया। दाह-स्थान को खोदने पर, मांस के टुकड़े, जली हुई हड्डियाँ और पानी से भरा हुआ एक घड़ा, वहाँ मिले। उस स्थान से किरोसिन तेल की कड़ी बू आती थी। दाह-स्थान के समीप ही मैंने कुछ ऐसे स्थान भी देखे, जहाँ ख़ून के दाग़ लगे हुए थे।

मलिक जीवनलाल कपूर के पूछने पर गवाह ने कहा, कि मैंने हिन्दुओं के कितने ही मृत-शरीर जलाए हैं। एक लाश के जलाने में कम से कम १२ मन लकड़ी की आवश्यकता होती है। लाश के जलाने में मिट्टी के तेल का कभी प्रयोग नहीं किया जाता।

डॉ० सत्यपाल के पूछने पर गवाह ने कहा, कि कुछ विश्वसनीय व्यक्तियों से मुझे मालूम हुआ है, कि जेल में ही लाशों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गए थे और वे टुकड़े थैलों में भर कर चिता-स्थान पर पहुँचाए गए थे। मेरी यह धारणा है, कि मृत-शरीरों के प्रति अपमानजनक व्यवहार किया गया है।

*　　*　　*

"मुर्ग़-दिल मत रो यहाँ आँसू बहाना है मना"

देहली षड्यन्त्र केस का सनसनीपूर्ण उद्घाटन

केसरिया साड़ियों में स्त्रियों के जत्थों ने राष्ट्रीय नारे लगाए

हिन्सात्मक क्रान्ति का जाल कैसे बिछाया गया ?

एक अभियुक्त की मृत्यु पर शोक प्रकाश :: अभियुक्त अदालत में पीठ फेर कर बैठे रहे !

सरकारी वकील जब तक वक्तव्य पढ़ता रहा ; तब तक अभियुक्त गाने गाते रहे !

दिल्ली षड्यन्त्र केस के स्पेशल ट्रिब्यूनल की बैठक, आज २५वीं एप्रिल को गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया के सेक्रेटेरियट-भवन के दक्षिणी हिस्से में प्रारम्भ हुई। अभियुक्तों के आते ही, "क्रान्ति चिरञ्जीवी हो", "साम्राज्यवाद का नाश हो" के गगनभेदी नारों से सेक्रेटेरियट-भवन गूँज उठा। इसी समय मोटर लॉरी पर केसरिया रङ्ग की साड़ियाँ पहने, स्त्रियों का एक बड़ा जत्था भी आ पहुँचा। उसने एक जुलूस बना कर सेक्रेटेरियट-भवन के दक्षिणी हिस्से में प्रवेश किया और पाँच मिनट तक लगातार राष्ट्रीय नारे लगाए। प्रतिध्वनि में अभियुक्तों ने भी राष्ट्रीय नारों से उनका स्वागत किया।

पुलिस का ज़बरदस्त प्रबन्ध

पुलिस का प्रबन्ध बहुत ज़बरदस्त और विशाल पैमाने पर किया गया था। अदालत के अन्दर बहुत से स्त्री-पुरुष, दर्शक उपस्थित थे। अभियुक्त दो-दो की क़तार में ११ बज कर ४५ मिनट पर अदालत के अन्दर लाए गए। प्रवेश करते ही, उन्होंने फिर गगनभेदी स्वर में "क्रान्ति चिरञ्जीवी हो", "चन्द्रशेखर आज़ाद चिरञ्जीवी हो", "भगतसिंह चिरञ्जीवी हो", "साम्राज्यवाद का नाश हो" आदि के नारे लगाए। इसके बाद उन्होंने सम्मिलित स्वर में एक राष्ट्रीय गान गाया, जिसकी प्रारम्भिक पंक्तियों का सारांश इस प्रकार था:—"माँ, तुझसे बिदा लेकर आज हम विजय की अन्तिम लड़ाई लड़ने जा रहे हैं।"

स्पेशल ट्रिब्यूनल के सदस्यों ने ११ बज कर ५० मिनट पर अदालत के कमरे में प्रवेश किया। सरकारी वकील मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ थे। सफ़ाई की तरफ़ से मि० आसफ़अली, मि० एस० एन० बोस, मि० बलजीतसिंह और मि० फ़रीदुल हक़ अन्सारी उपस्थित थे।

हथकड़ियाँ हटाई गईं

प्रारम्भ में, श्रीयुत भूषण ने ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट का ध्यान अभियुक्तों की हथकड़ियों की ओर आकर्षित किया और उनसे पूछा, कि क्या अदालत में उन्हें हथकड़ियाँ पहने ही बैठे रहना होगा? इस पर प्रेज़िडेण्ट ने तुरन्त ही अभियुक्तों के हाथों से हथकड़ियों के हटा देने की आज्ञा दी। इसके बाद सफ़ाई के वकील मि० बलजीतसिंह ने अभियुक्त विशम्भरदयाल की मृत्यु पर खेद प्रकट किया। सरकारी वकील मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने उनका समर्थन किया और कहा, कि यह दुर्भाग्य की बात है, कि सरकार की ओर से अच्छी से अच्छी चिकित्सा का प्रबन्ध होने पर भी अभियुक्त की जान न बच सकी।

इसके बाद मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने अपना प्रारम्भिक वक्तव्य पढ़ना प्रारम्भ किया।

मि० आसफ़अली का विरोध

तुरन्त ही मि० आसफ़अली ने उठ कर वक्तव्य पढ़ने का विरोध किया। आपने कहा, कि क़ानून के अनुसार किसी मुक़दमे के प्रारम्भ में सरकारी वकील को वक्तव्य सुनाने का अधिकार केवल उस सेशन्स अदालत में है, जहाँ मामले का विचार जूरी की सहायता से होता हो। इस वक्तव्य से विचार होने के पहले ही अभियुक्तों के विरुद्ध लोकमत दूषित हो जाने का भय है। मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने कहा, कि मैं वक्तव्य पढ़ने के लिए कोई हठ करना नहीं चाहता। मेरा एकमात्र उद्देश्य इस अदालत के सामने मामले का सारांश प्रकट कर देना है, जिससे उसे मामले के समझने में सुविधा हो।

ट्रिब्यूनल ने ज़फ़रुल्ला ख़ाँ के तर्कों को स्वीकार करते हुए, उन्हें अपना वक्तव्य पढ़ने की आज्ञा दे दी।

अभियुक्तों का वक्तव्य

इसी समय श्रीयुत वात्सायन ने अभियुक्तों की ओर से, अपने साथी विशम्भरदयाल की मृत्यु के उपलक्ष में अदालत से आज के दिन की कार्रवाई स्थगित कर देने के लिए प्रार्थना की।

अदालत ने कहा, हमें दुख है कि हम आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकते। इस पर श्रीयुत वात्सायन ने कहा, कि अगर अदालत अपनी आज की कार्रवाई स्थगित करने को तैयार नहीं है तो हम उसमें किसी तरह का भाग लेने के लिए भी तैयार नहीं हैं। प्रोफ़ेसर निगम ने कहा, कि हम अभियुक्तों की ओर से आज के दिन के लिए अपने सफ़ाई के वकील वापस लेते हैं।

इतना कह कर अभियुक्तों ने अदालत की तरफ़ पीठ फेर ली और एक गीत गाना प्रारम्भ कर दिया, जिसकी प्रथम पंक्ति इस प्रकार है:—

"मुर्ग़-दिल मत रो यहाँ आँसू बहाना है मना।"

इसके कुछ ही पहले सरकारी वकील ने अपना वक्तव्य पढ़ना प्रारम्भ किया था। गाने की आवाज़ के आगे पढ़ना असम्भव हो गया। इस पर अदालत ने उन्हें और निकट आकर अपना वक्तव्य पढ़ कर सुनाने को कहा। जब तक सरकारी वकील वक्तव्य पढ़ते रहे, तब तक अभियुक्त भी बराबर गाते रहे।

सफ़ाई की ओर से आवेदन-पत्र

सरकारी वकील ने डेढ़ बजे अपना वक्तव्य समाप्त किया।

इसके बाद अदालत ने सफ़ाई की तरफ़ से पेश किए गए उस आवेदन-पत्र पर विचार किया, जिसमें मुख़बिरों को जेल की हवालात से हटा कर न्यायालय की हवालात में रखने की प्रार्थना की गई थी।

अदालत ने आवेदन-पत्र स्वीकार कर लिया और मुख़बिरों को न्यायालय की हवालात में रखने की आज्ञा दे दी। इस प्रबन्ध के हो जाते ही मुख़बिर दिल्ली डिस्ट्रिक्ट जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट मेजर एसपिनल की देख-रेख में कर दिए जायँगे।

इसके बाद अदालत की कार्रवाई स्थगित हो गई! अगली पेशी की तारीख़ २ मई नियत हुई है। उस दिन सबूत की ओर से १२ गवाह पेश होंगे।

आज की कार्रवाई भर में अभियुक्त बराबर गाते रहे। अदालत उनकी ओर से अन्यमनस्क थी।

* * *

सरकारी वकील का वक्तव्य

आज स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने सीनियर सरकारी वकील मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में बतलाया, कि उपस्थित १४ अभियुक्तों पर राजनीतिक उद्देश्य से हत्या करने, डाका डालने, विस्फोटक पदार्थ रखने और बनाने, पुलिस-अफ़सरों की हत्या करने के षड्यन्त्र रचने और क़ानून-विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र रखने के अभियोग लगाए गए हैं। इन अभियुक्तों के नाम इस प्रकार हैं:—

सर्व-श्री० बी० पी० जैन, भगीरथलाल, बाबूलाल गुप्त, कपूरचन्द, धन्वन्तरि, विद्याभूषण, हरकेश, आर० डी० अरारो, के० आर० गुप्त, हरद्वारीलाल, वी० आर० वैशम्पायन, एच० एस० वात्सायन, जी० एस० पोतदार और एन० के० निगम।

सबूत का मुख्य गवाह मुख़बिर कैलाशपति है, जिसके समर्थक ५ और दूसरे भी मुख़बिर हैं।

आगे चल कर आपने बतलाया, कि इस षड्यन्त्र की मुख्य घटना से जिन अभियुक्तों का सम्बन्ध है, उनकी संख्या ३० है, जिनमें एक स्त्री भी है। इनमें से १४ तो अभी अदालत के सामने उपस्थित हैं, ६ मुख़बिर बन गए हैं, और एक, विशम्भरदयाल अस्पताल में मर चुका है। शेष ६ फ़रार हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं:—

सर्व-श्री० काशीराम, भवानीसहाय, यशपाल, भवानीसिंह, प्रकाशो देवी, हज़ारीलाल, लेखराम, सम्पूर्नसिंह टण्डन, और रामचन्द्र शर्मा।

इसके बाद आपने षड्यन्त्रकारियों का इतिहास बतलाया। बङ्गाल में अनुशीलन समिति कैसे स्थापित की गई, महाराष्ट्र में उसकी शाखा कैसे खोली गई और फिर महाराष्ट्र शाखा कैसे नष्ट कर दी गई, इसका आपने ब्योरेवार वर्णन किया। आपने बतलाया कि बङ्गाल का क्रान्तिकारी दल अब भी मौजूद है।

हरदयाल ने वहीं से क्रान्तिकारी सिद्धान्त ले आकर यू० पी० और पञ्जाब में बोया था।

लाला हरदयाल के कार्य

प्रारम्भ में श्री० हरदयाल का काम ब्रिटिश नौकरियों के छोड़ने तथा ब्रिटिश संस्थाओं के बहिष्कार का प्रचार करना था। कैम्ब्रिज में शिक्षा प्राप्त करने की जो सरकारी छात्रवृत्ति मिली थी, उसे त्याग कर आपने अपने देशवासियों के सामने उपरोक्त बहिष्कार का उदाहरण रक्खा था। कुछ दिनों के बाद वे इङ्गलैण्ड से अमेरिका चले गए। परन्तु उनके शिष्यों ने भारत में उनका काम बराबर जारी रक्खा। वे आतङ्क और हिंसा का उपदेश बराबर फैलाते रहे। फल-स्वरूप बहुत सी राजनीतिक हत्याएँ हुईं। लॉर्ड हार्डिञ्ज के ऊपर १९१८ में जो बम फेंका गया था, वह उन्हीं की कारंवाई थी। लाहौर के लॉरेन्स गार्डन वाले बम-विस्फोट में भी उन्हीं का हाथ था। कुछ समय तक उन्होंने स्वाधीनता सम्बन्धी उत्तेजक पर्चे बाँटे, जिनके आधार पर पुलिस ने गिरफ़्तारियाँ कीं, जिनमें क्रान्तिकारी-दल के कई बड़े-बड़े नेता भी थे।

थोड़े समय के लिए उत्तर भारत में क्रान्तिकारियों का ज़ोर हट गया, परन्तु इसी बीच में श्री० हरदयाल ने अमेरिका में वहाँ के हिन्दुस्तानियों का सङ्गठन करके एक ग़दर-पार्टी की स्थापना की। इस पार्टी का काम अमेरिका प्रवासी भारतीयों में तथा गुप्त दूतों द्वारा भारत में क्रान्ति का प्रचार करना था।

यू० पी० का दल

सन् १९१४ में ऐसे बहुत से गुप्त दूत विदेशों से भारत में आए थे। उन्होंने यहाँ क्रान्ति का प्रबल प्रचार किया। पञ्जाब इस प्रचार का मुख्य केन्द्र था। परन्तु कुछ दिनों बाद इनमें से बहुत से प्रचारक नज़रबन्द कर दिए गए, बहुत से अन्य विविध उपायों से रोक दिए गए और बहुतों को, उन पर मामला चला कर, 'भारत-रक्षा एक्ट' के अनुसार दण्ड दिया गया।

इसके बाद क्रान्तिकारी अपराध बन्द रहे। परन्तु सन् १९२२ में बङ्गाल की अनुशीलन समिति ने संयुक्त-प्रान्त में अपनी एक शाखा खोली, जोकि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के नाम से प्रसिद्ध है। इस शाखा ने एक केन्द्र-कमिटी तथा अन्य कितनी ही प्रान्तीय कमिटियाँ स्थापित कीं, जिनका कार्य प्रान्त भर में क्रान्ति का ज़बरदस्त प्रचार करना था। यू० पी० वाले क्रान्तिकारी दल ने प्रान्त के कई ज़िलों में डाके डाले, जिनमें काकोरी की रेल-डकैती प्रसिद्ध है। इसमें बहुत सी गिरफ़्तारियाँ हुईं और दल के बहुत से लोग पकड़ लिए गए।

काकोरी-काण्ड के बाद यू० पी० दल को टूटा हुआ देख कर कानपुर के श्री० विजयकुमार सिनहा तथा लाहौर के श्री० भगतसिंह रङ्ग-मञ्च पर प्रकट हुए। उन्होंने यू० पी० दल को फिर से सङ्गठित करने का सङ्कल्प किया। दिल्ली में एक गुप्त सभा की गई, जिसमें दूर-दूर के षड्यन्त्रकारी जमा हुए थे। उसमें तय हुआ कि हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की जाय।

इसके बाद एक बार फिर से क्रान्तिकारी आन्दोलन वेग से चल निकला। इस दल ने दिसम्बर १९२८ में सॉण्डर्स की हत्या की, जोकि एक अत्यन्त होनहार अफ़सर थे। परिणाम यह हुआ कि अनेकों गिरफ़्तारियाँ हुईं। वॉयसराय के विशेषाधिकार से स्पेशल ट्रिब्यूनल की रचना हुई और अनेकों षड्यन्त्रकारियों का उसमें विचार हुआ। फिर भी कुछ लोग फ़रार ही रह गए। उन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का काम बराबर जारी रक्खा। लाहौर तथा दिल्ली के स्पेशल ट्रिब्यूनल इन्हीं की कारंवाइयों के परिणाम हैं।

मुख़बिरों का कथन

मुख़बिर कैलाशपति, मदनगोपाल, गिरिवरसिंह, डी० वी० टेलाङ्ग, बालकृष्ण और रामलाल के कथनों से मालूम होता है, कि इस दल के षड्यन्त्रकारी केवल राजद्रोह के प्रचार तथा दल में नए सदस्यों के भर्ती करने का काम ही नहीं करते थे, बल्कि उसके साथ ही साथ दिल्ली तथा ग्वालियर आदि स्थानों में बम बनाने तथा डाका डालने के भी कार्य करते थे।

मुख़बिरों के कथन से मालूम होता है, कि दिल्ली की गाडोदिया स्टोर की सफल-डकैती इसी दल की करतून थी। अक्टूबर १९३० में पुलिस अफ़सरों पर अभियुक्त धन्वन्तरि द्वारा किए गए घातक प्रयत्न भी इसी दल के कार्यक्रम थे।

यद्यपि इस दल का कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं प्रकट हुआ, फिर भी दल में नए सदस्यों से भर्ती करने तथा धन एकत्र करने का काम बराबर जारी रहा है। दिल्ली की डकैती में यथेष्ट धन मिल जाने से इस दल का कार्य अधिक वेग से चल निकला था। उस धन से दो महीने तक दिल्ली आदि स्थानों में बम बनाने का कार्य जारी रहा। इस कार्य में अधिकांश अभियुक्त शामिल थे। इनके कार्यक्रम जब तक कि सितम्बर सन् १९३० में कैलाशपति तथा धन्वन्तरि और बाद में अन्य २१ अभियुक्त नहीं गिरफ़्तार हो गए, बराबर जारी रहे।

इसे न्याय कहें या अन्याय ?

श्री० वीरेन्द्र पर अत्याचारों का पहाड़ ढाया जा रहा है

पिता पुत्र से नहीं मिल सकता

महाशय कृष्ण लिखते हैं :—

यह एक निर्दोष नवयुवक विद्यार्थी के साथ किए गए दुर्व्यवहारों का कारुणिक क़िस्सा है, जिसको गवर्नमेण्ट ने सन् १८१८ के तीसरे रेग्यूलेशन के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया था।

"मेरा पुत्र वीरेन्द्र, फ़ोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज लाहौर के बी० ए० क्लास का विद्यार्थी है। उसे पञ्जाब की पुलिस ने तीन-तीन बार निराधार सन्देह पर गिरफ़्तार किया और हर बार सबूत के अभाव में मामले पर विचार होने के पहले ही छोड़ दिया। परन्तु १० फ़रवरी को अचानक सन् १८१८ के तीसरे रेग्यूलेशन के अनुसार उसे फिर से गिरफ़्तार कर लिया। आज वह लाहौर सेण्ट्रल जेल में नज़रबन्द राजनीतिक बन्दी है। सम्भवतः यह आख़िरी गिरफ़्तारी पुलिस की अयोग्यता छिपाने की ग़रज़ से की गई है। किसी अभियुक्त का तीन-तीन बार गिरफ़्तार होना और हर बार सबूत के अभाव में छूट जाना, पञ्जाब-पुलिस की शान के ख़िलाफ़ था। इसीलिए २० वर्ष के इस नवयुवक को राजबन्दी बना कर जेल में ठूँस दिया, जिसका अपराध अब तक दुनिया को अज्ञात है। यह तो यह, इसके बाद की करतूतें और भी हृदय-बेधी हैं।

वकील के पत्र

"२री मार्च को एसेम्बली में मि० जगन्नाथ अग्रवाल के प्रश्न के उत्तर में भारत-सरकार के होम-मेम्बर ने कहा, कि वीरेन्द्र के अभियोगों की जाँच दो सेशन्स जज मिल कर करेंगे और जाँच कर लेने पर निर्णीत अभियोग की एक नक़ल उसे दे देंगे। जो कुछ वह उत्तर देना चाहेगा, उसे भी वे लिख लेंगे। इस पर लाहौर हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री० रामलाल आनन्द ने होम-मेम्बर को एक पत्र लिख कर उनसे अभियोग की जाँच-पड़ताल करने वाले दोनों सेशन्स जजों के नाम तथा उनकी कार्य-विधि का ब्योरा पूछा। साथ ही आपने यह भी पूछा, कि क्या जाँच के समय अभियुक्त को उत्तर लिखाने तथा अन्य क़ानूनी कारंवाइयों में सहायता पहुँचाने के लिए क़ानूनी सलाहकार उपस्थित रह सकते हैं?

"उसी दिन आपने लाहौर सेण्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट को भी एक पत्र लिखा; जिसका आशय यह था, कि मुझे क़ानून सलाहकार की हैसियत से वीरेन्द्र से मिलने दिया जाय। मिलने के समय, यदि आवश्यक समझा जाय तो पुलिस का पहरा भी थोड़े फ़ासले पर बना रह सकता है। इस पत्र के उत्तर में पुलिस के डिपुटी इन्स्पेक्टर जनरल ने अपने २५ मार्च के पत्र में मि० रामलाल को लिखा कि 'क़ानूनी सलाहकार अभियुक्त से एक सी० आई० डी० के अफ़सर की उपस्थिति में, जहाँ से वह सब बातचीत सुन सके, मिल सकता है।' पहले वाले पत्र के उत्तर में गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया के होम डिपार्टमेण्ट ने ता० २८ मार्च को एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था कि 'आपका पत्र पञ्जाब-सरकार के पास विचारार्थ भेज दिया गया है।' ढोंग और पाखण्ड की हद हो गई! एक ख़ून का अपराधी तक, जिसका फ़ैसला सेशन्स और जूरी सुना चुकते हैं, अपील करने के लिए बिना किसी बाधा के और बिना पुलिस की उपस्थिति के अपने क़ानूनी सलाहकार से मिल सकता है, परन्तु एक निर्दोष छोकड़ा, जिसके विरुद्ध कोई सबूत नहीं है अपने वकील से, बिना एक सी० आई० डी० अफ़सर की निकट-उपस्थिति के नहीं मिल सकता!!

मिलने नहीं दिया गया

"निस्सन्देह उपरोक्त प्रतिबन्धों में क़ानूनी सलाह का विचार त्याग देना पड़ा। इसके बाद पञ्जाब गवर्नमेण्ट का एक पत्र मि० रामलाल एडवोकेट के नाम फिर आया, जिसमें लिखा था, कि जितनी सूचना आपको दी जा चुकी है, उससे अधिक सूचना दे सकना असम्भव है। इस पत्र के पहले ही वीरेन्द्र को उसका अभियोग-पत्र दे दिया गया था और उसका उत्तर अधिकारीगण दर्ज कर चुके थे।

"मुझे सन्देह है, कि यह मामला बहुत पहले ही सेशन्स जजों ने तय कर लिया था और उत्तर पुलिस के अनुकूल बनवा लिया था। यही कारण है कि इस कारंवाई के समय में अभियुक्त से किसी को मिलने की आज्ञा नहीं दी गई और जिनको दी जा चुकी थी, उनसे वापस ले ली गई। यद्यपि होम-मेम्बर ने एसेम्बली में उत्तर देते हुए कहा था कि अभियुक्त से प्रति सप्ताह भेंट-मुलाक़ात हो सकेगी; फिर भी उनके कथन के शब्द का पालन तो हुआ; परन्तु भाव का पालन नहीं किया गया। तीन-चार मुलाक़ातों को छोड़ कर, शेष सब मुलाक़ातों में, या तो कोई पख़ लगा दी जाती थी या घण्टों रोकने के बाद नामञ्ज़ूरी दे दी जाती थी।

"वीरेन्द्र के सभी पत्रों पर सेन्सर रहता है। मेरे पास तक पहुँचते-पहुँचते उनकी अनेकों पंक्तियाँ मिटा दी जाती हैं। मेरे पत्र उसके पास पहुँचते हैं या नहीं, यह पुलिस ही जाने। वीरेन्द्र के विषय में जानकारी प्राप्त करने के जो भी उपाय काम में लाए जाते हैं, उन्हें पुलिस बेकार कर देती है। मैं नहीं जानता कि जेल के सीख़चों के पीछे क्या हो रहा है! वीरेन्द्र को बी० ए० की परीक्षा देने की अनुमति दे दी गई है; परन्तु उसके प्रबन्ध का व्यय हमसे १२०) लिया गया है; यद्यपि इसका दोषी न तो वीरेन्द्र है, न मैं हूँ। परीक्षा का स्थान बिल्कुल गुप्त रक्खा गया है। मुझे नहीं मालूम कि वह अपनी परीक्षा में क्या कर रहा है। और परीक्षा की तैयारी के लिए बाहर से उसे कोई सुविधा नहीं दी गई।

"औपनिवेशिक स्वराज्य का यह व्यावहारिक सच्चा स्वरूप है। फ़ौलादी ढाँचे में गाँधी-इर्विन वार्तालाप का यही प्रभाव है।"

* * *

कानपूर-पुलिस की अकर्मण्यता के कुछ ताज़े नमूने

मौ० शौकत और बाबा ख़लीलदास के भाषणों की चिन्गारियाँ

जब ज़ोरों से लूट-मार हो रही थी, तब पुलिस वाले ताश खेल रहे थे !!

मूलगञ्ज में दङ्गा शुरू होते ही मैजिस्ट्रेट भाग गया :: कानपुर हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में आँखों-देखी गवाहियाँ

कानपूर २२वीं अप्रैल—आज लञ्च के बाद अपर इण्डिया चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स के सेक्रेटरी मि० जे० जी० रायन ने अपना बयान दिया। गवाह ने अपने बयान में एक घटना का वर्णन करते हुए कहा, कि २६वीं मार्च की सुबह को जब मैं ग्वालटोली गया तो देखा कि बाज़ार में चारों ओर आग लगी हुई है, और कुछ पुलिस के सिपाही सड़क पर खड़े हैं। जब मैंने उनसे पूछा कि आग क्यों नहीं बुझाते, तो उन्होंने उत्तर दिया कि आज्ञा नहीं मिली है। गवाह ने आगे कहा कि कानपूर की पुलिस कानपूर के लिए कमज़ोर साबित हुई है। २४वीं और २५वीं मार्च को तो पुलिस का प्रबन्ध बहुत ही असन्तोषप्रद था।

इसके बाद बाबू नारायणप्रसाद निगम का बयान हुआ। आपने दङ्गे के तात्कालिक कारणों को बताते हुए कहा कि मुझे जाँच करने पर पता लगा, कि एक मुसलमान हेड कॉन्स्टेबिल, जो सम्भवतः ख़ुफ़िया पुलिस का आदमी था, सादी पोशाक में बादशाही नाका से मूलगञ्ज की ओर जा रहा था। इसी समय कुछ लड़कों ने उसका पीछा किया। वह कॉन्स्टेबिल मूलगञ्ज क ओर भागा और शेराबाबू के पार्क के समीप जाकर उसने यह चिल्लाना शुरू किया कि हिन्दू लोग मुझे पीट रहे हैं। उसकी यह चिल्लाहट सुन कर बहुत से मुसलमान अपने घरों से निकल आए और उन्होंने हिन्दुओं पर हमला कर दिया। इस दङ्गे की ख़बर आग की तरह फैल गई और परिणाम-स्वरूप चारों ओर दङ्गे होने लगे। २४वीं मार्च को शहर में रात भर शोर-गुल मचा रहा। गवाह ने कहा कि मैजिस्ट्रेट का यह कहना कि जब वह गश्त के लिए निकले थे, उस समय चारों ओर शान्ति थी, बिल्कुल ग़लत है।

कमिटी के अध्यक्ष ने गवाह से कहा कि एक अफ़सर ने अपने बयान में कहा है कि मूलगञ्ज के चौराहे पर मिलिटरी का एक दल था। गवाह ने कहा कि वहाँ से मिलिटरी हटा ली गई थी। यदि वह न हटाई जाती तो तिल का ताड़ न हो जाता। गवाह ने कहा कि परिस्थिति को क़ाबू में लाने के लिए न तो कोई गिरफ़्तारी की गई और न लाठी का ही कहीं प्रयोग किया गया।

गवाह ने आगे कहा कि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दङ्गे के समय मैजिस्ट्रेट से भेंट की, उन्हें सलाहें दीं, किन्तु मैजिस्ट्रेट साहब ने किसी की बातों पर भी कान नहीं दिया।

प्रश्न—क्या आप ऐसे सज्जनों के नाम बता सकते हैं, जिनकी बातों पर मैजिस्ट्रेट ने ध्यान नहीं दिया हो ?

उत्तर—श्री० विक्रमाजीतसिंह, श्री० ब्रजेन्द्रस्वरूप और स्वयं गवाह।

गवाह ने आगे कहा कि, पुलिस और मिलिटरी की संख्या काफ़ी थी। यदि अधिकारीगण यह जानते होते कि कहाँ क्या हो रहा है, तो लोगों को इतनी मुसीबत नहीं उठानी पड़ती।

इसके बाद श्री० कृष्णालाल गुप्त एडवोकेट की गवाही हुई। उन्होंने अपने बयान के सिलसिले में कहा—"मैं अपने मकान से देखता था कि राह चलते निर्दोष लोगों पर गुण्डे आक्रमण करते और बड़ी निर्दयतापूर्वक उन्हें मारते थे। बेकनगञ्ज की ओर आक्रमणकारी सङ्गठित रूप में जा रहे थे। ४ बजे का समय था। मिल-मज़दूरों को छुट्टी हो चुकी थी। इन निर्दोष मज़दूरों की जानें बुरी तरह ली गईं। मेरी आँखों के सामने ही बेगुनाह लोगों को निर्दयी आक्रमणकारियों ने कुत्ते की तरह मारा।

बात थी झगड़े की, नाक़ूसो[1] अज़ाँ[2] का इम्तियाज़,
हक़ तो यह है, दोनों आवाज़ों में एक आवाज़ है।

—'बिस्मिल'

१—शङ्ख, २—नमाज़ की सूचना, ३—पहचान,

अध्यक्ष—आप कल्पना-जगत में तो विचरण नहीं कर रहे हैं ?

गवाह—आप जो कुछ समझें, मैं सची बातें कह रहा हूँ, जिन्हें मैंने अपनी आँखों से देखी हैं।

गवाह ने आगे कहा कि जनता की जानोमाल की रक्षा के लिए कोई भी प्रबन्ध नहीं किया गया। जनता के बार-बार अनुरोध करने पर भी दङ्गाइयों को मनमानी करने दी गई। पुलिस की उदासीनता से दङ्गाइयों को किसी बात की फ़िक्र नहीं रह गई थी। कलक्टर साहब प्रत्येक बात शहर-कोतवाल पर छोड़ देते थे। डिप्टी मैजिस्ट्रेट दर्शकों की तरह तमाशा देखते थे। अधिकारियों ने सहायक सेना और मिलिटरी मोटरों से कोई काम नहीं लिया। यदि ऐसा किया जाता तो मामला यहाँ तक न बढ़ जाता। हाँ, सिविल लाइन में उन लोगों ने अच्छा प्रबन्ध किया था।

२३वीं अप्रैल—आज कुछ अन्य लोगों की गवाहियों के पश्चात् क्राइस्ट चर्च कॉलेज के प्रिन्सिपल श्री० चटर्जी का बयान शुरू हुआ। आपने अपने बयान में कहा कि जिन लोगों के ऊपर जनता के जानोमाल की रक्षा का दायित्व है, उनकी उदासीनता और किंकर्तव्य विमूढ़ता ने ही मामले को सङ्कीर्ण बना दिया था। निर्दोष व्यक्तियों के ऊपर आक्रमण किए जाते थे और पुलिस हाथ पर हाथ धरे तमाशा देखती थी। जिस समय परिस्थिति क़ाबू में आ सकती थी, उस समय यदि क़ानून और शान्ति के रक्षक-गण उचित कार्यवाही करते, तो इस प्रकार अराजकता नहीं फैल जाती।

प्रश्न—क्या आप स्वीकार करते हैं कि पुलिस ने उचित कार्यवाही नहीं की ?

उत्तर—हाँ !

इसके बाद गवाह ने अधिकारियों की असावधानता तथा पुलिस की कमज़ोरी के विषय में कह कर अपना बयान समाप्त किया।

सर्वेन्ट्स ऑफ़ पिपुल सोसायटी के श्री० हरिहरनाथ शास्त्री ने अपने बयान में कहा कि सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन के बाद से ही यहाँ के हिन्दू-मुसलमानों में अनबन रहती थी। १९३० में मुसलमानों ने अपना 'तन्ज़ीम' शुरू किया। कभी-कभी तन्ज़ीम का जुलूस शहर में होकर निकलता था। मौ० शौकतअली, बाबा ख़लील-

दास तथा एक अन्य स्थानीय मुस्लिम नेता साम्प्रदायिक भेद-भाव फैलाते थे, और कॉङ्ग्रेस के विरुद्ध प्रचार करते थे। सरकार ने तञ्ज़ीम की ओर ध्यान नहीं दिया। गवाह ने कहा कि इस दङ्गे का कारण आर्थिक या धार्मिक नहीं है। इसके भीतर राजनैतिक समस्या है। मुसलमानों ने सोचा कि हिन्दू उनका नाश कर हिन्दू-राज्य स्थापित करना चाहते हैं। गवाह ने कहा कि इस दङ्गे में ६०० मनुष्य मरे और १,१०० घायल हुए हैं। २५ लाख की सम्पत्ति नष्ट हुई है!

श्री० मदनलाल चौधरी ने अपने बयान में कहा कि जिस समय हिन्दू अहिंसात्मक आन्दोलन में कार्य कर रहे थे, उसी समय मुसलमानों ने 'तञ्ज़ीम' का सङ्गठन किया। इस तञ्ज़ीम के वालण्टियर लोग हथियार लेकर जुलूस निकालते और मनोमालिन्य पैदा करने वाले गीत गाते थे। सरकार इन मामलों में हस्तक्षेप न कर उनका उत्साह और भी बढ़ाती थी।

गवाह ने आगे कहा कि तीन दिनों तक भयङ्कर लूटपाट होती रही, किन्तु पुलिस ने इस अराजकता को रोकने के लिए कोई उपाय नहीं किया। गवाह ने कहा कि पुलिस की आँखों के सामने ही दङ्गाइयों ने मेरे मकान पर आक्रमण किया। किन्तु पुलिस ने किसी प्रकार की सहायता नहीं दी, किसी को गिरफ़्तार भी नहीं किया, फ़ायर-ब्रिगेड को भी सहायता देने से पुलिस ने इन्कार कर दिया। २६वीं मार्च को दो मिलिटरी मोटर फ़ीलख़ाना चौराहे के पास आकर खड़ी हुईं। पुलिस वालों ने पूछा—"यह रास्ता ख़तरनाक तो नहीं है?" एक ने कहा—"यहाँ बहुत से आदमी खड़े हैं। बखेड़ा मचने की आशा नहीं है।" इससे मालूम पड़ता है कि मानो वे ख़तरनाक जगहों में जाने से डरते थे या वहाँ जाने की उन्हें मुमानियत थी। कॉङ्ग्रेस वालों की वजह से यह दङ्गा नहीं हुआ था। मुसलमानों में रक्षा-कार्य अच्छा किया गया था। पुलिस वालों ने भी उनकी सहायता की। हिन्दुओं के बचाने का कोई उपाय नहीं किया गया था। पहली बात यह है कि उन पर यह आक्रमण अचानक हुआ था; और दूसरी बात यह है कि पुलिस ने उन्हें कोई सहायता नहीं पहुँचाई। हाँ, सेवा-समिति वालों ने अच्छा कार्य किया है।

२४वीं अप्रैल—आज बाबू ब्रजेन्द्रस्वरूप ने अपना बयान दिया। दङ्गे के कारणों को बताते हुए आपने कहा कि दङ्गे का कारण मुसलमान दूकानदारों की दूकान पर पिकेटिङ्ग नहीं है, बल्कि इसका कारण कुछ दूसरा ही है। इसके बाद आपने मुसलमान ख़ुफ़िया पुलिस वाली घटना (जो मूलगञ्ज में हुई थी) के सम्बन्ध में अपना बयान देते हुए कहा कि दङ्गे की जड़ यहीं से शुरू होती है।

अधिकारियों की लापरवाही के सम्बन्ध में आपने कहा कि, मुझे यह कहना पड़ता है कि स्थानीय अधिकारीगण और पुलिस की लापरवाही ने ही बात को इतना बढ़ा दिया। उन्होंने अपने कर्त्तव्य-पालन में अपनी अयोग्यता और अदूरदर्शिता का परिचय दिया है। मूलगञ्ज में दङ्गा आरम्भ होते ही मैजिस्ट्रेट साहब घर चले आए। यदि वह वहाँ ठहर कर दङ्गाइयों को दबाने की चेष्टा करते तो दङ्गा इतना विकट रूप नहीं धारण करता। आपने आगे कहा कि यह बड़े दुर्भाग्य की बात थी कि ऐसे विकट समय में भी मैजिस्ट्रेट साहब अपने बङ्गले में बैठे रहना ही अपना कर्त्तव्य समझते थे।

डिप्टी मैजिस्ट्रेट पं० रामेश्वरदयाल ने, जिन्हें दङ्गे के समय काम करना पड़ा था, अपने बयान में अपने कार्यों का वर्णन किया। नवाबज़ादा लियाक़तअली ख़ाँ के पूछने पर आपने कहा कि मैं लूट-मार रोकने के लिए गया था। मुझे यह पूर्ण विश्वास था कि कोई हिन्दू मुझ पर आक्रमण नहीं करेगा। इसलिए मैंने पुलिस की परवाह नहीं की, चौक में पुलिस की नज़रों के सामने लूट होती थी।

इसके बाद आपने अपने बयान में कहा कि हिन्दू-कॉन्स्टेबिल मुसलमानों की तथा मुसलमान कॉन्स्टेबिल हिन्दुओं की रक्षा की ओर ध्यान नहीं देते थे। अध्यक्ष के पूछने पर आपने कहा कि सभी कॉन्स्टेबिलों में यह भेद-भाव नहीं था।

२७वीं अप्रैल—आज दयानन्द एङ्ग्लो वैदिक कॉलेज के प्रिन्सिपल लाला दीवानचन्द का बयान हुआ। आपने अपने बयान में दङ्गे के समय की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि आमतौर पर लोगों की यह धारणा है कि २४वीं मार्च से २६वीं मार्च तक कानपूर का शासन-कार्य बिल्कुल बन्द हो गया था। मेरा यह विचार है कि यदि अधिकारियों ने उचित कार्यवाही की होती तो इतनी लूट और हत्याएँ न हुई होतीं। फिर आपने आगे कहा कि प्रतिष्ठित नागरिकों की बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता था। आगे नवाबज़ादा लियाक़त हुसैन ने आपसे पूछा—क्या आपका यह विचार है कि पुलिस लापरवाह थी और उसने कुछ नहीं किया?

उत्तर—मैंने देखा कि पुलिस के सिपाही ताश खेल रहे हैं और दङ्गे को दबाने का कोई प्रयत्न नहीं कर रहे हैं।

श्री० जोग की चुनौती

कानपूर का २८वीं अप्रैल का समाचार है, कि वहाँ के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० जोग ने अपने वक्तव्य में कहा है कि मि० गेविन का यह कहना कि मैंने स्वयंसेवकों को मेस्टन रोड पर मुसलमानों की दूकानों पर धरना देने के लिए उत्साहित किया था, बिल्कुल ग़लत है। वास्तव में किसी भी हड़ताल के दिन मुसलमानों की दूकानों पर कभी पिकेटिङ्ग नहीं की गई। केवल 'मोतीलाल-दिवस' के अवसर पर, मुसलमान नेताओं से यह प्रार्थना की गई थी कि वे मुसलमानों से हड़ताल मनाने के लिए अनुरोध करें। सत्याग्रह आन्दोलन के समय भी मेस्टन रोड पर मुसलमानों की दूकानों पर नाम मात्र की पिकेटिङ्ग की जाती थी, और दबाव तो कभी डाला ही नहीं गया।

कॉङ्ग्रेस ने हमेशा यह कोशिश की है कि मुसलमानों के साथ किसी प्रकार का झगड़ा न हो और न उनके भावों पर चोट पहुँचे। मैं अपने वक्तव्य की सचाई के प्रमाण-स्वरूप इस बात का चैलेञ्ज करता हूँ, कि कोई भी मुसलमान दूकानदार यह सिद्ध कर दे कि उसकी दूकान ज़बरदस्ती बन्द कराई गई थी।

मि० एस० एम० बशीर ने अपना बयान देते हुए यह स्वीकार किया कि यदि परमास के कुछ हिन्दू, वहाँ के मुसलमानों को शरण नहीं देते तो अधिकांश मुसलमान मारे जाते। अध्यक्ष ने आपसे पूछा—क्या हिन्दू, स्त्रियों पर आक्रमण एकदम ही नहीं करते थे?

गवाह—मुझे यह मालूम हुआ है कि हिन्दुओं ने मुसलमान औरतों और बच्चों को शरण दिया था; इस कारण उन्हें कोई भय नहीं था।

इसके बाद राधेश्याम नामक एक व्यक्ति की गवाही ली गई। उसने अपने बयान में लूट के सम्बन्ध में कहा, कि पुलिस की नज़रों के सामने, दङ्गाई थैलों में लूट का माल ले जाते थे, किन्तु पुलिस न तो उन्हें गिरफ़्तार ही करती थी और न उन्हें रोकने का ही प्रयत्न करती थी।

* * *

'मैं गाँधी के लिए वोट दूँगी'

एक अङ्गरेज़ महिला का महात्मा जी के प्रति भक्ति का प्रदर्शन

हाल ही में इङ्गलैण्ड के एक चुनाव में बड़ी मनोरञ्जक घटना घटी है, जिससे महात्मा जी के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का पता चलता है। कहा जाता है, कि एक वृद्धा ने पॉलिङ्ग स्टेशन में पहुँच कर चुनाव-अफ़सर से पूछा कि "गाँधी को वोट देने के लिए मैं कहाँ निशान लगाऊँ?" चुनाव-अफ़सर यह सुन कर बहुत आश्चर्यान्वित हुआ। वृद्धा ने कहा—"गाँधी को मैं इसीलिए वोट देना चाहती हूँ, कि 'डेलीमेल' उन्हें वोट न देने के लिए प्रचार करता है।"

स्पेन का नया उत्तराधिकारी

पेरिस का २४वीं अप्रैल का समाचार है, कि डॉन कार्लस के पुत्र डॉन जेम ऑफ़ बॉर्बन ने अपने को स्पेन की राजगद्दी का उत्तराधिकारी बताया है। अलफ़ेञ्ज़ो की अनुपस्थिति को अच्छा मौक़ा समझ कर, उसने एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें उसने राज-भक्तों से स्पेन के राजगद्दी के सच्चे अधिकारी को सहायता देने का अनुरोध किया है। उसने उन्हें आशा दी है, कि मैं कम्युनिज़्म का विरोध करूँगा। उसका कहना है, कि केवल एक ऐसे राजा की असफलता के कारण, जो अपनी प्रजा को सन्तुष्ट नहीं कर सका, राज्यतन्त्र का नाश नहीं हो जाना चाहिए।

—लन्दन का २०वीं अप्रैल का समाचार है, कि ब्रिस्टल के व्यापारिक और मज़दूर-सङ्घों ने अपनी परिषद में महात्मा गाँधी और भारत के व्यापारिक और मज़दूर-सङ्घों का ध्यान भारतीय किसानों और मज़दूरों को पूर्ण राजनैतिक अधिकार दिए जाने की ओर आकर्षित किया है। परिषद ने भारतीय कार्यकर्ताओं को बधाइयाँ दीं और उनके स्वातन्त्र्य-युद्ध में सफलता की शुभ-कामना प्रगट की।

इङ्गलैण्ड में भारतीय महिलाओं को बधाई

लन्दन का समाचार है, कि कॉमनवेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग की ओर से वहाँ एक महिला-परिषद की गई। परिषद में सम्मिलित अङ्गरेज़ महिलाओं ने भारतीय महिलाओं की वीरता और सच्ची लगन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रीमती पेथिक लॉरेन्स ने कहा, कि भारतीय महिलाओं ने जो आदर्श उपस्थित किया है, वह आधुनिक समय के लिए सब से अधिक सनसनी फैलाने वाली घटना है। मिस सिल्विया पैङ्कहर्स्ट ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता के संग्राम में वीरतापूर्वक मोर्चा लेने के लिए, भारतीय महिलाओं की प्रशंसा की गई थी। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हो गया।

परिषद ने सब से अधिक महत्वपूर्ण जो प्रस्तव पास किया है वह यह है, कि भारतीय स्वराज्य-शासन-विधान में भारतीय जनता के आत्म-निर्णय के अधिकार को विशेष स्थान मिलना चाहिए।

परिषद ने कुछ अन्य प्रस्ताव भी सर्व-सम्मति से पास किए, जिनमें मेरठ षड्यन्त्र के अभियुक्तों को लगातार बहुत दिनों तक क़ैद में रखने की निन्दा की गई है और उनको छोड़ देने के लिए ज़ोर दिया गया है।

* * *
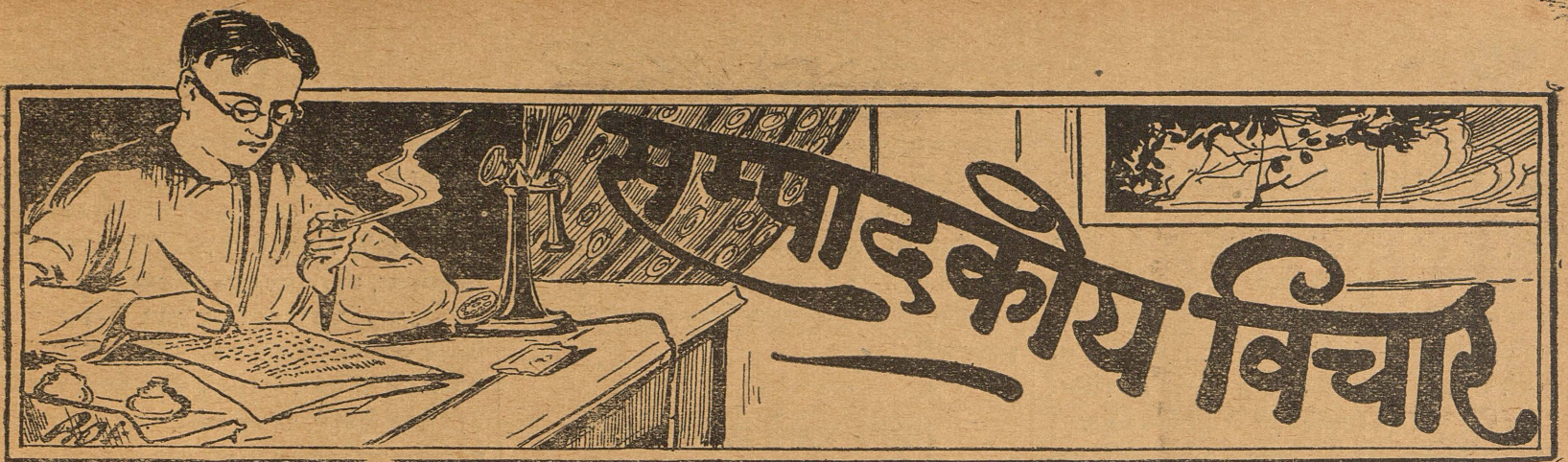
३० अप्रैल, सन् १९३१

अफ़ग़ानिस्तान का भविष्य
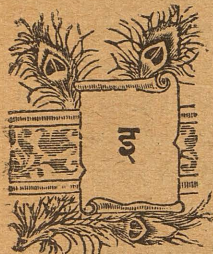
धर कुछ दिनों से अफ़ग़ानिस्तान ने सारे संसार का—विशेषतः एशियाई देशों का ध्यान अपनी ओर पुनः आकर्षित किया है। अफ़ग़ानिस्तान की समस्या आज फिर एक बार राजनीति वं विद्यार्थियों के लिए एक पहेली बन गई है। पाठकों को स्मरण होगा, अभी हाल ही में लाहौर के सुविख्यात उर्दू पत्र सहयोगी "ज़मींदार" में इस आशय का एक पत्र प्रकाशित हुआ था, कि अफ़ग़ानिस्तान की अधिकांश जनता वहाँ के वर्तमान सम्राट नादिर ख़ाँ से बहुत असन्तुष्ट हो गई है और उसने पुनः ग़ाज़ी अमानुल्लाह को अफ़ग़ानिस्तान का राजसिंहासन उन्हें सौंप देने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया है। पत्र में यह भी प्रकाशित हुआ था, कि इस आशय का एक निमन्त्रण-पत्र अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व सम्राट ग़ाज़ी अमानुल्लाह ख़ाँ के पास भेजा गया था, जिसे उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है। पत्र का कहना था, कि एप्रिल, १९३१ के अन्त तक अथवा मई तक, ग़ाज़ी अमानुल्लाह ख़ाँ ने अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर पहुँच जाने का निश्चय कर लिया है। अफ़ग़ानिस्तान की वर्तमान राजनीतिक अवस्था को दृष्टि में रखते हुए सहसा इस समाचार पर किसी को विश्वास नहीं होता था, किन्तु इस पत्र के प्रकाशित होने के कुछ ही दिनों बाद रयूटर ने भी इसी बात का समाचार दिया, कि ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ ९वीं एप्रिल को नेपल्स से मक्का-मदीना की ओर रवाना हो गए हैं। केवल रयूटर ही नहीं; विलायत के 'मॉर्निङ्ग पोस्ट' में इस पत्र के रोम-स्थित एक सम्वाददाता का भी इसी आशय का एक समाचार प्रकाशित हुआ था, जिसमें कहा गया था, कि "अमानुल्ला के मित्रों ने उन्हें पुनः अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर आसीन करने का निश्चय कर लिया है और वे इस सम्बन्ध में प्रयत्नशील भी हैं।" 'मॉर्निङ्ग पोस्ट' के रोम-स्थित सम्वाददाता का यह भी कहना था, कि ग़ाज़ी अमानुल्ला अपने कुछ मित्रों के साथ नेपल्स से पोर्ट सैद (सईद बन्दर) के लिए रवाना भी हो चुके हैं। सहयोगी 'ज़मींदार' में वह पत्र, जिसकी चर्चा ऊपर की गई है, 'मॉर्निङ्ग पोस्ट' में यह समाचार प्रकाशित होने के पहिले ही प्रकाशित हो चुका था। उसमें यह भी कहा गया था, कि ग़ाज़ी अमानुल्ला पहिले मक्का-मदीना जायँगे और इसके बाद अफ़ग़ानिस्तान के लिए कूच करेंगे। सहयोगी की पहिली भविष्यवाणी पूर्णतः ठीक उतरी। शिमला के २३वीं एप्रिल के एसोसिएटेड प्रेस के एक तार से पता चलता है, कि "अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व सम्राट ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ जो "तीर्थ-यात्रा" के लिए हेजाज़ जा रहे हैं, आज जद्दा पहुँच गए।" जहाँ तक हमें स्मरण है, ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ को अपने सुदीर्घ शासन-काल में—जबकि उन्हें अनेक सुविधाएँ प्राप्त थीं, "तीर्थ-यात्रा" की कभी नहीं सूझी। ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ जैसे कर्मशील व्यक्ति से इस बात की आशा भी नहीं की जा सकती, कि वे किसी तीर्थ-स्थान में जाकर 'इबादत' और 'सिजदा' में ही अपना शेष जीवन व्यतीत कर देंगे, अतएव हमें तो कुछ दाल में काला मालूम होता है। हमारा यह सन्देह सर्वथा निराधार हो, सो बात भी नहीं है। हम कुछ प्रमाण भी देने को तैयार हैं। अस्तु।

अभी हाल ही की बात है, कि समाचार-पत्रों में इस आशय का भी एक समाचार प्रकाशित हुआ था, कि अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान शासक सम्राट नादिर ख़ाँ को ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने १७० हज़ार पाउण्ड बिना सूद-ब्याज लिए ही क़र्ज़ दिया है और इसके अतिरिक्त एक बहुत बड़ी संख्या में अस्त्र-शस्त्र भी उन्हें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की ओर से भेंट किया गया है। जहाँ तक हमें स्मरण है, ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की ओर से इस समाचार को न तो निराधार ही बतलाया गया है और न इसका खण्डन ही किया गया है; इसलिए हम केवल अपनी शङ्का-समाधान के लिए यह पूछना चाहते हैं, कि आख़िर अफ़ग़ानिस्तान में ऐसा कौन-सा सङ्कट इधर हाल ही में उपस्थित हो गया था, जिसके लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को इतनी अधिक सहायता देने की आवश्यकता पड़ी? फिर इसी सिलसिले में चलते-चलाते लॉर्ड इर्विन अपना १२वाँ ऑर्डिनेन्स भी पास करते गए, जिसका आशय यह है, कि यदि कोई पत्र ऐसा लेख, समाचार अथवा अफ़वाह छापेगा, जिसके द्वारा ब्रिटिश गवर्नमेण्ट तथा किसी अन्य राज्य में मनोमालिन्य पैदा होने की सम्भावना हो, तो उसके मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक को २ वर्ष तक का कठिन कारावास-दण्ड या जुर्माना अथवा दोनों की सज़ा दी जावेगी! इस ऑर्डिनेन्स के पास किए जाने से भी—जबकि इसके पास किए जाने का न तो कोई कारण दिखाई देता है और न गवर्नमेण्ट की ओर से ही कोई कारण बतलाया गया है, जैसा कि अन्य ऑर्डिनेन्सों को पास करते समय बतलाया जाता था—अवश्य यही सन्देह होता है, कि वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान की अवस्था इस समय फिर रहस्यपूर्ण हो गई है और वह ऐसी साधारण नहीं है, जैसी नादिर ख़ाँ के मित्रों की ओर से बतलाई जाती है। भारतवासियों के प्रति घोर अविश्वास होने के कारण ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भी उन्हें अन्दरूनी राजनैतिक मामलों का समाचार तक नहीं देना चाहती; अतएव भारतवासियों को अफ़ग़ानिस्तान तथा बर्मा आदि के सम्बन्ध में केवल उतनी ही बातें मालूम हो सकती हैं, जितनी ब्रिटिश गवर्नमेण्ट उन्हें अपनी ओर से बतलाना चाहे। उड़ते हुए जो थोड़े-बहुत समाचार भारतवासियों के कानों तक बहुत कठिनाइयों से पहुँच जाया करते थे, इस नए ऑर्डिनेन्स ने उनका द्वार भी बन्द कर दिया! अस्तु।

अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान शासक सम्राट नादिर ख़ाँ के प्रति प्रजा के कैसे विचार हैं, यह बतलाना कठिन है; किन्तु भूतपूर्व सम्राट अमानुल्ला ख़ाँ के प्रति प्रजा के विचार बड़े ही उदार और प्रेमपूर्ण थे, इसमें सन्देह नहीं। वास्तव में ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ संसार के उन श्रेष्ठ और कुशल शासकों में से थे, जिनके हाथ में शासन का सूत्र आते ही मुर्दे राष्ट्रों में भी नवजीवन का सञ्चार हो जाता है और पिछड़ी हुई जातियाँ भी उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान हो जाती हैं। अमानुल्ला ने अपने शासन-काल में अफ़ग़ानिस्तान की बर्बर प्रजा को सभ्य और अफ़ग़ान-राष्ट्र को संसार का एक महान शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का जो विराट प्रयत्न किया था, वह पाठकों से छिपा न होगा। उनके सिंहासनारूढ़ होते ही अफ़ग़ानिस्तान की अस्त-व्यस्त और बिखरी हुई शक्तियों में एक नवीन स्फूर्ति का सञ्चार हो गया और वीर अफ़ग़ानों का जीवन एक नई ज्योति से प्रदीप्त हो उठा। अमानुल्ला के पूर्वजों के शासन-काल में अफ़ग़ानिस्तान कहने को तो स्वतन्त्र था, पर वास्तव में वह भारतीय गवर्नमेण्ट का ग़ुलाम मात्र था, एशिया की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को अपने क़ाबू में रखने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की ओर से अमानुल्ला के पिता अमीर हबीबुल्लाह को प्रति वर्ष १८ लाख रुपयों की भेंट नियमित रूप से दी जाती थी। स्वतन्त्रता-प्रिय अमानुल्ला के लिए परतन्त्रता-रूपी चाँदी की इस बेड़ी का भार वहन करना असह्य था। उन्होंने ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से युद्ध करने की ठान ली। यह सन् १९१९ का ज़माना था। असहयोग आन्दोलन अपनी चरम-सीमा पर पहुँचा हुआ था और भारतीय गवर्नमेण्ट उस समय बड़ी भयभीत हो रही थी; अतएव उसे अफ़ग़ानिस्तान से ऐसे नाज़ुक समय में कलह मोल लेने का साहस न हुआ। भारतीय सरकार ने तुरन्त अफ़ग़ानिस्तान की पूर्ण-स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन के कारण देश में जो परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी, अपनी दूरदर्शिता के कारण शाह-अमानुल्ला ने इससे पूरा-पूरा लाभ उठाया।

संसार के सभी देशों से अफ़ग़ानिस्तान की पूर्ण-स्वतन्त्रता स्वीकार कराने के बाद अमानुल्ला ने राज्य की भीतरी कमज़ोरियों को दूर करने की ओर ध्यान दिया। उन्होंने नवीन ढङ्ग से अपनी सेना का सङ्गठन किया, उसके सञ्चालन के लिए सुविधा-जनक मार्गों की व्यवस्था की। अफ़ग़ानिस्तान के बहुत से नवयुवकों को राज्य की ओर से छात्रवृत्ति देकर यूरोप के विश्वविद्यालयों में भेजा गया। इन महत्वपूर्ण सुधारों के फल-स्वरूप थोड़े ही दिनों में अफ़ग़ानिस्तान की शक्ति और प्रतिष्ठा इतनी अधिक बढ़ गई, कि जब अमीर अमानुल्ला पश्चिमी देशों का अनुभव प्राप्त करने के लिए यूरोप में भ्रमण कर रहे थे, उस समय संसार के बड़े-बड़े राष्ट्रों ने उनकी कृपा-कटाक्ष प्राप्त करने के लिए तथा अफ़ग़ानिस्तान से मैत्री स्थापित करने के लिए बड़े ठाट-

बाट से उनका स्वागत करने में एक-दूसरे से मानो होड़ लगा लिया था। किसी ने अपनी संस्कृति की मधुरता दिखा कर उन्हें मुग्ध करने की चेष्टा की और किसी ने अपने सैनिक प्रभुत्व का प्रदर्शन कराके उन्हें भयभीत करने की; पर अमीर अमानुल्ला की स्वदेश-भक्ति एवं नीति-निपुणता—दोनों प्रशंसनीय थीं। उन्होंने न तो किसी के मधुर व्यवहारों के जाल में फँसना स्वीकार किया और न वे इन छिछोरे राष्ट्रों के पाशविक प्रभुत्व को देख कर भयभीत ही हुए—उनके इस भ्रमण का एक-मात्र उद्देश्य था, नए वैज्ञानिक तथा अन्यान्य आविष्कारों का अध्ययन करना तथा इनके द्वारा अपने विस्तृत राज्य को उन्नति-लाभ पहुँचाना; किन्तु आज हम इस बात का अनुभव कर रहे हैं, कि अमीर अमानुल्ला ख़ाँ ने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुचित जल्दबाज़ी से काम लिया और अन्त में यही जल्दबाज़ी उनके लिए घातक भी सिद्ध हुई। बिना अपने राज्य की सुदृढ़ व्यवस्था किए हुए तथा बिना अपने मित्र और शत्रु को पहचाने हुए, राज्य की बागडोर उनके हाथों में सौंप कर इस भ्रमण के लिए पाश्चात्य देशों में जाना ही उनके लिए तथा उनके राज्य के लिए काल सिद्ध हुआ।

अमानुल्ला ख़ाँ के निश्चित-शत्रु केवल सुयोग की प्रतीक्षा कर रहे थे। अमानुल्ला की विजय ने एशियाई प्रदेशों की स्वतन्त्रता के बैरियों के हृदयों पर जो भयङ्कर आघात किया था—वे इसके प्रतिशोध की बाट जोह रहे थे। पूँजीवाद के समर्थकों के लिए एशिया के सिंह-द्वार का इस प्रकार खुला रहना असह्य हो गया और यही कारण है, कि बैरियों द्वारा जो षड्यन्त्र वर्षों से रचे जा रहे थे, वे इतनी सरलतापूर्वक सफल हो सके। नहीं तो क्या मजाल थी शोराबाज़ार के एक क्षुद्र मुल्ला की, जो इतने बड़े राष्ट्र के विरुद्ध खुली बग़ावत की आवाज़ उठा सके? और क्या मजाल थी उस बच्चा सक्का नाम के भिश्ती-पुत्र की, जिसने कुछ दिनों तक अफ़ग़ानिस्तान के रक्त-रञ्जित राजमुकुट को अपने अपवित्र करों द्वारा कलङ्कित किया था? इस विश्वासघात में अफ़ग़ानिस्तान के प्रतिष्ठित अफ़सरों का भी कम हाथ न था और एक हद तक अफ़ग़ानिस्तान की जहालत भी शाह अमानुल्ला के इस पतन के लिए ज़िम्मेदार थी; कुछ भी हो, अमानुल्ला के प्रति इस प्रकार विश्वासघात का परिचय देकर अफ़ग़ानिस्तान ने जो पाप किया है, उसका दुष्परिणाम अभी उसे बहुत अधिक भोगना पड़ेगा। यदि सच पूछिए, तो शाह अमानुल्ला के सिंहासन का परित्याग करते ही अफ़ग़ानिस्तान के दुर्दिन के लक्षण प्रकट होने लगे थे, अमानुल्ला के शासन-काल में जिस अफ़ग़ानिस्तान के साथ भारतीय गवर्नमेण्ट मित्रता का व्यवहार करने में अपना सौभाग्य समझती थी, उसी अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान शासक का ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से सहायता के लिए कर-बद्ध प्रार्थना करना, कैसे भीषण नैतिक पतन का परिचायक है?

धन-लोलुप एवं साम्राज्यवाद के उपासक यूरोपीय देशों का तो हमें पता नहीं, किन्तु समस्त पूर्वीय देशों ने उन्हें सदा आदर एवं प्रेम की दृष्टि से देखा है। राष्ट्रीय भारत ने अमानुल्ला ख़ाँ की इस विफलता पर सदा आँसू बहाए हैं। उनके व्यक्तित्व के लिए नहीं—अपने तथा समस्त एशियाई देशों के स्वार्थ से प्रेरित होकर; क्योंकि आज समस्त एशियाई देश पाश्चात्य राष्ट्रों की कूट-नीति और भयङ्कर आर्थिक लूटों का शिकार होकर जर्जर और शक्तिहीन हो रहे हैं और कौन कह सकता है, कि यदि विधि बाम न होता—आज यदि अफ़ग़ानिस्तान का शासन ग़ाज़ी अमानुल्ला ख़ाँ के हाथों में होता, तो एशियाई देशों की वर्तमान परिस्थिति में एक भीषण परिवर्तन न हो गया होता?

कुछ भी हो, अफ़ग़ानिस्तान का वातावरण एक बार पुनः अनेक सम्भावनाओं के आवरण में छिप कर सारे संसार को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है, भविष्य के गर्त में छिपी हुई इन सम्भावनाओं को ढूँढ़ निकालना राजनीतिज्ञों के लिए मनोरञ्जक विषय सिद्ध होगा, इसमें सन्देह नहीं।

* * *

राष्ट्रीय झण्डे की समस्या

इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं, कि अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस को जिस कमिटी ने वर्तमान राष्ट्रीय झण्डे के रङ्गों की सिफ़ारिश की होगी, उसमें अवश्य ही साम्प्रदायिक नेताओं का बाहुल्य रहा होगा। इस तिरङ्गे राष्ट्रीय झण्डे की जो व्याख्या की गई है, उसे सुन कर उन जातियों का निराश होना अनिवार्य था, जिनके सामने जातीयता का प्रश्न पहिले उपस्थित होता है और राष्ट्रीयता का उसके बाद में! निर्माण-कर्ताओं के मतानुसार इस झण्डे का लाल रङ्ग हिन्दुत्व का परिचायक बतलाया गया है; हरा रङ्ग मुसलमानों का और सफ़ेद रङ्ग अन्य जातियों का सम्मिलित-चिह्न माना गया है। यद्यपि हमने स्वयं प्रत्येक साम्प्रदायिक आन्दोलनों एवं भेद-भाव के कार्यों से हृदय की सारी शक्ति से घृणा की है, किन्तु न्याय की दृष्टि से हम इस सम्बन्ध में उन सिक्खों को दोषी नहीं ठहरा सकते, जिन्होंने सदा राष्ट्रीय झण्डे में अपना पीला रङ्ग भी जोड़ देने का कॉङ्ग्रेस से अनुरोध किया है। इसका एकमात्र कारण यही है, कि आज देश के दुर्भाग्य से मुसलमानों और सिक्खों में साम्प्रदायिकता एवं प्रतिस्पर्धा की भावनाएँ अन्य जातियों से अधिक जाग्रत प्रतीत होती हैं। अतएव मुसलमानों की भाँति सिक्खों में भी साम्प्रदायिक नेताओं का अभाव नहीं है और इन साम्प्रदायिक नेताओं ने भी मुसलमानों की भाँति विगत राष्ट्रीय आन्दोलन में जिस अदूरदर्शिता और हठधर्मी का परिचय दिया है, वह सर्वथा अक्षम्य है। इन साम्प्रदायिक नेताओं ने सिक्खों से विगत राष्ट्रीय आन्दोलन में तब तक भाग न लेने का, खुले शब्दों में अनुरोध किया था; जब तक उनका जातीय-चिन्ह भी राष्ट्रीय झण्डे में सम्मिलित न कर दिया जाय। अस्तु।

यदि इस राष्ट्रीय झण्डे के रङ्गों के निर्णय की घोषणा करते समय, इसमें साम्प्रदायिकता की पुट न देकर, वह व्याख्या की गई होती, जो गत २७वीं एप्रिल को बम्बई में राष्ट्रीय झण्डा-अभिवादन दिवस के उपलक्ष में एक सारगर्भित व्याख्यान देते हुए, देवी सरोजिनी नायडू ने की है; तो आज यह प्रश्न ही उपस्थित न हुआ होता। देवी जी ने कहा, कि हमारे राष्ट्रीय झण्डे के रङ्ग जातीयता के परिचायक कदापि नहीं हैं, बल्कि लाल रङ्ग का अर्थ, आपने स्वतन्त्रता के संग्राम में होने वाली राष्ट्रीय क़ुर्बानियों का द्योतक बतलाया; आपने कहा, यह रङ्ग उन शहीदों के ख़ून का रङ्ग है, जिन्होंने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए अपने जीवन तक का बलिदान कर दिया है, हरे रङ्ग को आपने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए देश की निष्ठा और उमङ्गों का परिचायक बतलाया तथा सफ़ेद रङ्ग को आपने शान्ति, सत्य एवं अहिंसा का द्योतक बतलाया। किन्तु यह सारमयी व्याख्या एक ऐसे समय में की गई है, जब उसके द्वारा किसी भी प्रकार के लाभ की सम्भावना दिखाई नहीं देती, क्योंकि वर्षों तक इस सम्बन्ध में इतना तुमुल आन्दोलन सिक्खों की ओर से उठाया जा चुका है, कि अब इस जाति पर इस सुन्दर व्याख्या का प्रभाव पड़ ही नहीं सकता। अस्तु।

यह वास्तव में बड़े सन्तोष की बात है, कि राष्ट्रीय महासभा का ध्यान इस जटिल प्रश्न की ओर कराची कॉङ्ग्रेस के अवसर पर आकर्षित हुआ और उसकी कार्य-कारिणी सभा ने राष्ट्रपति सरदार बल्लभभाई पटेल, भूतपूर्व-राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर पट्टाभी सीतारमय्या, श्री० एस० एम० हार्डिकर, श्री० डी० बी० केलकर, श्री० मास्टर तारासिंह तथा मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद-जैसे सुविख्यात राष्ट्रीय नेताओं की एक कमिटी इस अभिप्राय से नियुक्त करके अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया है, कि वह प्रत्येक पहलू से इस समस्या पर विचार कर कॉङ्ग्रेस से इस बात की सिफ़ारिश करे, कि राष्ट्रीय झण्डे का रङ्ग अथवा उसका भावी स्वरूप क्या होना चाहिए?

इस सम्बन्ध में हमारी तो निश्चित-धारणा यह है, कि विभेदपूर्ण जातीय रङ्गों को तो किसी भी हालत में राष्ट्रीय झण्डे में स्थान न दिया जाना चाहिए; क्योंकि यदि सिक्खों के इस निस्सार आन्दोलन से प्रेरित होकर कॉङ्ग्रेस राष्ट्रीय झण्डे में पीला रङ्ग जोड़ देने का निश्चय करे तो कोई कारण नहीं है, कि बिना आन्दोलन खड़ा किए ही, अन्य सारी जातियों के रङ्ग अथवा धार्मिक चिन्हों को राष्ट्रीय झण्डे में स्थान न दिया जाय। आज यदि सिक्ख इस सम्बन्ध में आन्दोलन खड़ा कर सकते हैं, तो कल भारतीय क्रिश्चियन, पारसी तथा यहूदी लोग भी मचल सकते हैं। हमारी दृष्टि में राष्ट्रीय झण्डे का प्रश्न वास्तव में बड़ा जटिल प्रश्न है और राष्ट्रीय महासभा को इसे बहुत सावधानी से हल करना होगा। जब तक जनसाधारण राष्ट्रीय झण्डे को सम्मान की दृष्टि से न देखेगा, तब तक उस झण्डे की रक्षा हो ही नहीं सकती। देश की प्रत्येक जाति को राष्ट्रीय झण्डे को उसी दृष्टि से देखना चाहिए, जिस दृष्टि से प्रत्येक अङ्गरेज़ "यूनियन जैक" को देखता है, और उसके अपमान के लिए अङ्गरेज़ों का बच्चा-बच्चा अपना रक्त बहाने को सदा तैयार रहता है। जब तक भारतवासी सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय झण्डे को इसी दृष्टि से न देखेंगे, तब तक उसके सम्मान तथा उसकी रक्षा का प्रश्न हल हो ही नहीं सकता।

एक बात और भी है. वर्तमान राष्ट्रीय झण्डा देखने में भी विशेष सुन्दर प्रतीत नहीं होता, जब कि अन्य देशों की राष्ट्रीय पताकाएँ अपनी निराली छटा से दर्शकों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। हमारा विचार है, कि भावी राष्ट्रीय झण्डे के निर्माण के सम्बन्ध में यदि अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रों की सम्मति प्राप्त कर ली जावे तथा इसके बनाने वाले को एक विशेष पुरस्कार देने की घोषणा कर दी जावे, तो अनेक पाश्चात्य देशवासी भी इस जटिल प्रश्न को सुलझाने में हमारे सहायक हो सकते हैं; किन्तु विलम्ब करने का समय नहीं है, क्योंकि ईश्वर न करें, यदि पुनः राष्ट्रीय संग्राम छेड़ने का अवसर उपस्थित हो गया, तो इस बार के युद्ध में कम से कम हम वीर सिक्खों की उपेक्षा नहीं कर सकते—ऐसा करना वास्तव में बड़ी मूर्खता होगी।

* * *

न्याय का स्वाँग

गवर्नर-गोलीकाण्ड के सिलसिले में लाहौर के सुप्रसिद्ध पत्रकार महाशय कृष्ण के पुत्र श्री० वीरेन्द्र भी ४थी बार गिरफ़्तार कर लिए गए थे। अन्य षड्यन्त्रों के सिलसिले में वे इससे पहले तीन बार पकड़े जा चुके हैं; किन्तु उनके विरुद्ध कोई अभियोग सिद्ध न होने के कारण वे हर बार छोड़ दिए गए। इस मामले में भी उन्हें पहले गिरफ़्तार किया गया था, किन्तु इस बार भी सदा की भाँति पुलिस उनके विरुद्ध कोई अभियोग प्रमाणित न कर सकी और अदालत द्वारा वे रिहा कर दिए गए थे; किन्तु उनके मुक्त रहने में पञ्जाब-पुलिस को अराजकता का भय था, अतएव पुलिस की सिफ़ारिश से

वे क्रिमिनल-लॉ-एमेण्डमेण्ट को उस २री धारा के अनुसार राजबन्दी बना कर लाहौर क़िले में क़ैद कर दिए गए हैं, जिसके शिकार होकर बङ्गाल के सैकड़ों प्रतिभाशाली नवयुवक बिना किसी अपराध के आज जेलों में पड़े घुल रहे हैं। अस्तु।

श्री० वीरेन्द्र इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले थे; बड़ी कठिनाइयों के बाद उन्हें परीक्षा-सम्बन्धी पर्चों को देने तथा उन्हें जेल में ही हल करने की अनुमति तो दे दी गई है; किन्तु इसके लिए उनसे बिना किसी अपराध के १२०) रु० की अतिरिक्त-फ़ीस ली गई है; उन्हें सगे-सम्बन्धियों से—यहाँ तक कि पिता तक से, न तो मिलने दिया जाता है और न उनके पत्र अविकल रूप से उन तक भेजे जाते हैं। इस सम्बन्ध में 'भविष्य' के इसी अङ्क में महाशय कृष्ण का एक वेदनापूर्ण पत्र वक्तव्य प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे पाठक उन पर तथा उनके पुत्र पर होने वाले इन अवाञ्छनीय अत्याचारों का नग्न स्वरूप देखेंगे।

दूसरी ओर लाहौर के नए षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों के साथ क़ानून के नाम पर जैसा अत्याचार किया जा रहा है, वह भी उपेक्षणीय विषय नहीं है। हाईकोर्ट की आज्ञा के विरुद्ध भी इक़बाली गवाहों को ख़ुफ़िया-पुलिस से जेल में मिलने दिया जा रहा है; ताकि वे अपनी इच्छा और सुविधानुसार इन मुख़बिरों से मनचाहा बयान दिला सकें। खुली अदालत में मुख़बिर इन्द्रपाल के बयानों द्वारा पुलिस के जिन अत्याचारों का उद्घाटन हुआ है, उस पर जितना भी खेद प्रकट किया जाय, थोड़ा है।

अभियुक्तों की ओर से बार-बार प्रार्थनाएँ करने पर भी गवर्नमेण्ट ने कोई ध्यान नहीं दिया, अन्त में जब हाईकोर्ट में इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र दिया गया, तब कहीं मुख़बिरों को जेल में भेजा गया, नहीं तो वे पुलिस की हिरासत में ही रक्खे जाते थे और अत्याचारों के भय से पुलिस जो चाहती थी, वही उन्हें कहने को वाध्य होना पड़ता था। इस सम्बन्ध में लाहौर हाईकोर्ट के जस्टिस भाईड तथा जस्टिस टैप ने जो फ़ैसला लिखा है, उससे यह स्पष्ट पता चल जाता है, कि षड्यन्त्र सम्बन्धी मामलों में न्याय की हत्या किस हद तक की जाती है। षड्यन्त्र-केस के सारे अभियुक्त प्रायः पुलिस की कृपा पर छोड़ दिए जाते हैं और पुलिस उन्हें अपनी चल-सम्पत्ति समझ कर उनका जैसा उपयोग करना चाहती है, करती है। देहली षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों पर होने वाले अत्याचारों का ज़िक्र भी पाठकों ने 'भविष्य' के गताङ्क में पढ़ा ही होगा। अस्तु।

षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों के प्रति आज इस देश में जैसा व्यवहार किया जाता है, उसमें न्याय से अधिक प्रतिहिंसा की भावना होती है—गत वर्षों में न्याय के नाम पर होने वाले इन नाटकों ने तो हमारी इस धारणा को और भी पुष्ट कर दिया है।

* * *

बङ्गाल की राजनीतिक दलबन्दी

इस सप्ताह बङ्गाल से दो-तीन ऐसे समाचार आए हैं, जिनसे मालूम होता है, कि वहाँ की राजनीतिक दलबन्दी अपनी सैद्धान्तिक सीमा का उल्लङ्घन कर व्यक्तिगत विद्वेष के रूप में परिणत हो रही है। श्री० सुभाषचन्द्र बोस के सहोदर श्री० शरच्चन्द्र बोस का एक मानहानि के मामले में पड़ कर, श्री० जे० एम० सेन गुप्त आदि से माफ़ी माँगना, चटगाँव में श्री० सेन गुप्त पर लाठियों का वार, मैमनसिंह में उन पर सशस्त्र जनता का आक्रमण आदि ऐसी घटनाएँ हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है, कि वहाँ के कॉङ्ग्रेस वालों का पारस्परिक मनोमालिन्य सभ्यता और शिष्टता की सीमा से कहीं आगे निकल गया है। इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि महात्मा गाँधी अथवा अन्यान्य अखिल भारतवर्षीय नेता इस झगड़े को मिटाने की चेष्टा करें, और बङ्गाल को पारस्परिक कलहाग्नि से बचाएँ। अन्यथा इस कलह से वहाँ की राजनीतिक प्रगति को भयङ्कर धक्का लगेगा और भविष्य में समस्या और भी जटिल हो जाएगी।

* * *

भारतीय पुलिस की प्रशंसा

कानपुर के साम्प्रदायिक दङ्गे में पुलिस ने जिस अकर्मण्यता और निर्लज्जता का परिचय दिया है, उसे देखते हुए हमें यह आशा हुई थी, कि भारतीय पुलिस के प्रशंसक इससे कुछ लज्जित होंगे और भविष्य में उसकी अकर्मण्यताओं पर प्रशंसा का पर्दा डाल कर, जनता की आँखों में धूल झोंकने के हास्यास्पद प्रयास से बाज़ आएँगे। परन्तु हाल में कलकत्ता के भूतपूर्व पुलिस-कमिश्नर सर रेजीनॉल्ड क्लार्क ने अपने एक व्याख्यान में भारतीय पुलिस की प्रशंसा करके हमें आश्चर्य में डाल दिया है और हमारी समझ में नहीं आता, कि आख़िर लज्जाशीलता, मनुष्यत्व और सत्य का इन गौराङ्ग महानुभावों की दृष्टि में कुछ मूल्य है भी या नहीं? आपने फ़रमाया है कि "प्रत्येक साम्प्रदायिक दङ्गे में भारतीय पुलिस की निरपेक्षिता पर विश्वास किया जा सकता है।" अर्थात् आपके मतानुसार, दङ्गों के समय पुलिस का चुपचाप तमाशा देखना और उसे रोकने की चेष्टा न करना, उसकी निरपेक्षिता और तटस्थता का परिचायक है और यही उसका कर्तव्य है। इसलिए आपकी राय है कि "भावी शासन-विधान में पुलिस की रक्षा की यथोचित व्यवस्था होनी चाहिए।" इसके बाद पुलिस की राजभक्ति की प्रशंसा करते हुए, आपने कहा है कि "बार-बार की क्रान्ति के कारण पुलिस पर जो दबाव डाला गया है, वह अब असह्य हो गया है, इसलिए नए विधान में इस बात का आश्वासन होना आवश्यक है, कि पुलिस के ऊपर सहन-शक्ति से अधिक भार न लादा जाएगा।" हमारी समझ में पुलिस की इन प्रशंसाओं के शब्दों में जो मनोवृत्ति छिपी रहती है, उसका स्पष्ट आशय यही है, कि वैध या अवैध रीति से राजनीतिक आन्दोलनों को कुचल डालना ही पुलिस का प्रधान कर्तव्य है और अगर वह अपने इस कर्तव्य का पालन करती रहती है, तो उसे और कुछ करने की आवश्यकता नहीं। यही शान्ति और शृङ्खला की रक्षा है और इसीलिए ग़रीब भारतवासियों के लाखों रुपए पुलिस-विभाग पर ख़र्च हुआ करते हैं!

* * *

लट्ठबाज़ी की फ़िल्में

हाल ही में अपना अध्ययन समाप्त करके एक सज्जन जर्मनी से लौटे हैं, आपका कहना है, कि गत राष्ट्रीय आन्दोलन में पुलिस द्वारा भारतवासियों के लाठी से पीटे जाने के अनेक रोमाञ्चकारी दृश्यों की फ़िल्में तैयार करके जर्मनी और अमेरिका के बाईस्कोपों में दिखाई जा रही हैं। इन दृश्यों को देख कर अमेरिकन तथा जर्मनी की जनता को सहसा अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं होता, वे इस बात की कल्पना तक नहीं कर सकते, कि बीसवीं सदी के इस उन्नति और विकास के युग में इन नृशंस उपायों का अवलम्ब लिया जा सकता है। प्रायः जर्मनी तथा अमेरिका की जनता प्रतिष्ठित प्रवासी भारतवासियों से इस सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछती है। वे लोग पूछते हैं, कि क्या वास्तव में भारतवासी इतनी बेरहमी से पीटे जाते हैं, अथवा इस प्रकार के दृश्यों की व्यवस्था केवल फ़िल्म लेने के उद्देश्य से ही की गई है? वे पूछते हैं, कि क्या वास्तव में भारतीय सरकार प्रजा पर इतने अत्याचार करती है और भारतवासी इन सारे अपमानों को चुपचाप सह लेते हैं? इत्यादि। हाल ही में कुछ जर्मनी के समाचार-पत्रों ने इस सम्बन्ध के कार्टून भी अपने पत्रों में प्रकाशित किए हैं। अस्तु।

हमारे इन मित्रों को पता नहीं, कि केवल पुरुष ही नहीं, भारतीय महिलाओं को भी पुलिस के इन नृशंस प्रहारों को सहन करना पड़ा है, उनकी छातियों पर बन्दूक़ के कुन्दों तथा जूतों तक से आक्रमण किया गया है और इतना सब होते हुए भी, केवल इन अत्याचारों की जाँच करने से इन्कार ही नहीं किया गया, बल्कि चलते-चलाते वाइसराय महोदय भाँड़ों के समान भारतीय पुलिस की 'सहनशीलता' तथा 'स्वामि-भक्ति' की दाद भी देते गए हैं और इस प्रकार पग-पग पर भारतवासियों का अपमान किया जाना, इस देश के शासकों तथा शासितों के लिए एक साधारण सी बात हो गई है!

हमें यह जान कर वास्तव में बड़ी प्रसन्नता हुई, कि इन लाठी-प्रहारों के कारण भारतवासियों की परवशता का चित्र पाश्चात्य देशवासियों के सम्मुख तो उपस्थित हो सका। अब वे लोग सरलता से इस बात का प्रमाण पा सकेंगे, कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का यह दावा, कि वह केवल परोपकार की भावनाओं से प्रेरित होकर ही भारत का शासन-भार अपने हाथ में लिए हुए है—कहाँ तक ठीक है?

* * *

कपूरथला राज्य का आदर्श कार्य

यह समाचार बड़ी प्रसन्नता से सुना जाएगा, कि कपूरथला राज्य ने दलितों की सुविधाओं की ओर एक नया क़दम बढ़ाया है। राज्य के दलितों ने अपनी कई न्यायोचित माँगों की स्वीकृति के लिए अपने प्रतिनिधि श्री० लब्बूराम कालिया को महाराज की सेवा में भेजा था। हर्ष की बात है कि महाराज ने उनकी निम्न-लिखित माँगें स्वीकार कर अपनी प्रजा-प्रियता का परिचय दिया है और इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। महाराज ने यह स्वीकार कर लिया है, कि (१) दलित जातियों से बेगार न लिया जाएगा, (२) राज्य के आम कुओं पर उन्हें बेरोक-टोक पानी भरने दिया जाएगा। (३) दलितों की शिक्षा के लिए इस साल पाँच हज़ार रुपए की सहायता दी जाएगी और अगले साल और भी बढ़ा दी जाएगी, (४) आम ज़मीनों से उन्हें अपने पशुओं के लिए चारा और खेतों के लिए खाद लेने दिया जाएगा, और (५) प्रत्येक ग्राम में दलितों के 'मरघट' आदि के लिए ज़मीनें दी जायँगी। साथ ही इस प्रश्न पर विचार भी हो रहा है, कि सार्वजनिक सङ्घों तथा पञ्चायतों में उनके प्रतिनिधि रक्खे जाएँ और हम आशा करते हैं कि इस प्रश्न की मीमांसा भी सन्तोषजनक रीति से हो जाएगी।

वास्तव में महाराज कपूरथला के ये कार्य आदर्श और अनुकरणीय हैं। परन्तु हम यह कहे बिना नहीं रह सकते, कि समस्त कपूरथला राज्य के दलित बालकों की शिक्षा के लिए केवल पाँच हज़ार रुपयों की सहायता 'ऊँट के मुँह में ज़ीरा' की तरह नगण्य है। इसलिए इस सम्बन्ध में रियासत को और भी उदारता से काम लेना चाहिए था। अधिक नहीं, महाराज ने विलायती कुत्तों और मोटरों के लिए जो धन ख़र्च किया है, उसकी चौथाई रक़म भी अगर दलितों की शिक्षा के लिए ख़र्च कर दें, तो बेचारों का बहुत-कुछ उपकार हो जाय। अस्तु।

क्या हम आशा करें कि इस सम्बन्ध में इस देश की अन्यान्य रियासतें भी कपूरथला का अनुकरण कर अपनी प्रजावत्सलता का परिचय देंगी?

* * *

क्या मुसलमान वास्तव में राष्ट्रीयता के विरोधी हैं ??

मुसलमानों की भीषण प्रतिज्ञा

'विदेशी कपड़े हाथ से भी न छुएँगे'

अमृतसर का एक समाचार है, कि राष्ट्रीय मुस्लिम नौजवान सङ्घ के तत्वावधान में, एक विराट सभा हुई। सय्यद अताउल्ला शाह बुख़ारी ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दू राजनीति, शिक्षा और संस्कृति में मुसलमानों से बहुत बढ़े-चढ़े हैं।

राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेने के लिए मुसलमानों को उत्साहित करते हुए आपने कहा, कि अङ्गरेज़ों ने मुसलमानों के हाथ से राज्य-सत्ता छीनी है, हिन्दुओं के हाथ से नहीं; इसलिए मुसलमानों को चाहिए, कि वे ही अङ्गरेज़ों से राज्य लौटाने का प्रयत्न करें।

इसके बाद आपने कहा, कि भावी शासन-विधान में विशेषाधिकार की आवाज़ लगाने के पहले, मुसलमानों को चाहिए कि वे कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य बन कर पहले कॉङ्ग्रेस-कमिटियों में तो ऊँचे-ऊँचे पद हासिल कर लें; फिर आपने अपने नन्हें बच्चे को गोद में उठा कर कहा कि यही मेरा इकलौता बच्चा है। यदि यह आज़ादी की लड़ाई में लड़ता हुआ गोली का शिकार बने तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगा। जब आपने विदेशी वस्त्र के बहिष्कार को अपील की तो मुसलमानों ने कलमा पढ़ कर शपथ खाई, कि भविष्य में वह विदेशी कपड़े हाथ से भी न छुएँगे।

मुसलमान जनता की मनोवृत्ति किस ओर है ?

स्थानीय 'लीडर' के एक सम्वाददाता महोदय लखनऊ से २२वीं अप्रैल को ख़बर देते हैं, कि राष्ट्रवादिता से खार खाने वाले कुछ मुसलमानों ने एक सभा कर, राष्ट्रीय मुस्लिम परिषद् की खिल्ली उड़ाने की चेष्टा की। उनकी सभा में ३००-४०० से अधिक मुसलमान उपस्थित नहीं थे। मौ० हसरत मोहानी इसके सभापति बनाए गए थे। वे इसी कार्य के लिए कानपूर से बुलाए गए थे। कुछ राष्ट्रवादी मुसलमान नेता भी वहाँ का अभिनय देखने के शौक से वहाँ आ बैठे थे।

कहा जाता है कि उपस्थित मुस्लिम जनता ने राष्ट्रीयता के विरोधी, नेता बनने वाले मुसलमानों का भाषण सुनने से इन्कार कर दिया। तब सभापति महोदय ने मौलाना सबक़तुल्ला से व्याख्यान देने की प्रार्थना की। मौलाना साहब ने राष्ट्रीय मुस्लिम कॉन्फ्रेन्स में पास किए हुए प्रस्तावों तथा संयुक्त निर्वाचन के सम्बन्ध की बातें कह कर उपस्थित जनता को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। इसके बाद सभापति ने अराष्ट्रीयतावादी मुस्लिम दल के सेक्रेटरी मि० ज़कीर अली को प्रस्ताव उपस्थित करने के लिए कहा; किन्तु जनता ने सेक्रेटरी साहब की बातों को सुनने तक से इन्कार कर दिया। चारों ओर गड़बड़ी मच गई और सभा भङ्ग हो गई।

"मैं धर्म का पक्का मुसलमान, किन्तु जाति का पक्का हिन्दुस्तानी हूँ"

अमृतसर का २१वीं अप्रैल का समाचार है, कि शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी की तरफ़ से वहाँ एक सभा की गई। डॉ० किचलू ने अपने भाषण में साम्प्रदायिकता की निन्दा करते हुए कहा कि मैं धर्म का पक्का मुसलमान हूँ, पर जाति का पक्का हिन्दुस्तानी हूँ। धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। जो लोग राष्ट्रीयता के बहाने साम्प्रदायिकता का प्रचार करते हैं, उनका कार्य निन्दनीय है।

"मुसलमान मिथ्या धर्म के बन्धन को तोड़ डालें"

१९वीं अप्रैल को पञ्चगाड़ा (हबड़ा) में होने वाली अखिल बङ्ग मुस्लिम एसोसिएशन की एक मीटिङ्ग में भाषण देते हुए कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस चैन्सेलर श्री० हसन सुहरावर्दी ने कहा—"किसी भी ग़ैर-हिन्दू को, यदि वह आदर के योग्य है, हिन्दू अनादर की दृष्टि से नहीं देखते। इस सिलसिले में मैं यह कह देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, कि लेजिस्लेटिव कौन्सिल तथा विश्वविद्यालय के चुनाव में उन्होंने कई बार मेरी सहायता की है।"

कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस चैन्सेलर श्री० हसन सुहरावर्दी

सभापति ने कहा, कि हिन्दुओं को उच्च स्थान और शिक्षा-सम्बन्धी सफलताएँ लूट और दङ्गा करने से नहीं प्राप्त हुई हैं, बल्कि यह सरस्वती देवी की अनवरत आराधना का फल है। आपने आगे कहा कि यह अपार दुख की बात है, कि मुसलमानों में उत्साह और त्याग, साहस और शिक्षा-प्रेम की बहुत कमी है। मुसलमान ही भारत की उन्नति में बाधा-स्वरूप बने हुए हैं। मुसलमानों को चाहिए कि वे मिथ्या धर्म के बन्धन को तोड़डालें और शिक्षा-प्रचार के लिए अन्य सम्प्रदायों से मिल कर काम करें।

लखनऊ की मुस्लिम परिषद के लिए सन्देश

"टुकड़ों के लिए लड़ना घृणास्पद है"

लखनऊ के राष्ट्रवादी मुस्लिम सम्मेलन के अवसर पर सभापति सर अली इमाम के नाम बाहर से अनेक सज्जनों और संस्थाओं ने अपनी-अपनी शुभाभिलाषाओं के सन्देश भेजे थे। उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं :—

मि० ग़ुलाम मुहम्मद मुहाउद्दीन, बाटला—"संयुक्त निर्वाचन ही एक मात्र औषध है। सफलता चाहता हूँ।"

सिन्ध के मुसलमान—"हम सिन्ध के मुसलमान सम्मेलन की सफलता चाहते हैं, और उसके प्रयत्नों का समर्थन करते हैं। मौलाना शौकतअली की चुनौती सम्मेलन स्वीकार कर ले।"

राजा नवाबअली—"मेरा विश्वास है, कि राष्ट्रवादी मुस्लिम सम्मेलन पृथक निर्वाचन प्रथा के कफ़न में आख़िरी कील ठोंक देगा और अपनी राष्ट्रीय एकता का स्पष्ट प्रमाण उपस्थित कर देगा।"

'जिन्ना की शर्तों से मुझे घृणा है'

एक मुस्लिम महिला के उद्गार

श्रीमती आयशा अहमद ने लखनऊ की मुस्लिम कॉन्फ्रेन्स को अपना सन्देशा देते हुए कहा है :—

"भारतीय मुसलमान, भारतीय जाति का ही एक भाग हैं। वे साम्प्रदायिकता को सहन नहीं कर सकते। वे अपनी योग्यता के बल पर कार्यक्षेत्र में स्थान प्राप्त करेंगे। एक सच्ची मुसलमान महिला की हैसियत से मैं उन खूसटों से तङ्ग आ गई हूँ, जो साम्प्रदायिकता के नाम पर वर्तमान और भावी युवकों के हृदयों में विष उगल रहे हैं। मुझे इस बात का अभिमान है कि उस भावी जाति की जननियों में से एक मैं भी हूँ, जिसे अपने साथियों से किसी प्रकार के अन्याय की आशङ्का नहीं है और जिसे विश्वास है, कि वह अपनी योग्यता के बल पर गौरव प्राप्त करेगी। मुझे जिन्ना की अथवा और किसी की भी शर्तों से घृणा है। मैं अपने बच्चों को कदापि इनका समर्थन करना नहीं सिखाऊँगी। मौलाना शौकतअली जब छाती फुला कर गर्व के साथ कहते हैं, कि मुसलमानों ने ८५० वर्षों तक भारत में राज्य किया है, उस समय मुझे अपार दुख होता है।

मैं अपने बच्चों में विशद भावनाएँ भर कर उन्हें सच्चा मनुष्य बनाना चाहती हूँ। उन्हें 'संरक्षणों' का ग़ुलाम नहीं बनाना चाहती। मैं चाहती हूँ, कि वे या तो अपनी योग्यता से कुछ प्राप्त करें, नहीं तो उनका नाम संसार से मिट जाय। मुझे विश्वास है कि अनेक माताएँ मेरी ही तरह सोचती होंगी।

सबों के दिल में यह बात बैठ गई थी कि मुसलमानों का यह कलङ्क, कि वे भारत की स्वतन्त्रता के मार्ग के रोड़े हो रहे हैं—चाहे जैसे हो, धो डालना चाहिए। कॉङ्ग्रेस का साथ देने के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास किया गया है, उसके लिए युवक-समाज ही बधाई का पात्र है। वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति का यह विचार था, कि भारत के आगामी स्वातन्त्र्य युद्ध में मुसलमानों का त्याग ही भारत के शासन-विधान में उनका स्थान निश्चित कर देगा।

मुसलमानों का त्याग ही उनके अधिकारों को निश्चित कर देगा

लखनऊ की मुस्लिम परिषद् के सम्बन्ध में एक प्रेस-प्रतिनिधि के पूछने पर, स्थानीय सय्यद हैदर मेहदी, एडवोकेट ने कहा है, कि यह परिषद् राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता का एक सच्चा नमूना है। आपने कहा, कि परिषद् का प्रत्येक व्यक्ति सम्प्रदायवाद को चुनौती देने के लिए तैयार था। युवक-समाज तो समझौते के लिए संरक्षणों की भी आवश्यकता नहीं समझता था। विषय-निर्वाचिनी समिति की बहसों से यह साफ़ विदित होता था, कि हिन्दुओं तथा अन्य मुसलमानों से समझौता करने की उसकी वास्तविक इच्छा है।

* * *

मि० शिबली इब्राहीम बरहमपुर—"संयुक्त निर्वाचन और बालिग़-मताधिकार मुस्लिम जनता के मौलिक अधिकार हैं, बिना इनके स्वराज्य असम्भव और व्यर्थ है।"

मि० मीर शुकरुल्ला, जलगाँव (सी० पी०)—"टुकड़ों के लिए लड़ना घृणास्पद है। महात्मा जी को आत्म-समर्पण कर दो। उनके हाथों में मुस्लिम अधिकार सुरक्षित हैं।"

मि० जमाल हुसैन, आशियाना, नेवरा—"मुसलमान संयुक्त निर्वाचन चाहते हैं। देश की इच्छा है, कि साम्प्रदायिक-मुसलमानों का तीव्र विरोध किया जाय।"

भ्रम
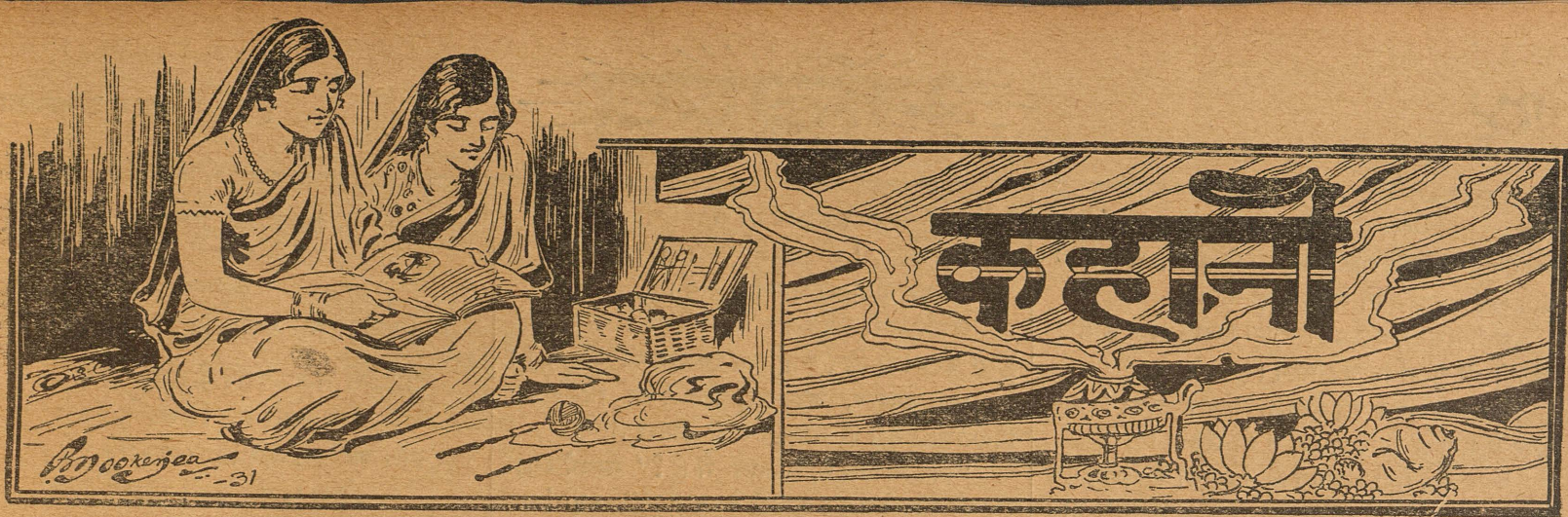
[श्री॰ पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र']

त पुरानी है, बहुत पुरानी।

मनुष्य कुछ-कुछ सयाना हो चला था। माता मनुष्यता की छाती पर अपने छोटे-छोटे सुकुमार अङ्गों को उचक-उचक कर चाव और चपलता से पुटक लेने ; और उसकी पय-गङ्गा में विस्मय-विमुग्ध भाव से पुलक-पुलक कर ग़ोते लगा लेने के बाद—अभी-अभी—वह माता-मही के विशाल वक्ष-स्थल पर, ठुमुक-ठुमुक गति से, उतरा था।

उसके नेत्र किनारेदार थे, नवनीतोज्ज्वल, कमल-दलायत। जब वह आश्चर्य-अवाक् होकर आकाश-अनभ्र पर दृष्टि डालता, तो उन आँखों का अनोखा क्षीर-समुद्र, नव-नील-नीर-समुद्र-सा लहरीला दिखाई पड़ता।

मालूम नहीं आश्चर्य से, अवशता, अज्ञान से या किससे, उसकी आँखों में, आँसुओं का ज्वार उमड़ आता।

आकाश के नीलाञ्चल में जैसे वह अपना कोई "पुराना परिचय" ढूँढ़ता ; पर कुछ निश्चित न कर पाता कि भ्रम से खेल रहा था या सत्य से।

वह, अक्सर लम्बी-लम्बी साँसे खींच कर दार्शनिकों की तरह गम्भीर भाव बनाता, हवा को सूँघता, जैसे कुत्ता किसी पूर्व-परिचित वस्तु को एकाएक सामने पाकर सूँघे। पर कुछ ठीक-ठीक समझ न पाता। हँसने लगता—मन्द, अमन्द, किलकिल, कलकल! शायद, अपनी मूर्खता पर।

आकाश को ताक कर, हवा को सूँघ कर भी जब उसकी ज्ञानेच्छा पूर्ण न होती, तो प्रायः मेदिनी के स-रज-अञ्चल में वह लोटपोट हो जाता! ख़लास हुए नशैल की तरह। और छोटी तथा लाल जीभ निकाल कर वसुन्धरा की विभूति का स्वाद लेने लगता। वह मुस्कराता, मानो—"अब पहचाना!" मगर तुरन्त ही पुनः गम्भीर होते नज़र आता—चौंक कर धूलि-धूसरित मुख एक ओर फेर कर देखता—"ओ...अ...अ...अ ...अ, माँ—मम्मा!"

मनुष्य की "मम्मा" अक्सर उसे इस विभूति-विलास के लिए दण्ड देती।

और मनुष्य हँसता।

मम्मा रोती, कहती—इस अभागे को विभूति ही में रस मिलता है—हे भगवान!

* * *

"हे भगवान!" मनुष्य ने पहले-पहल सुना। अब वह काफ़ी सयाना हो चुका था।

"माँ!" उसने पूछा—"हे भगवान का अर्थ? यह किसका नाम है?"

"सर्व-शक्तिमान, सहस्र-पादाक्षि शिरोरुबाहु परमात्मा ही का नाम भगवान है बच्चे! वही हमारे कर्ता, धर्ता, हर्ता हैं।"

"झूठ!" उगते हुए मनुष्य ने माता मनुष्यता के अर्थ का विरोध किया—"बाज़ार वाले कहते थे—भगवान मेरा नाम है।"

"हा-हा-हा-हा!" करुणामयी जननी बालक की मूर्खता पर मनोहर-मोह से हँस पड़ी। आगे बढ़ कर उसने मनुष्य को गोद में भर लिया, चूमने लगी—"बेटा! बाज़ार वाले ऐसे ही अर्थ का अनर्थ किया करते हैं।"

"तो मेरा नाम भगवान नहीं है?"

"नाम भर है ; वह भी उसकी याद ताज़ी रखने के लिए। मगर, सत्यतः वह समुद्र है—तू एक बिन्दु। तू आत्मा है, वह परमात्मा।"

माँ की बातों से मनुष्य का सन्तोष नहीं हुआ। बाज़ार वालों ने उसे मज़े में समझा दिया था कि भगवान वही है।

"...वे कहते थे—विद्वानों ने शास्त्रों का निरीक्षण करने के बाद मुझे 'भगवान' विघोषित किया था। और विद्वान लोग गुणानुसार ही तो नाम रखते होंगे? तू मुझे जानती है अम्माँ! भगवान तो मैं ही हूँ।"

"नहीं बेटे! तू भगवान का प्रसाद है, दास है, उसके दयासागर की एक प्रेम-पुलकित लहर है।"

"नहीं, मैं भगवान हूँ, मैं भगवान हूँ।" कह कर मनुष्य आँगन में लोटने लगा। छैला कर रोने लगा कि माँ उसे भगवान मान ही ले।

माँ भी पिघल गई। उसने सोचा—ठीक ही तो कहता है, घट-घट-व्यापी राम।

मनुष्य को पुनः गोद में उठा कर माँ ने देखा, उसकी आँखों में आँसू भरा था! "अच्छा-अच्छा!" वह सजल होकर उसको शान्त करने लगी—"रो मत लाल! मैं तो हँसी करती थी। बाज़ार वाले सच कहते थे। तू ही भगवान है। मेरा भगवान!"

माँ की आँखों से, मौलसिरी के फूल से धवल दो अश्रु-बिन्दु, भगवान के छोटे-छोटे चरणों पर गिर कर तल्लीन हो गए।

* * *

शक्तिवान होने पर बाज़ार वालों ने देखा, वह मनुष्य असाधारण शक्तिमान था।

माँ मनुष्यता के अन्य बच्चे जहाँ भी उस मनुष्य को पाते, दीप-पतङ्ग-सी हालत कर देते। सभी उस पर मुग्ध होकर उसके चारों ओर मँडराने लगते।

"बृहस्पति की तरह तू विद्वान है।"

"इन्द्र की तरह बलवान। ओ हो! क्या आजानु-प्रलम्बित बाहु है।"

"तू चाहे तो आकाश चक्कर में आ जाय।"

"तू कोप कर काल-करवाल-क्रीड़ा करने लगे, तो यह ज़मीन पीपल के पत्ते सी हिल उठे!"

"तू ही पुरुषोत्तम है, हमारा नेता है।"

मनुष्य गर्व-गम्भीर भाव से दूसरे मनुष्यों की ओर देखता रहा। आँखों ही आँखों वह अपने भक्तों से बोल रहा था—सच पहचाना तुमने, मैं 'वही' हूँ।

उसकी नज़र अपनी भुजाओं पर गई, जो भरपूर गठीली और साधारण प्राणियों की छाती सी चौड़ी थीं।

और उसकी छाती कितनी चौड़ी थी? पहाड़ इतनी!

* * *

बाज़ार वालों ने बतलाया...

इस द्वीप के आगे सिंह-द्वीप है, उसके आगे प्रवाल-द्वीप, जिसके शासक यक्ष लोग हैं। फिर मणि-द्वीप, जहाँ नागों का राज्य है। मणि-द्वीप के आगे वह महान स्वर्ण-द्वीप है, जिसे लोग "सुवर्ण-द्वीप" कहते हैं। क्योंकि वहाँ के सभी प्राणी मुलायम सोने के बने हैं। उस द्वीप की प्रत्येक चीज़ ख़ालिस सोने की होती है। नदियों में सोना बहता है, उद्यानों में सोना फूलता है। सोने के वृक्षों पर सोनचिरैयाँ चारों ओर चहकती सुनी जाती हैं। वहाँ के लोग सोना खाते हैं, सोना जोतते-बोते हैं और सदैव स्वर्ण-सज्जित वातावरण में विचरण करते हैं!!

बाज़ार वालों ने उकसाया...

हे भगवान! हम साधारण प्राणी सुवर्ण-द्वीप तक नहीं जा सकते। दस-बीस मनचलों ने कभी उधर जाने की चेष्टा भी की, तो शायद वे सिंह-द्वीप ही तक—सिंहों के जलपान की तरह—पहुँच सके।

और तू तो भगवान है। तेरे लिए सुवर्ण-द्वीप तक जाना, वहाँ से देवी स्वर्णमयी को स्वदेश ले आना—घर-घर सोना फैला देना, साधारण सी बात है।

बाज़ार वालों ने समझाया......

भगवन्! सिंह, प्रवाल, मणि आदि द्वीपों पर विजय कर जो कोई सुवर्ण-द्वीप में जाता है; वहाँ वाले उसकी बड़ी ख़ातिर करते हैं। उसके आगमनोपलक्ष में, सात दिनों तक, सुवर्ण-द्वीप के सात महानागर सोने की होली खेलते हैं और सात रातों तक सोने की दीवाली देदीप्यमान होती है। जब विजयी स्वदेश लौटता है; तो वहाँ वाले एक कुमारी कन्या उसे उपहार में देते हैं, और "स्वर्ण-स्रष्टा" की पदवी। और स्वर्ण-कुमारी जिस द्वीप में पधारती हैं, उस द्वीप के अहोभाग्य!

आँखों में आँसू भर कर, भक्ति-विभोर-भावेन, बेचारे बाज़ार वाले मनुष्य के चरणों पर गिर पड़े......

"हे भगवान! तू ही हमें सोना दे सकता है। तू ही स्वर्णकुमारी को स्वदेश में ला सकता है।"

भगवान के चेहरे से पता चलता था, कि आशा-वादिता का रङ्ग गुलाबी होता है, हल्का।

* * *

सिंह-द्वीप—पराजित। भगवान नृसिंह थे! सिंहों ने दुम दबा कर उनकी गम्भीर स्तुति की और उपहार में उन्हें एक रथ दिया, जो हाथी-दाँत का बना और गज-मुक्ताओं से मण्डित था। उस रथ में सात महान सिंह जुते थे। सिंह-रथ ही पर सुवर्ण-द्वीप में प्रवेश किया जा सकता था।

भगवान के नेतृत्व में चलने वाले मनुष्यों ने सिंह-सम्राट से सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कराया कि भविष्य में

सिंह लोग मनुष्यों के प्रति सदैव अहिंसात्मक रहेंगे। सन्धि-पत्र की एक प्रति, मनुष्यों के नेता, भगवान के पीताम्बर के एक कोने में बाँध दी गई।

आगे यक्ष थे, पक्ष-धर। भगवान को विपक्ष बनाना उन्होंने भी मुनासिब न समझा।

फिर सन्धि-पत्र की तैयारी, फिर हस्ताक्षर! अब ऊपर से मनुष्यों पर आक्रमण न हो सकेगा।

यक्षपति ने नेता भगवान के सिंह-रथ के लिए एक सारथी दिया। वह प्रवाल की तरह लाल-लाल था। नाम था, "रक्तासुर"।

अन्त में, साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए, यक्षपति ने भगवान को बतलाया—यह रक्तासुर ही सुवर्ण-द्वीप तक आपका सिंह-रथ ले जा सकता है। क्योंकि यह अमर है। युद्ध में गर्दन कटते ही पुनः अरि-मर्दन हो उठता है।

पराजित नागों ने सिंहरथ-सञ्चालन के लिए भगवान को सर्प विनिर्मित एक चाबुक दिया। साथ ही, सन्धि-पत्र में प्रतिज्ञा की, कि जब नेता भगवान स्वर्णकुमारी के साथ, सविजय लौटेंगे, तब नागों द्वारा सिंहरथ में सहस्र-सहस्र मणियाँ मण्डित की जायेंगी।

अब नेता भगवान के पीताम्बर के तीनों छोरों में एक-एक गाँठ थी और प्रत्येक गाँठ में एक सन्धि-पत्र।

भगवान प्रसन्न-वदन थे। इस आशा से कि शीघ्र ही, पीताम्बर के चौथे कोने में भी सोने का सन्धि-पत्र बँधेगा!!

* * *

सुवर्ण-द्वीप में कोलाहल। स्थान-स्थान पर सुवर्ण-सुन्दरियाँ रसीले राग गा-गाकर अनोखे स्वदेशीय नाच नाच रही थीं।

सातों महानगर दूल्हों से सजे थे। चारों ओर एक ही चर्चा चल रही थी—कोई आने वाला है। बहुत दिनों बाद ऐसा अवसर आया है, जब स्वर्णकुमारी किसी योग्य अधिकारी के साथ, अन्य संसारियों को सोने का श्रवण-सुखद-सम्वाद सुनाने जायँगी। इससे हमारे प्यारे सुवर्ण-द्वीप की महिमा बढ़ेगी।

सुवर्ण-द्वीप के प्रथम फाटक पर ही भगवान नामधारी नेता के मनुष्य अनुगामी रोक दिए गए। सिंहरथ, रक्तासुर सारथी और भगवान, द्वीप की राजधानी कनक-कोट में जिस समय प्रविष्ट हुए, उसी समय, पूरब में, अरुण-रथ पर अंशुमाली आए। सहस्र-सहस्र पारदर्शी कर-जाल पसार कर, दिवाकर ने सुवर्ण द्वीप से सूर्य-लोक तक सोने का समूचा समुद्र लहरा दिया; जिसके ऊपर सोने का एक महान वितान तना था—आकाश।

सातों सिंह, हाथी-दाँत का उज्ज्वल-रथ, रथ की गज-मणियाँ, भगवान नेता और उनका सन्धि-पत्र-ग्रथित पीताम्बर; सुवर्ण-द्वीप में घुसते ही, सोने के समुद्र में तिरोहित हो गए।

सुवर्ण-द्वीप वालों ने केवल रक्तासुर को देखा, जिसके हाथ में नाग-पाश था। उन्होंने उसी को विश्व-विजयी माना। भगवान पर उनकी नज़र भी न गई।

तीन दिनों तक बराबर कनक-कोट के सुवर्ण नागरिक रक्तासुर को नमस्कार करते रहे। नौबत यहाँ तक आई कि चौथे दिन उसी को स्वर्णकुमारी भी मिलने को हुई। अब भगवान घबराए।

"रक्तासुर!"

"जी!"

"सुवर्ण-द्वीप के प्राणी तो मेरी ओर देखते भी नहीं, क्यों? विश्व-विजयी हूँ मैं और पूजा हो रही है तुम्हारी?"

"इस द्वीप में केवल रक्त रङ्ग पहचाना जाता है।"

"और भगवान?"

"उहुँक? रक्त रङ्ग के बाद विजयी की पूजा होती है। यहाँ वाले भगवान को बिलकुल नहीं जानते।"

"वह—सामने—सोने की सेना कैसी?"

"स्वर्णकुमारी आ रही हैं, वरमाला डालने!"

भगवान पीताम्बर सँभालने लगे।

स्वर्ण-कुमारी कनक-कोट के प्राणियों के साथ स्वर्ण-पुष्पों की माला लिए आईं, वह रक्तासुर की ओर बढ़ीं।

व्यग्र भगवान, झपट कर, बीच में आ रहे—"यह विजय-माल मेरी है, भगवान मैं हूँ कुमारी!"

"कौन बोलता है, भगवान मैं हूँ?" साश्चर्य रक्तासुर की ओर देख कर कुमारी ने पूछा—"विजयी! यह वरमाला तुम्हारी है। हम लोग न तो इस बातुल भगवान को देख रहे हैं और न स्वर्ण-माल ही उस मायावी के लिए है।"

कुमारी ने रक्तासुर की ओर हाथ बढ़ाया। रक्तासुर ने मस्तक झुकाया, स्वर्ण-सुन्दरियाँ जय-जयकार करने लगीं। माला रक्तासुर के गले में चमकने लगी। मानो प्रवाल-पर्वत पर बिजली खेलती हो।

इसी समय मनुष्यों के नेता भगवान ने, कराल-करवाल के एक ही प्रहार से, रक्तासुर का मस्तक छिन्न कर दिया।

स्वर्ण-सुन्दरियाँ चिल्ला उठीं। कुमारी तो बेहोश होते-होते बचीं। मगर दूसरे ही क्षण उन्होंने देखा—विजयी रक्तासुर ज्यों का त्यों खड़ा मुस्करा रहा था।

अब भगवान और रक्तासुर जम कर लड़ने लगे। अनेक बार महाबाहु मानव भगवान के प्रहारों से रक्तासुर के मस्तक कट-कट कर गिरे, पर वह रहा अमर ही।

आख़िर, सुवर्ण-द्वीप में, स्वर्ण-कुमारी की लालसा में, रक्तासुर के हाथों, नेता भगवान को वैकुण्ठ-लाभ हुआ!

और, मरते दम तक, माता मनुष्यता का वह बीहड़ बालक अपने को भगवान ही समझता रहा।

* * *

उसी दिन से आज तक, स्वर्ण-कुमारी रक्तासुर की अङ्क-शायिनी हैं। रक्तासुर ही "स्वर्ण-स्रष्टा" माना जाता है। यक्ष, नाग, किन्नर, नर आदि किसी लोक को जब सोने की चाह होती है, तब रक्तासुर के नाम की माला फेरनी पड़ती है। भक्तों की पुकार सुनते ही उदार रक्तासुर उनकी ओर स्वर्ण-कुमारी के साथ दौड़ता है। लोग अपने-अपने कलेजे का ख़ून सहर्ष चढ़ा कर, प्रसाद-रूपेण उससे सोना पाते हैं और आनन्द-विभोर होकर "रक्तासुर की जय-जय" चिल्लाते हैं।

और उस भगवान का कोई नाम भी नहीं लेता, जो माता मनुष्यता के एक बङ्कड-बालक के मात्रे में उदित होकर चार दिन चमक-दमक कर, उसी में डूब गया।

* * *

साफ़ बात

[कविवर श्री० रामचरित जी उपाध्याय]

टीप देते गला उसी के हम,
नोन खाते रहे जिसा के हम।
बात करते न हम बिना मतलब,
हो न सकते कभी किसी के हम॥

हाथ हमसे मिला लिया जिसने,
आत्म-बध क्या नहीं किया उसने?
जाल में क्या बिना फँसे कहिए—
एक पैसा हमें दिया किसने?

एक पल में परस्व हरते हम,
पाप के बाप से न डरते हम।
छीन करके ग़रीब की रोटी—
पेट भरते, न डूब मरते हम॥

दीजिए ध्यान हम जहाँ पहुँचे,
दैन्य-दुख भी तुरत वहाँ पहुँचे।
हम न पहुँचें कहाँ, अरे यारो?
वैश्य बन जब कि हम यहाँ पहुँचे॥

हम नगर से तनिक हटे रहते,
कौल पर हम नहीं डटे रहते।
बाप रहता कहीं, कहीं भाई,
साथ रहते न हम, बँटे रहते॥

विश्व कोसे हमें नहीं डर है,
हम जहाँ पर रहें वहीं घर है।
क्यों बने हम रहें न अलबेले?
धाक जब जम गई मही पर है॥

बात चिकनी बड़ी हमारी है,
नीति कितनी कड़ी हमारी है?
खोपड़ी पर पड़ी नहीं किसकी—
लोहबन्दी छड़ी हमारी है?

पदवियों को झड़ी लगाते हम,
दृष्टि सब पर गड़ी लगाते हम।
हर घड़ी थी घड़ी जहाँ कर में,
झट वहीं हथकड़ी लगाते हम॥

साफ़-सुथरा शरीर दिल गन्दा—
है हमारा बना जगत बन्दा।
हम बनाते उसे तुरत राजा,
जो कि देता हमें नगद चन्दा॥

हम हमेशा बने-ठने रहते,
हम सभी से सदा तने रहते।
जो हमारा ख़ुशामदी टट्टू,
हम उसी पर गनी बने रहते॥

बल निबल को सदा दिखाते हम,
छल निछल को सदा सिखाते हम।
स्पष्टवक्ता बना जहाँ कोई,
जेल का फ़र्ज़ उसे चिखाते हम॥

स्वच्छ हम-सा न हंस है कोई,
उच्च हम सा न वंश है कोई।
बोल-बाला यहाँ हमारा है,
आज हम-सा न कंस है कोई॥

* *
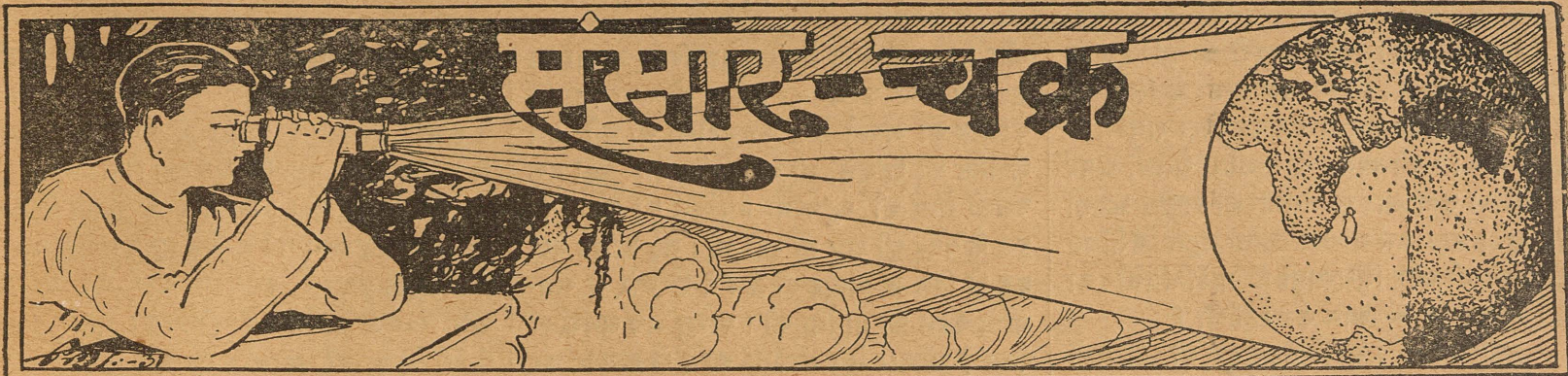
जर्मनी का प्रजातन्त्र

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर]

[शेषांश]

हुत-कुछ खींचातानी के बाद राष्ट्रीय सभा (National Assembly) का चुनाव हुआ। इस सभा की बैठक वीमर नगर में हुई। कैबिनेट ने अपने सारे अधिकार इसे सौंप दिए। एसेम्बली ने श्री० एबर्ट को जर्मन प्रजातन्त्र का प्रेसिडेण्ट चुना और हर स्वीडमैन को मन्त्रि-मण्डल बनाने का कार्य सौंपा। नवीन मन्त्रि-मण्डल का निर्माण हुआ और इसमें बहुमत, साम्यवादी आदि तीन पार्टी के प्रतिनिधि शामिल हुए।

यद्यपि स्पार्टेकस का होआ कुचल दिया गया था, पर उसमें अभी साँस बाक़ी थी। वेस्टफेलिया के खानों का प्रबन्ध साम्यवादी ढङ्ग पर कराने के लिए लोगों ने आम हड़ताल कर दी। राइनलैण्ड, सैक्सोनी और बवेरिया में हड़तालों की धूम मच गई। सरकार परेशान हो गई और सेना में रङ्गरूटों और अफ़सरों को भरती करने लगी। परन्तु वह जहाँ-जहाँ आन्दोलन को दबाती थी, वहाँ-वहाँ उसके नए-नए शत्रु पैदा हो जाते थे।

५ मार्च को बर्लिन में व्यापारिक सङ्घों ने मज़दूरों के आर्थिक सङ्कटों के विरोध में आम हड़ताल करवाई। बर्लिन की सड़कों पर जनता की बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा थी। पुलिस जनता को हटाना चाहती थी, पर जनता टस से मस नहीं हो रही थी। पुलिस ने गोली चलाई। इसके जवाब में जनता ने भी गोली चलाई। वालण्टियरों ने मल्लाहों की सहायता से लिचटनबर्ग को अपने अधिकार में कर लिया। सरकार को मौक़ा मिल गया। उसने स्पार्टकस-दल के कुछ लोगों पर कुछ पुलिस वालों को मार डालने का अभियोग लगाया। सरकारी सेना ने आकर आन्दोलन को बड़ी बेरहमी से कुचल डाला। आन्दोलन को दबाने में सरकार को इतनी बेरहमी से काम लेना पड़ा था कि तमाम मज़दूर सरकार के विरोधी बन गए। म्यूनिच में इंजनर का क़त्ल हो जाने के बाद साम्यवादियों ने मज़दूरों के प्रजातन्त्र की घोषणा की। कम्यूनिस्टों ने इस प्रजातन्त्र को नष्ट कर, तलवार से शासन करना शुरू किया और कम्यूनिस्ट शासन का अन्त तभी हुआ, जब ख़ून की नदियाँ बह गईं। प्रतिदिन मेगडनबर्ग, ड्रेसडन, लीपज़िग और ब्रान्सविक में ख़ून-ख़राबी होने लगी।

इस क्रान्ति-युग का अन्त तभी हुआ, जब विधान-विधायिनी सभा की बैठक प्रारम्भ हो गई। इस सभा की बैठक वीमर नगर में हुई थी। इसीलिए जो विधान बन कर तैयार हुआ, उसे 'वीमर-विधान' कहते हैं। इस विधान का जर्मन प्रजातन्त्र के इतिहास में विशेष स्थान है। यह विधान निर्धारित है, प्रेसिडेण्ट, चान्सलर और पार्लमेण्ट के अधिकारों के समझौते पर। यद्यपि प्रत्येक हालत में पार्लमेण्ट को प्रधान रक्खा गया है। प्रजातन्त्र का सिरमौर एक प्रेसिडेण्ट होता है, जिसे इस विधान द्वारा बड़े-बड़े अधिकार दिए गए हैं। प्रेसिडेण्ट को पार्लमेण्ट के साथ सदा सहयोग करना पड़ता है। यदि पार्लमेण्ट उससे सहमत न हो, तो वह उसे भङ्ग कर सकता है। पर एक पार्लमेण्ट के भङ्ग हो जाने के बाद यदि दूसरी पार्लमेण्ट भी उससे सहमत न हो तो वह उसे भङ्ग नहीं कर सकता। विशेष अवसरों के लिए प्रेसिडेण्ट को निरङ्कुश अधिकार भी दिए गए हैं। प्रेसिडेण्ट चान्सलर को नियुक्त करता है और चान्सलर मन्त्रियों को। राजतन्त्र की नीति का सञ्चालन चान्सलर ही करता है और इसके लिए वही उत्तरदायी है, पार्लमेण्ट के प्रति। चान्सलर या उसका कोई मन्त्री ही कोई नया क़ानून पार्लमेण्ट के सामने रखता है। परन्तु एक स्वतन्त्र मेम्बर को भी यह अधिकार प्राप्त है। इस विधान ने पार्लमेण्ट को क़ानून-निर्माण में सब से ऊपर रक्खा है और आमतौर से जब तक पार्लमेण्ट सहमत न हो, कोई नया क़ानून नहीं बन सकता।

कैबिनेट का निर्माण एक विशेष ढङ्ग पर होता है। जब एक कैबिनेट का निर्माण होने को होता है, तो प्रेसिडेण्ट किसी पार्टी-लीडर को नहीं बुलाता, जैसा अन्य देशों में रीति है। वह चुनता है, एक ऐसे राजनीतिज्ञ को, जो अपने नेतृत्व में कई पार्टियों का सहयोग प्राप्त कर सकता है। ऐसा प्रत्येक पार्टी को उसकी शक्ति के अनुसार कैबिनेट में स्थान मिलता है। इसीलिए बहुधा योग्य पुरुष कैबिनेट के बाहर रह जाते हैं और बहुधा कैबिनेट कमज़ोर होता है।

वीमर-विधान ने जनता के प्रथम अधिकारों की घोषणा भी की है। प्रत्येक पुरुष क़ानून के सम्मुख बराबर है। स्त्री और पुरुषों के अधिकार तथा कर्त्तव्य समान हैं और प्रत्येक को पूर्ण स्वतन्त्रता है, बोलने लिखने तथा विचार करने की। बालकों की रक्षा तथा शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। वीमर-विधान ने प्रत्येक स्त्री और पुरुष को धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता दी है। सरकार की तरफ़ से शिक्षा का निरीक्षण होता है। निजी सम्पत्ति को भी विधान में स्थान दिया गया है। पर ऐसी सम्पत्ति का प्रयोग समाज के विपरीत न होना चाहिए। भूमि का बटवारा तथा प्रयोग का निरीक्षण सरकार करती है। वीमर-विधान ने मज़दूरों की रक्षा का कार्य रीच (Rich) को विशेष तौर से सौंपा है। अस्तु।

प्रजातन्त्रीय जर्मनी पर सिर मुड़ाते ही ओले पड़े। अभी वीमर-सभा का कार्य समाप्त भी नहीं हुआ था कि वर्सलीज़ की सन्धि (Treaty of Versailles) हो गई। इस सन्धि ने जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया। आज संसार में कोई भी ऐसा राजनीतिज्ञ न होगा, जो इस सन्धि का समर्थन करता हो। इस सन्धि ने आलसेस और लोरेन के प्रान्तों को जर्मनी से छीन लिया और जर्मनी पर भारी हर्जाना लाद दिया। यही नहीं, जर्मनी को निशस्त्र कर दिया गया और उसके उपनिवेश भी छीन लिए गए। संक्षेप में इस सन्धि द्वारा जर्मनी के पुराने शत्रुओं ने उसे राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में निकम्मा बना डालने में कोई बात उठा न रक्खी। यह सन्धि जर्मनी के लिए अपमानजनक थी।

जर्मनी की जनता समझती थी कि प्रजातन्त्रीय जर्मनी के साथ यूरोप के राष्ट्र अच्छा बर्ताव करेंगे और उससे पुराना बदला न लेंगे। परन्तु यह भूल निकली। यूरोप के राष्ट्र प्रजातन्त्र के साथ कोई भी रियायत करने को तैयार न थे। फ़्रान्स जर्मनी को अब भी अपना शत्रु ही समझ रहा था। जर्मनी की जनता अपने में प्रजातन्त्र क़ायम करने के लिए इसीलिए तैयार हो गई थी कि उसके साथ न्याय किया जावेगा। अब जर्मनी इस योग्य भी न रह गया था कि वह सन्धि का विरोध कर सकता। गृह-कलह ने उसे कमज़ोर कर दिया था।

'धोबी से न जीतें तो गदहा के कान उमेठें' की कहावत को चरितार्थ करते हुए जर्मनी की जनता सारा क्रोध प्रजातन्त्र पर उतारने लगी और प्रजातन्त्र को गालियाँ देने लगी। प्रजातन्त्र के विरोधी-दल को शक्ति संग्रह करने का सुअवसर मिला। प्रजातन्त्र को पुनः कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सन् १९२० की १०वीं जनवरी को सन्धि लागू हुई और अगले दो महीने प्रजातन्त्र के लिए बड़े दुखदायी साबित हुए। राइन प्रदेश शत्रुओं के हाथों में था। श्लेसवर्ग, डानज़िग, मेमल, अपर सिलेशिया तथा सार से जर्मनी का राष्ट्रीय झण्डा हट चुका था। जर्मनी की जनता बहुत उत्तेजित हो चुकी थी और मित्र-राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का स्थान-स्थान पर अपमान कर रही थी।

इसी जनवरी के महीने में मज़दूरों की कौन्सिलों की स्थापना करने के लिए सरकार ने एक बिल पेश किया। स्वतन्त्र साम्यवादियों ने इस बिल के विरोध में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया। सड़कों पर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई। सरकारी सेना ने भीड़ पर गोली चलाई। स्वतन्त्र साम्यवादियों ने आम हड़ताल की घोषणा की, पर उन्हें इस कार्य में जनता से समुचित सहायता न मिली। इसलिए आम हड़ताल करने की योजना वापस ले ली गई। रेलवे को रीच के अधिकार में लाने की योजना ने तथा ईर्ज़बरजर की टैक्स-स्कीम ने आग में घी छोड़ने का कार्य किया। १०वीं जनवरी को किसी ने अर्थ-सचिव पर गोली चला कर उसे घायल कर दिया।

प्रजातन्त्र के विरुद्ध जनता का रुख़ देख कर सेना के कुछ अफ़सरों ने सरकार को अपने अधिकार में ले लेना चाहा। १०वीं मार्च को लटविज़ ने प्रेज़िडेण्ट एबट के सामने सेना की माँगों को रक्खा। सेना की माँगें बहुत गरम थीं। लटविज़ इन माँगों से तत्कालीन सरकार को भयभीत करना चाहता था और चाहता था उसे इस्तीफ़ा देने के लिए मजबूर करना। परन्तु वह अपने कार्य में सफल नहीं हुआ। उपर्युक्त चाल में असफल होने के पश्चात् सेना के अफ़सरों ने एक नई तरकीब सोची।

१२वीं मार्च की बात है। बर्लिन के बाहर एक सेना खड़ी थी और तैयारी कर रही थी, बर्लिन पर धावा करने की। सरकार ने भी बर्लिन में अपनी सेना जमा की, परन्तु उसकी सेना आक्रमण-कारियों को रोकने के लिए तैयार नहीं थी। बल्कि वह तैयार थी, सरकारी आज्ञा की अवहेलना करने के लिए। जब कैबिनेट ने यह हालत देखी तो उसके होश उड़ गए। राजधानी की रक्षा करना एकदम असम्भव था, कैबिनेट को अपनी जान ख़तरे में दिखाई पड़ने लगी। सारी की सारी कैबिनेट बर्लिन छोड़ कर ड्रेसडन भाग गई। केवल एक मेम्बर—स्पीकर—बर्लिन की रक्षा के लिए वहाँ रह गया। सरकारी सेना ने बर्लिन ख़ाली कर दिया।

विद्रोहियों की सेना ने १३वीं तारीख़ को बर्लिन में प्रवेश किया। परन्तु उसे वहाँ सरकारी दल का कोई भी पुरुष न मिला। समझौते की कोई भी गुञ्जाइश न थी। सरकार ने समझौते के लिए बातचीत करने से साफ़ इन्कार कर दिया। कैप ने स्वयं अपने को चान्सलर नियुक्त कर दिया और कैप-कैबिनेट ने एसेम्बली भङ्ग कर दिया। परन्तु एसेम्बली के प्रेज़िडेण्ट फ़ेहरेनबैच ने उसकी बैठक स्टेटगार्ट नगर में बुलाई। कैप की कैबिनेट में एक भी प्रतिभाशाली नेता न था। किसी स्थान पर जनता ने इस कैबिनेट का समर्थन नहीं किया और न कैप-कैबिनेट ने ही प्रयत्न किया जनता का सहयोग प्राप्त करने का। कैप को तथा उसकी कैबिनेट को अपनी सेना का भरोसा था और इस कैबिनेट का शासन भी वहीं तक था, जहाँ तक उसकी सेना की पहुँच थी। बर्लिन की जनता ही इस कैबिनेट की शत्रु हो रही थी। यह हालत देख कर दो दिन के अन्दर ही कैप ने सरकार से समझौता करने की प्रार्थना की। परन्तु अब समझौता कैसा? सरकार ने समझौता करने से इन्कार कर दिया और कैप से हथियार रख देने को कहा। कैप एकदम घबड़ा गया था और अपनी जान बचाने के लिए बर्लिन छोड़ कर भाग गया। कैप के और साथियों ने भी एकदम घुटने टेक दिए। सरकार की विजय हुई और उसने विद्रोही सेना को कैम्प में लौट जाने की आज्ञा दी। विद्रोही सेना को आज्ञा पालन करनी पड़ी। जब सेना

मर रहे हैं लीडरी के वास्ते

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

है यह ले-देकर, इसी के वास्ते,
दिल मिला है, दिल्लगी के वास्ते!
डिगरियाँ कॉलेज से लेकर दर-बदर,
फिर रहे हैं, नौकरी के वास्ते!
क्यों किसी से दुश्मनी हम मोल लें,
चार दिन की ज़िन्दगी के वास्ते!
कह रहा है, यह हमारा तजरुबा,
कौन मरता है किसी के वास्ते!
करते हैं साहब के बङ्गले का तवाफ़[1],
कुछ नहीं, एक नौकरी के वास्ते!
अच्छे हो जाएँ किसी सूरत से जल्द,
यह दुआ है "सेठजी"[2] के वास्ते!
कर रहे हैं कोशिशें जी तोड़ कर,
शेख़ साहब मेम्बरी के वास्ते!
साहब आने भी न पाए थे मगर,
झुक गए हम बन्दगी के वास्ते!
शौक़ से अब ख़र्च कर देते हैं हम,
मालोज़र "टी-पार्टी" के वास्ते!
लीडरी "बिस्मिल" उन्हें मिलती नहीं,
मर रहे हैं लीडरी के वास्ते!

१—परिक्रमा, २—बाबू गणेशप्रसाद जी सेठ से मतलब है।

* * *

बर्लिन छोड़ रही थी, तब बर्लिन के नवयुवक प्रदर्शन कर रहे थे। सेना ने नौजवानों के झुण्ड पर गोलियाँ चलाईं और बहुतों को ज़मीन पर सुला दिया। बर्लिन के बाहर, रूर प्रान्त के ज़िलों में बोल्शेविक अपना उल्लू सीधा कर रहे थे। जैसे ही कैप ने बर्लिन पर दख़ल जमाया, वैसे ही बोल्शेविकों ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। इस बोल्शेविक विद्रोह का केन्द्र एसन नगर था। उन्होंने लाल गार्डों (Red Guards) को भरती किया और उनमें तमाम शस्त्र आदि बाँटे। कैप पर विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् सरकार ने बोल्शेविक विद्रोह की ओर अपना ध्यान दिया। सरकारी सेना और लाल गार्डों के बीच घमासान युद्ध हुआ और यद्यपि लाल गार्ड बड़ी बहादुरी से लड़े, पर अन्त में वे कुचल दिए गए। अप्रैल के मध्य तक बोल्शेविक विद्रोह का नाम-निशान तक मिट गया।

कैप-विद्रोह शान्त कर देने के पश्चात् कैबिनेट का सुधार किया गया। हरमैन मुलर नवीन चान्सलर नियुक्त हुआ। एसेम्बली भङ्ग कर दी गई और प्रथम प्रजातन्त्रीय रीचस्टैग का चुनाव हुआ। परन्तु मुलर की सरकार बहुत काल तक टिक न सकी। उस पर अविश्वास का प्रस्ताव आया, इसलिए उसे इस्तीफ़ा देना पड़ा। फ़ैहरेनबैच ने नई सरकार बनाई।

इस समय जर्मनी के सम्मुख हर्जाने (Reperations) का प्रश्न बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित कर रहा था। अभी तक बेचारे को पता ही न था कि उसे कितना हर्जाना देना होगा। तुर्रा तो यह था कि मित्र-राष्ट्र स्वयं भी कुछ नहीं जानते थे। रह-रह कर फ़्रान्स चीख़ उठता था और चाहता था कि यूरोप के नक़्शे से जर्मनी का नाम मिट जाय। इस हर्जाने के प्रश्न पर मित्र-राष्ट्रों की प्रतिदिन कॉन्फ़्रेन्सें हुआ करती थीं। जुलाई के महीने में स्पा में मित्र-राष्ट्रों ने अपनी माँगें जर्मनी को बतलाईं। सन्धि के पश्चात् यह प्रथम अवसर था कि मित्र-राष्ट्रों ने जर्मनी के मन्त्रियों से खुल्लम-खुल्ला बातचीत की थी। तीन महीने पश्चात् ब्रुसेल्स में विशेषज्ञों की फिर एक कॉन्फ़्रेन्स हुई और उसमें इस बात का प्रयत्न किया गया कि स्पा के सिद्धान्त कार्यान्वित किए जायँ। कई कॉन्फ़्रेन्सों के पश्चात् मित्र-राष्ट्रों ने अपनी माँगें निश्चित कीं। ११,३०,००,००,००० पौण्ड जर्मनी से हर्जाने के तौर पर तलब किए गए और उसे बतलाया गया कि वह किस तरह से इस रक़म को अदा करे। जर्मनी को निशस्त्र करने के लिए भी कई माँगें उसके सामने रक्खी गईं। जर्मनी की सेना में अधिक से अधिक १ लाख सिपाही रह सकते थे। क्रान्ति से बचने के लिए उसने जो नागरिक रक्षकों (Civil Guards) तथा पुलिस की भरती कर रक्खी थी, वह भी उसे भङ्ग कर देने की आज्ञा दी गई।

मित्र-राष्ट्रों ने यह माँगें जर्मनी के सामने अल्टीमेटम के रूप में रक्खा था। यह शर्त थी कि यदि जर्मनी ने इन माँगों को पूरा न किया तो मित्र-राष्ट्र उसकी भूमि पर अपना अधिकार जमा लेंगे और उसे लीग ऑफ़ नेशन्स से सर्वदा अलग रक्खा जावेगा।

मित्र-राष्ट्र अपनी बात पर कितने दृढ़ हैं, यह दिखलाने के लिए फ़्रान्स की सेना ने जर्मन राज्य में प्रवेश करना आरम्भ कर दिया। यह हालत देख कर जर्मनी की जनता क्रोध से पागल हो गई और कम्यूनिस्टों ने हाले में बलवा कर दिया। रूस के बोल्शेविक इस विद्रोह का सञ्चालन कर रहे थे और रुपए से इसको सहायता कर रहे थे। पर मज़दूरों ने बलवाइयों का साथ नहीं दिया, इसलिए बहुत शीघ्र इस विद्रोह का अन्त हो गया।

जर्मनी की सरकार ख़ामोश होकर बैठ गई और बहुत काल तक अल्टीमेटम के उत्तर में हाँ या नहीं, कुछ भी नहीं कहा। मित्र-राष्ट्रों ने पुनः

आख़िरी अल्टीमेटम दिया। हर्जाने की रक़म ६,६०,००,००,००० पौण्ड कर दी गई। जर्मनी से कहा गया कि या तो वह १२ मार्च तक इन माँगों को स्वीकार करे, नहीं तो फ्रान्स की सेना 'रूर' प्रान्त पर फ़ौरन अधिकार कर लेगी। फलतः एक सप्ताह के अन्दर ही जर्मनी ने मित्र-राष्ट्रों की उपर्युक्त सभी माँगें स्वीकार कर लीं।

यद्यपि वर्थ कैबिनेट ने मित्र-राष्ट्रों के अल्टीमेटम को स्वीकार कर लिया, पर जर्मनी की कठिनाइयों का अभी अन्त नहीं हुआ। हर्जाने की समस्या एक बड़ी जटिल समस्या साबित हुई। मैं यहाँ इस प्रश्न पर अधिक नहीं लिखूँगा। इस पर तो एक मोटी किताब तैयार हो सकती है। पाठकों को इतना ही समझ लेना चाहिए कि हर्जाने का प्रश्न जर्मनी के जीवन-मरण का प्रश्न था। फ्रान्स जर्मनी में गृह-कलह फैलाना चाहता था। जर्मनी के सिक्के—मार्क—की दर प्रति क्षण तेज़ी से गिर रही थी और जर्मनी के दिवालिया हो जाने का डर था। स्थिति हाथ से बाहर होते देख कर वर्थ कैबिनेट ने इस्तीफ़ा दे दिया और डॉक्टर वर्थ मैदान से हट गए। परन्तु जर्मनी में उस समय दूसरा कोई भी ऐसा माँ का लाल ऐसा न था, जो कैबिनेट बना कर इस प्रश्न को हल करने का साहस करता। अतएव डॉक्टर वर्थ ने पुनः हिम्मत करके ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली। परन्तु डॉक्टर वर्थ भी स्थिति को सुधार न सके और जर्मनी को दिवालिया होने में केवल कुछ सप्ताह की देर थी। इस भयानक स्थिति को देख कर मित्र-राष्ट्रों के कान खड़े हुए। और उन्होंने स्थिति को सुधारने के लिए केनेस (Cannes) में अपनी एक कॉन्फ्रेन्स बुलाई। इस कॉन्फ्रेन्स का अभिप्राय था, एक आर्थिक कॉङ्ग्रेस की तैयारी करना, जो हर्जाने की समस्या को हल कर सके। इस कॉन्फ्रेन्स का श्रेय इङ्गलैण्ड के श्री० लॉयड जॉर्ज को था। यह कॉङ्ग्रेस जिनोआ में बुलाई गई थी।

परन्तु फ्रान्स का दिल अभी साफ़ नहीं हुआ था। वह इन बातों को जर्मनी की मक्कारी समझ रहा था। हाँ, ब्रयाण्ड जर्मनी के साथ समझौता करने को तैयार था। पर फ्रान्स की जनता जर्मनी की शत्रु हो रही थी और किसी प्रकार की रियायत करने को तैयार नहीं थी। ब्रयाण्ड की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया और उसकी जगह पोयङ्कोर ने ले ली। पोयङ्कोर वह शख़्स था, जो जर्मनी के साथ सन्धि की शर्तों में एक शब्द की भी रियायत करना घोर पाप समझता था। ऐसी हालत में जिनोआ-कॉन्फ्रेन्स को कहाँ तक सफलता मिल सकती थी, यह पाठक स्वयं ही विचार लें। अस्तु।

जिनोआ कॉन्फ्रेन्स में संसार के सभी बड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। रूस ने भी इस कॉन्फ्रेन्स में भाग लिया था। अगर पोयङ्कोर चाहते तो यूरोप की आर्थिक हालत बहुत-कुछ सुधर सकती थी। पर उनका रुख़ बहुत कड़ा था। उनका यूरोप की हालत से कुछ भी सम्बन्ध न था। उनका लक्ष्य था जर्मनी को पैरों तले दबाए रखना। इस जिनोआ कॉन्फ्रेन्स का केवल एक ही अच्छा परिणाम हुआ और वह था जर्मनी और रूस की सन्धि। रूस ने जर्मनी से एक व्यापारिक सन्धि की।

पोयङ्कोर साहब जर्मनी के पीछे हाथ धोकर पड़े थे और वे जर्मनी को फूटी आँखों भी नहीं देख सकते थे। जर्मनी कुछ मोहलत चाहता था। पर पोयङ्कोर एक दिन की भी मोहलत नहीं देना चाहता था और चाहता था जर्मनी के रूर प्रान्त पर फ्रान्स का अधिकार। सन् १९२३ के आरम्भ में फ्रान्स की सेना रूर पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गई। सम्भवतः फ्रान्स दुबल जर्मनी से युद्ध करना चाहता था और चाहता था

उसे पीस डालना। इस समय जर्मनी में कनो-कैबिनेट शासन कर रहा था। यह उसके लिए कठिन परीक्षा का काल था। जर्मनी का प्रजातन्त्र कसौटी पर चढ़ा था।

जर्मनी फ्रान्स से लोहा लेने को तैयार नहीं था। उसको तो अपनी जान के लाले पड़े थे। जर्मनी ने सविनय अवज्ञा (Passive Resistance) का शस्त्र अपने हाथ में लिया और रूर प्रान्त में फ्रान्स से असहयोग करना आरम्भ कर दिया। जर्मनी के सविनय अवज्ञा का मुक़ाबला फ्रान्स ने कठोरता और घोर दमन से किया। रूर प्रान्त में त्राहि-त्राहि मच गई। जर्मनी का उद्योग-धन्धा बिलकुल नष्ट हो रहा था। मार्क्स की दर प्रतिदिन गिर रही थी। एक समय तो मार्क्स की दर गिरते-गिरते १,०००,०००,०००,०००,०००,०००,००० हो गयी थी। इसका असर यूरोप के आर्थिक क्षेत्र पर बहुत ही बुरा पड़ रहा था। जर्मनी समझता था कि यदि यूरोपियन राष्ट्र यूरोप को बचाना चाहते हैं तो उन्हें रूर के प्रश्न पर दख़ल देना पड़ेगा। वह धैर्य और सब्र से उस समय की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु यह सब होते हुए भी फ्रान्स के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी और पोयङ्कोर ने साफ़-साफ़ कह दिया कि जब तक जर्मनी पूर्णतया घुटने न टेक देगा, तब तक फ्रान्स की सेना रूर प्रान्त से नहीं हटाई जावेगी।

मित्र राष्ट्रों में भी आपस में हर्जाने के प्रश्न पर एकता न थी। परिस्थिति प्रतिदिन गम्भीर होती देख कर इङ्गलैण्ड ने तय किया कि हर्जाने का प्रश्न राजनीतिज्ञों के हाथों से लेकर अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों को सौंप दिया जावे। अमेरिका की पहिले ही से यह राय थी। सन् १९२३ के मध्य में इङ्गलैण्ड ने अपनी राय मित्र-राष्ट्रों के सम्मुख रक्खी। जर्मनी इस प्रस्ताव से तुरन्त सहमत हो गया। संसार का रुख़ देख कर अन्त में फ्रान्स को भी सहमत होना पड़ा। डाज़ कमिटी (Dawes Committee) बैठी और जाँच का कार्य आरम्भ कर दिया।

डाज़-कमिटी ने हर्जाने के प्रश्न को केवल आर्थिक तौर से हल करने का प्रयत्न किया। राजनीति का बिलकुल समावेश नहीं किया गया। कमिटी ने केवल एक समस्या अपने सामने रक्खी और वह यह थी कि वह कितना हर्जाना दे और किस-किस तरकीब से दे। कमिटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर मित्र-राष्ट्रों तथा जर्मनी के सामने रख दी। रिपोर्ट जर्मनी के पक्ष में थी। बहुत कुछ गृह-कलह और दलबन्दियों के पश्चात् जर्मनी ने डाज़ स्कीम को स्वीकार कर लिया और उसे कार्यान्वित करना आरम्भ कर दिया।

सन् १९१९ से एबर्ट जर्मनी का प्रेज़िडेण्ट था। उसने अपना काम बड़ी योग्यता से किया था। अकस्मात सन् १९२५ की २८वीं फ़रवरी को उसकी मृत्यु हो गई। अतः उसके उत्तराधिकारी की आवश्यकता हुई। प्रेज़िडेण्ट के चुनाव के लिए दो दफ़े वोट पड़े। दुबारा चुनाव में हिण्डनबर्ग जर्मनी का प्रेज़िडेण्ट चुन लिया गया। यह हिण्डनबर्ग कौन था? वही कैसर का दाहिना हाथ और गत महायुद्ध वाला जर्मनी का सब से बड़ा योद्धा। उसका तमाम जीवन देश की सेवा में ही बीता था और यदि बुढ़ापे में भी देश को उसकी आवश्यकता थी तो वह पीछे हटने वाला शख़्स न था। पहिले वह राजतन्त्र का दाहिना हाथ था, अब वह प्रजातन्त्र का सिरमौर बना। हिण्डनबर्ग का प्रेज़िडेण्ट बनना स्वीकार करने के मानी थे प्रजातन्त्र की महान विजय। राजतन्त्र के पोषकों ने प्रजातन्त्र की महत्ता तथा सफलता स्वीकार करके उसके आगे घुटने टेक दिए। मैं उपर्युक्त घटना को जर्मनी के प्रजातन्त्र की सब से बड़ी विजय मानता हूँ।

* * *

भविष्य से—

[श्री० लक्ष्मीधर जी औदीच्य]

बता कर जिसे प्रेम-उपहार,
दिया था तुमने विषम-वियोग;
प्रेयसी बना 'व्यथा' को हाय!
शान्ति का कर डाला उपभोग।

माँगता है अब यह जीवन—
करुण-करुणा में उलझा मन।

बता दे सजनि, छिपाऊँ कहाँ—
हृदय में बिखरा उनका प्यार?
चढ़ाऊँ किस वेदी पर आज,
पसीजे प्राणों की यह धार?

लुटाऊँ किस पथ पर प्रतिकूल!
'साधना' के मुरझाए फूल?

सुना है, है 'भविष्य' के पास,
हमारे जीवन का मधुमास,
'मिलन' की घड़ियाँ हैं उसमें,
शान्ति का उनमें पूर्ण-प्रकाश।

सखे! कर सुखमय यह जीवन,
खिला दे 'आशा' का उपवन।

* * *

"यह पिकेटिङ्ग का असर है, जो दिवाला निकल गया"

'केवल न्यायोचित व्यापार' बनाए रखने की भिक्षा

भारत और ब्रिटेन का व्यापार-सम्बन्ध :: हाउस ऑफ़ कॉमन्स में बहस

बहिष्कार आन्दोलन का गम्भीर प्रभाव :: मिलों के स्वामी ध्यान दें

["एक कॉङ्ग्रेसमैन"]

[इस लेख में सुलेखक ने बहिष्कार को कॉङ्ग्रेस का सब से अधिक ज़बरदस्त, और प्रभावशाली अस्त्र प्रमाणित किया है। विराम-सन्धि के बाद भी लङ्काशायर की हालत वैसी की वैसी ही बनी रहने पर उस दिन हाउस ऑफ़ कॉमन्स में एक बहस हुई थी, जिसमें वक्ताओं ने 'असन्तुष्ट भारत की अपेक्षा सन्तुष्ट भारत' की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए कहा था कि हम भारत का अर्थ-शोषण करना नहीं चाहते, बल्कि हम भारत के साथ केवल 'न्यायोचित व्यापार' सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं। लेखक ने सिद्ध किया है, कि लङ्काशायर की इस व्यापार-भिक्षा का रहस्य बहिष्कार ही है। इसके पहले कभी 'न्यायोचित व्यापार' की बात नहीं सुनाई पड़ी थी।

—सं० 'भविष्य']

बहिष्कार, कॉङ्ग्रेस का सब से अधिक प्रभावशाली, प्रबल और सद्यः फलप्रद प्रोग्राम रहा है। इसे हम कॉङ्ग्रेस-कार्य का निषेधात्मक और 'स्वदेशी' को आदेशात्मक पहलू कह सकते हैं। भारत के इस निषेधात्मक बहिष्कार-अस्त्र का प्रभाव व्यापार की मन्दी के मारे हुए लङ्काशायर पर अत्यन्त विकट और आश्चर्यजनक पड़ा। इसके एक ही झोंके ने उसकी कमर तोड़ दी। बेकारों की बाढ़ आ गई और मिलों में ताले पड़ गए। अब से कुछ समय पहले तक भारतीय नीति के निर्धारण में लङ्काशायर का बड़ा ही कुटिल और प्रभावशाली हाथ रहा करता था। इसी लङ्काशायर के लाभ के लिए ब्रिटेन ने भारत के बुनाई के उद्योग को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। भारत के पास इस अन्याय के प्रतिकार का कोई उपाय न था। परिस्थिति उत्तरोत्तर निराशाजनक होती गई। परन्तु इस बहिष्कार ने क्षण भर में ही लङ्काशायर के होश ठिकाने कर दिए। लङ्काशायर के साथ ही साथ मज़दूर-सरकार को भी घुटने टेक देने पड़े। अब तक ब्रिटेन कोरी प्रतिज्ञाएँ करता रहा, परन्तु इस राष्ट्र-व्यापी बहिष्कार ने असम्भव को भी सम्भव कर दिखलाया। निस्सन्देह बहिष्कार का प्रोग्राम विराम-सन्धि के अनुसार स्थगित कर दिया गया है, परन्तु समझदार लोग शब्दों पर नहीं लड़ा करते। 'स्वदेशी' अब भी मौजूद है। मिल-मालिकों से सहयोग करके देश ने अब से अधिक विशाल पैमाने पर स्वदेशी की जड़ जमाने का उपाय कर लिया है। यह ठीक है कि पिकेटिङ्ग का उग्र रूप हट जाने से कुछ देशद्रोही व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं के ऑर्डर भेज दिए हैं, फिर भी लङ्काशायर की यह आशा कि अब फिर से भारतीय ऑर्डरों का वही पुराना दरिया बहने लगेगा, निरी झूठी प्रमाणित हुई है। उसकी दशा अब भी वैसे ही बनी हुई है, जैसी कि बहिष्कार के समय थी। कॉङ्ग्रेस-प्रोग्राम में बहिष्कार से सब से अधिक लाभकारी परिणाम प्रकट हुआ है। हमारा कर्तव्य है कि हम इसे पूर्णता पर पहुँचा दें।

अभी उस दिन हाउस ऑफ़ कॉमन्स में 'लङ्काशायर के उद्योग-धन्धों की भारत का राजनीतिक परिस्थिति से क्या सम्बन्ध है?' इस पर विचार हुआ था। इस सम्बन्ध की बहस अत्यन्त रोचक हुई थी। उससे ब्रिटेन की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है, और मज़दूर-सरकार ने कॉङ्ग्रेस के साथ जिस उद्देश्य से समझौता किया है, उस पर भी काफी प्रकाश पड़ता है। अब तक जब-जब भारत ने किसी राजनीतिक अधिकार की माँग पेश की, तब-तब जवाब में ब्रिटेन ने अपना फ़ौलादी ढाँचा भारत के सामने कर दिया। ऐसा मालूम होता था, मानो ब्रिटिश राजनीति में पशु-शक्ति के सिवाय किसी दूसरी बात के लिए जगह ही नहीं है। लेकिन भारत के बहिष्कार-अस्त्र ने उन्हें कुछ सुनना और अनुभव करना सिखला दिया है।

खद्दर और स्वदेशी मिलों के कपड़े इस देश में मौजूद थे, परन्तु उनका अस्तित्व बनाए रखने तथा उनके प्रचार के लिए भारतीयों के संरक्षण की आवश्यकता थी। देश की सब से शक्तिशाली और व्यापक संस्था कॉङ्ग्रेस ने बहिष्कार के रूप में उन पर अपने संरक्षण का हाथ फैला दिया था। अब तक हिन्दुस्तानी मिलें कॉङ्ग्रेस की तरफ़ सन्देह की दृष्टि से देखा करती थीं, परन्तु अब, यद्यपि वह सन्देह बिल्कुल प्रेम में नहीं परिवर्तित हो गया है, वे अच्छी तरह समझने लगी हैं कि बिना कॉङ्ग्रेस की सहायता के उनके सम्पूर्ण प्रयत्न निष्फल हो सकते हैं, चाहे उनकी सहायता के लिए स्वयं सरकार ही क्यों न उपाय रचा करे। अब तक सभी बातों में सहायता के लिए मिल वाले नौकरशाही की ही तरफ़ झुका करते थे, परन्तु अब उन्हें मालूम हो गया है कि नौकरशाही पर सदैव आशा करना विश्वसनीय नहीं है। उद्धार का सब से उत्तम मार्ग कॉङ्ग्रेस से समझौता करके रहना ही है। हिन्दुस्तान से जो विदेशी कपड़े बाहर रवाना कर दिए गए हैं, उससे कॉङ्ग्रेस और व्यापारियों, दोनों का ही लाभ है। यद्यपि पूँजीवाद को तुरन्त ही कॉङ्ग्रेस-मनोवृत्ति में परिवर्तित कर लेना अभी कठिन है, फिर भी, दोनों का हित कुछ न कुछ समान होने से, आशा है, कि भविष्य में स्वराज्य की परिस्थिति उत्पन्न हो जाने पर वे उसके साथ अपना सामञ्जस्य स्थापित कर लेंगे।

खद्दर

[श्री० रामकुमार जी जैन]

निर्बल की आजीविका, है स्वदेश का प्राण।
खद्दर में झङ्कारती, है स्वातन्त्र्य सु-तान॥

❀

यह शान्तितत्त्व परिपूरक,
इन्दु समान शुभ्र शोभाधारी।
दृढ़ता का कवच, शक्ति का मन्त्र,
भव्य स्वातन्त्र्य छत्रधारी॥

❀

वैरागो का बाना, नाना—
वीरों का ग़ज़ब निशाना है।
शुभ धैर्य, शौर्य, औदार्य दया—
शम-दम का यही ठिकाना है॥

* * *

अब भी पिछड़े हुए हैं

यह खेद की बात है कि बम्बई के मिल-मालिक अब तक कॉङ्ग्रेस की बात को पूरा-पूरा नहीं पालन कर सके। अब भी वे अमेरिकन रूई तथा करोड़ों रुपए मूल्य के मिल के दूसरे विदेशी सामान मँगाते चले जा रहे हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए हैं, उन्होंने विदेश से नक़ली रेशम का सूत मँगाना त्याग दिया है। यदि इसी प्रकार वे वस्त्र बनाने में सब सामान, जहाँ तक हो सके, स्वदेशी ही काम में लाएँ तो उनका और देश का और भी अधिक कल्याण हो। आवश्यकता है कि कॉङ्ग्रेस इस प्रश्न को अपने हाथ में अधिक गम्भीरता से ले ले। जैसा है वैसा ही बना रहने देना ठीक न होगा, इस प्रश्न को तुरन्त हाथ में ले लेना आवश्यक है। यह ठीक है कि गाँधी जी मिल के कपड़ों की अपेक्षा खद्दर पर ही अधिक ज़ोर देते हैं, फिर भी स्वदेशी की सफलता के लिए कुछ समय तक देशी मिल के कपड़ों का भी प्रबन्ध करना ही पड़ेगा।

लेकिन जैसा कि पहले कहा जा चुका है, हाउस ऑफ़ कॉमन्स की बहस बड़ी रोचक तथा ब्रिटिश मनोवृत्ति की परिचायक हुई है। सन्धि हो जाने पर भी बहिष्कार जारी है, इस बात पर क्रोध प्रकट करते हुए लॉर्ड स्टेनली ने कहा :—

"लङ्काशायर इस बात को मानता है कि असन्तुष्ट भारत की अपेक्षा सन्तुष्ट भारत लङ्काशायर का कहीं अधिक अच्छा ग्राहक होगा। इसीलिए वह आज भारत की आकांक्षाओं के प्रति अधिक सहानुभूति रखता है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि जब हम मैत्री के लिए आगे बढ़ें, जैसा कि इधर महीने भर से हम बढ़ रहे हैं,

तो दूसरे पक्षवालों का भी कर्तव्य है कि वे आगे बढ़ कर हमसे मिलें। यह नहीं कि मैत्री का उत्तर वे घृणा से दें।"

इसके अतिरिक्त लॉर्ड स्टेनली ने और कुछ ऊट-पटाँग बातें भी कही थीं, मगर यहाँ पर मैं उनका उल्लेख करना नहीं चाहता। उनके उत्तर में मेजर ग्राहम पोल ने जो कुछ कहा था, उसी को हम नीचे देते हैं:—

"बहिष्कार, हमारी हिन्दुस्तान के प्रति जो नीति रही है, उसी का परिणाम है। भूतकाल में हमने हिन्दुस्तान के हितों को अपने हितों के आगे सदैव दबाया है। लङ्काशायर ने जो कल बोया था उसी की आज वह फ़सल काट रहा है। हिन्दुस्तान अपनी बहिष्कार-नीति द्वारा उन्हीं बातों का प्रयोग कर रहा है, जो कि हम उसे सिखला चुके हैं।"

बात यह है कि लङ्काशायर के पैर का जूता एक पैर से दूसरे में बदल गया है, जिसे वह काट रहा है। लङ्काशायर बहिष्कार का सामना करने में असमर्थ है। लेकिन अब चाहे जो हो जाय, लङ्काशायर और भारत का पुराना व्यापार किसी तरह भी पनप नहीं सकता। फिर भी इस देश के साथ समझौता कर लेना उसके लिए अच्छा ही होगा। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों-त्यों देश में स्वदेशी की लहर बढ़ती जा रही है, और त्यों ही त्यों अर्थ-शोषण भी रुकता जायगा। एक दिन वह शीघ्र आने वाला है, जब भारत एक गज़ भी कपड़ा बाहर से न मँगाएगा, चाहे वह मैनचेस्टर हो या ब्रेडफ़र्ड हो।

वह 'भयानक अस्त्र'

कमाण्डर केनवर्दी तक ने, जो कि अपने को भारत का मित्र कहते हैं और जब तब इस देश पर रक्षा का हाथ भी फेर दिया करते हैं, कहा है कि "बहिष्कार के भयानक अस्त्र का प्रयोग बराबर बढ़ता ही जा रहा है, आशा है, वह रोक दिया जायगा। हिन्दुस्तान के इस बहिष्कार में केवल ग़रीबों ने ही भाग नहीं लिया, बड़े-बड़े रक्त-शोषक पूँजीपतियों तक ने इसकी सहायता की है।"

यहाँ के पूँजीपतियों को उपरोक्त शब्दों द्वारा जो विशेषण प्रदान किया गया है उससे, आशा है कि बम्बई के मिल-मालिकों की आँखें खुल जायँगी। अब तक ये मिल-मालिक लङ्काशायर से गाँठ बाँध कर अपनी स्थिति-सुधार की बात सोचा करते थे। एक मिल-मालिक तो यहाँ तक बढ़ गया था कि वह, लङ्काशायर और हिन्दुस्तान के मिल-मालिकों का गुट बना कर हिन्दुस्तान के साथ जापान के बढ़ते व्यापार की प्रतिद्वन्दिता करने की सोच रहा था। लेकिन अब इनमें से बहुतों के होश ठिकाने आ गए हैं और वे अपनी भलाई के लिए भारत-मन्त्री और लङ्काशायर से बातचीत न करके, सीधे कॉङ्ग्रेस से ही बातचीत करना अधिक श्रेयस्कर समझने लग गए हैं।

हाउस ऑफ़ कॉमन्स के वक्ताओं में एक-एक कर सबने भारत पर यह बात जँचाने की कोशिश की है कि लङ्काशायर का उद्देश्य भारत के साथ केवल "न्यायोचित व्यापार" बनाए रखना है। कच्चा माल विलायत भेज कर कपड़ा बनवा लेने और उसे कुछ मुनाफ़ा देकर फिर से ख़रीद लेने में भारत का ही हित है। उनका कहना है कि वे लङ्काशायर या इङ्गलैण्ड के किसी अन्य भाग के लिए भारत का अर्थ-शोषण नहीं करना चाहते, वे केवल "न्यायोचित व्यापार" के इच्छुक हैं, भारत के योग्य हो जाने पर उसे अपनी आर्थिक समस्या के नियन्त्रण का अधिकार मिल ही जायगा। लिबरल दल के नेता, सर एच० सेमुएल के कथन में कुछ अधिक बुद्धिमानी प्रकट होती है। आपने कहा:—

"यदि इस देश वाले विदेशी माल को इस देश में न आने देना उचित और अपने देश के लिए समृद्धि-वर्धक समझते हैं, तो वे कैसे कह सकते हैं कि वही उपाय भारत के लिए उचित और हितकर न होगा? वास्तव में ऐसा कहने वाले अपने तर्क को, अपने आप ही काटते हैं।"

उपरोक्त उद्धरणों से इङ्गलैण्ड पर पड़े हुए भारतीय बहिष्कार के प्रभाव का पता चलता है। ब्रिटेन वालों पर लाठी-काण्डों या अन्य अनेक प्रकार से सताए जाने वाले नर-नारी-समूहों का प्रभाव नहीं पड़ा, प्रभाव पड़ा है उनकी ख़ाली होती हुई जेबों का। परिणाम-स्वरूप आज एक आर्त स्वर सुनाई दे रहा है कि हम और कुछ नहीं, केवल 'न्यायोचित व्यापार' चाहते हैं।

एकमात्र औषधि

हिन्दुस्तान को अब इस बात पर हर्गिज़ विश्वास नहीं हो सकता कि कच्चा माल बाहर भेज कर वहाँ से बना-बनाया माल ख़रीद लेना उसके लिए लाभदायक हो सकता है। अब वह अपना बुनाई-कताई का उद्योग इस देश से नष्ट नहीं होने देगा, वह अपने कुशल कारीगरों को रोज़ी-हीन करके उनकी दशा डावाँडोल नहीं बना देना चाहता। चर्ख़े व कर्घे का उद्योग, लङ्काशायर से प्रतियोगिता रहने पर भी, स्थिर रह सका, यह हमारी सफलता है। फिर भी जनसाधारण की भीषण ग़रीबी के कारण उसे अपने पूर्ण-विकास में उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी कि मिलनी चाहिए थी। एक तो कर्घे बिल्कुल पुराने ढङ्ग के हैं, दूसरे मूलधन की कमी के कारण लोग अपना माल बाज़ारों में फैला नहीं पाते। मिल के उद्योग के साथ ही साथ, कर्घे-चर्ख़े का भी उद्योग देश के कोने-कोने में फैला देना आवश्यक है। कम से कम प्रत्येक ज़िले में कताई-बुनाई का एक-एक केन्द्र स्थापित हो जाना चाहिए। पूँजीवाद, जिससे मज़दूर-समुदाय डर रहा है, उसकी एकमात्र औषधि खद्दर और चर्ख़ा है।

विदेशी कपड़ों के बॉयकॉट का बोझ

"यह पिकेटिङ्ग का असर है, जो दिवाला निकल गया!!"

जङ्गल-सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा कॉङ्ग्रेस के अन्य प्रोग्रामों ने निस्सन्देह जनसाधारण को कठिन से कठिन यातना तथा उत्तेजना के अवसरों पर भी विनयन में रहना सिखलाया है, परन्तु हमारे मालिकों पर उसके द्वारा वह असर नहीं पैदा हुआ, जो कि हम चाहते थे। असर विदेशी बहिष्कार का पड़ा है। विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के लिए हमें कुछ अधिक मूल्य नहीं देना पड़ा। केवल थोड़े से त्याग का मूल्य चुकाना पड़ा है, जिसके लिए, आशा है, प्रत्येक व्यक्ति अपना कुछ न कुछ भाग समर्पण करने के लिए तैयार रहेगा। अर्थशास्त्र का हमारे देश के साथ क्या सम्बन्ध है और उसका क्या महत्व है, इस बात को संसार ने आज पहले-पहल जाना है। राष्ट्रों की एक-दूसरे को कुचल देने वाली लड़ाइयों का मूल उद्देश्य सदैव अर्थ-लोभ ही रहा है। सभी लड़ाइयों का उद्देश्य कमज़ोर राष्ट्रों का अर्थ-शोषण रहता है। हिन्दुस्तान को पश्चिमीय ढङ्ग की पूँजीवाद वाली लड़ाई से सावधान रहना चाहिए।

भावी संग्राम के लिए तैयार रहो

स्वयं गाँधी जी तक का ख़याल है कि क्षणिक सन्धि और गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स राष्ट्र के लिए निराशा-जनक साबित हो सकती हैं। कोई भी कॉङ्ग्रेस का नेता यह नहीं समझता कि इङ्गलैण्ड या भारत में बातें कर लेने से उद्देश्य की प्राप्ति हो जायगी। हमें अपनी पहले की घटनाओं से शिक्षा ग्रहण करना चाहिए और भविष्य के लिए अपनी तैयारी करनी चाहिए। अब भी समय है कि हम अपने आपको पूर्ण रूप से तैयार कर लें। हमें अपने भावी संग्राम का नक़्शा अभी से बना लेना चाहिए और अत्यन्त भयानक से भयानक प्रकार के दमन के लिए तैयार हो जाना चाहिए। परन्तु आगामी अहिंसा संग्राम में भी सब से ज़बरदस्त अस्त्र यही बहिष्कार ही रहेगा। शायद तब तक लङ्काशायर अपनी परिस्थिति को स्वाभाविक समझ कर उसे भी क़बूल कर लेगा। लङ्काशायर अपने किए का फल पा रहा है। उसने अपनी हृदयहीन अर्थ-शोषण नीति के द्वारा भारतीय विद्रोह का क्षेत्र तैयार कर दिया है। भारतीय आत्मा मर नहीं गई, महात्मा गाँधी के अनुपम नेतृत्व में आज भारत जाग्रत हो गया। आज दिन जितने अनुयायी महात्मा गाँधी के हैं, उतने किसी नेता के नहीं हैं। उनका प्रभाव सारे संसार में फैलता जा रहा है। युद्धों द्वारा त्रस्त संसार महात्मा जी की शिक्षाओं में शान्ति पा रहा है। संसार के दलित और मज़दूर-वर्ग के लिए उन्होंने एक नई ही आशा का सन्देश दिया है। उनके नेतृत्व में अवश्य ही भारत अपनी सब से बड़ी मनोभिलाषा की पूर्ति कर लेगा। राष्ट्र की अभिलाषाएँ चाहे अभी ही, या सब की सब न पूर्ण हों, परन्तु उसने वह मार्ग पा लिया है, जिस पर चल कर वह अपने उद्देश्य तक पहुँच जायगा। भारतीयों को अब आगे ही आगे बढ़े चलना चाहिए। रुकना बाधक है। पीछे लौटना भयानक है।

* * *

यूरोपीय संगठन और शस्त्र-निरोध के थोथे प्रयत्न

[डॉ० मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी-लिट्]

यूरोपीय महासमर के दोनों पक्षों का दावा था, कि युद्ध का ध्येय स्वातन्त्र्य स्थापन और निरङ्कुश शासन का अन्त करना है। राष्ट्रपति विल्सन ने मित्र-शक्तियों को इस स्पष्ट शर्त पर सहायता दी थी कि युद्ध की सफल समाप्ति पर पर-तन्त्र राष्ट्रों को स्वतन्त्र कर दिया जावे और भविष्य में इस प्रकार के सर्व-संहारक समर की आवृत्ति को रोकने का कोई व्यावहारिक प्रयत्न किया जावे। इन्हीं शर्तों की पूर्ति के लिए पश्चिम एशिया तथा अफ़्रिका के अनेक देश अस्थायी रक्षित राज्य बना कर भिन्न-भिन्न यूरोपीय राष्ट्रों के सुपुर्द किए गए और भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निबटारा करने के लिए तथा सार्वभौम कल्याण-साधन के लिए, एक राष्ट्र-सङ्घ (लीग ऑफ़ नेशन्स) की रचना की गई। गत बारह वर्षों में इस सङ्घ ने क्या कार्य किया, इसका उल्लेख किसी अगले लेख में किया जावेगा। यहाँ हम गत कुछ मास में इस सङ्घ ने जो कार्य किया है, उससे पाठकों को परिचित करना चाहते हैं।

आरम्भ में राष्ट्र सङ्घ का ध्येय था, विश्वहित-चिन्तन, परन्तु पिछले एक वर्ष से इसमें अन्तर आने लगा है। अब राष्ट्र-सङ्घ वास्तव में शनैः-शनैः श्वेत राष्ट्रों का सङ्घ बनता जाता है। अमेरिका पहिले से ही कुछ मतभेद के कारण इस सङ्घ में सम्मिलित नहीं हुआ था। अतः यों कहना चाहिए कि राष्ट्र-सङ्घ यूरोप का सङ्घ बनता जाता है। युद्ध के पश्चात् जब एशिया में अपूर्व जागृति होने लगी, रूम स्वतन्त्र हो गया और पश्चिमी एशिया के मुसलिम देशों में यूरोपीय आधिपत्य का विरोध होने लगा, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली, चीन में प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और भारत ने स्वराज्य प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय कर लिया, तदुपरान्त समस्त एशिया में यूरोप की आर्थिक साम्राज्य-नीति का विरोध होने लगा तब राष्ट्र-सङ्घ विश्व-हित के ध्येय से पीछे हटने लगा। यों तो पहिले भी राष्ट्र-सङ्घ ने पद-दलित जातियों के उद्धार के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया था। यत्न करता भी कौन? राष्ट्र-सङ्घ के सदस्यों में प्रभावशाली भी वे ही राष्ट्र हैं जो स्वयं साम्राज्यवादी हैं। तो भी स्वास्थ्य, मादक द्रव्य-निषेध, व्यापार-नीति आदि में सङ्घ ने कुछ कार्य अवश्य किया था। परन्तु अन्त में एशिया की जागृति को देख कर यूरोप को चिन्ता होने लगी। इसलिए जब उसने देखा कि उसकी आर्थिक नीति, राजनैतिक चालें और सैनिक दाँव-पेंच एशिया में नहीं चल सकते तो उसको अपने सङ्गठन की सूझी। काउडेनहोवे कालर्गी नामक एक यूरोपीय विद्वान ने यूरोपीय सङ्गठन पर एक सुन्दर ग्रन्थ की रचना की, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सैनिक कारणों की मार्मिक मीमांसा करते हुए यूरोपीय सङ्गठन का आदर्श पाठकों के सामने रक्खा। धीरे-धीरे इस विचार का यूरोपीय देशों में प्रचार होने लगा और राजनीतिज्ञ ऐसे सङ्गठन की आवश्यकता अनुभव करने लगे।

एरिस्टाइड ब्रियण्ड नामक फ़्रेञ्च राजनीतिज्ञ ने राष्ट्र-सङ्घ की दसवीं एसेम्बली के सामने, सितम्बर सन् १९२९ में, सर्व-प्रथम इस सङ्गठन की आवश्यकता बताई और मई सन् १९३० में, इस विषय का एक गम्भीर तथा विस्तृत मसविदा बना कर लीग की एसेम्बली के सामने विचारार्थ पेश किया। ग्यारहवीं एसेम्बली में इस समविदे पर बहस की गई और यूरोपीय राष्ट्रों के २१ पर-राष्ट्र-सचिवों की एक कमिटी बना कर यह मसविदा, विचारार्थ तथा सम्मतार्थ, उसके सुपुर्द किया गया। गत १६ जनवरी को इन २१ सचिवों ने मिल कर इस पर विचार किया। इतने राष्ट्रों के सचिवों का एकत्र होकर सङ्गठन पर विचार करना वर्तमान इतिहास में एक
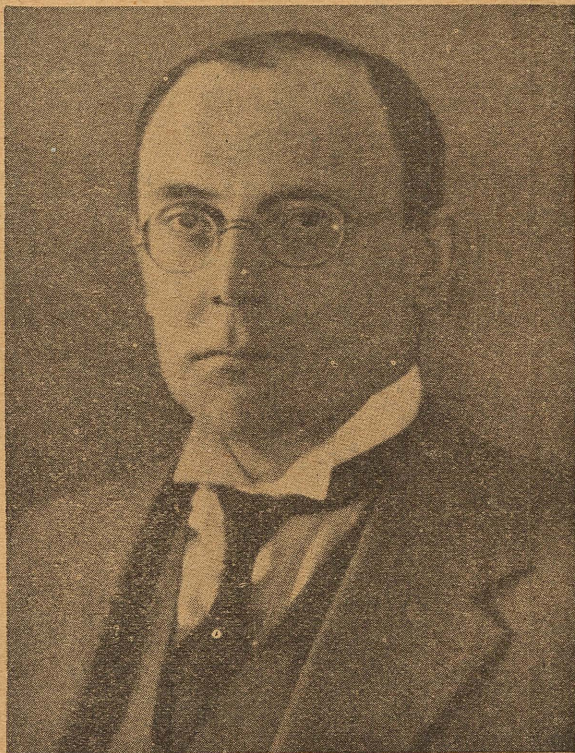
सर आर्थर साल्टर—आप लीग की तरफ़ से चीन की आर्थिक समस्या हल करने में सहायता दे रहे हैं।

महत्वपूर्ण घटना है? सब ने तय किया कि जब यूरोप का प्रत्येक राष्ट्र इस सङ्गठन में सम्मिलित हो तभी यह योजना सफल हो सकती है, अन्यथा नहीं। अतः २० जनवरी को यह प्रस्ताव पास किया गया कि रूम (तुर्की) और रूस को भी सङ्गठन में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किया जावे। ८ फ़रवरी को एसेम्बली ने यह विज्ञप्ति प्रकाशित की थी कि आगामी मई में जेनेवा नगर में एसेम्बली का अधिवेशन होगा और उसमें रूस तथा रूम भी सम्मिलित होंगे।

यूरोपीय सङ्गठन का अन्तिम ध्येय उन आर्थिक समस्याओं को हल करना है, जिनका प्रत्येक यूरोपीय राष्ट्र को सामना करना पड़ता है। प्रत्येक यूरोपीय राष्ट्र अपने कला-कौशल को उन्नत करने के लिए तथा उनको रक्षित रखने के लिए बाहर से आने वाली चीज़ों पर इतना कर लगा देता है, जिससे वे देश में या तो घुसें ही नहीं और यदि घुसें तो इतनी महँगी बिके कि लोग उनको ख़रीद ही न सकें और बाध्य होकर स्वदेशी वस्तुओं का ही व्यवहार करें। यह नियम पक्के माल के लिए ही नहीं, बल्कि गेहूँ और अन्य कच्चे माल के लिए भी है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि एक देश का माल दूसरे देश में कठिनता से खपता है। उधर व्यवसाय-प्रधान देशों में माल की उपज बढ़ती जाती है। जिन देशों में गेहूँ अधिक पैदा होता है, उनके सामने भी यही प्रश्न है। यदि वे चाहते हैं कि उनका गेहूँ कम कर पर अन्य देशों में घुस सके तो उनको भी अन्य देशों के माल पर अधिक कर नहीं लगाना चाहिए। पहिले तो यूरोप का पक्का माल एशिया और अफ़्रिका में खपता था। परन्तु अब एशियाई देशों के भी व्यवसाय उन्नत होते जाते हैं और प्रायः अधिकांश देशों में यूरोप के माल का बहिष्कार सा होता जाता है, इसलिए यूरोप की आर्थिक समस्या और भी अधिक जटिल और भयावह हो गई है। इसका उपाय सोचने के लिए ही यूरोपीय सङ्गठन की योजना की गई है। यदि यह योजना सफल हो गई तो संसार की स्थिति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, यह एक विचारणीय विषय है। यूरोप अपने पक्के माल को अन्यत्र अर्थात् एशिया या अफ़्रिका में खपाने का सङ्गठित प्रयत्न करेगा और जाग्रत एशिया उसका सङ्गठित बहिष्कार करेगा—ऐसी स्थिति का काल्पनिक चित्र बड़ा ही भयप्रद है। यूरोपीय सङ्गठन की योजना पर तो २३ राष्ट्रों ने आगामी मई में विचार करने का निश्चय ही कर लिया है, परन्तु एशिया में भी ऐसे सङ्गठन का विचार शनैः-शनैः जाग्रत हो रहा है। स्वर्गीय देशबन्धु दास ने तो एशिया-सङ्घ का विचार देश के सामने रक्खा था और गत दिसम्बर में बनारस में होने वाले अखिल एशियाई शिक्षा-सम्मेलन में भारतवर्ष तथा चीन के प्रतिनिधियों ने इस विचार की व्यावहारिकता की ओर भी कई बार सङ्केत किया था।

रूम और रूस का इस सङ्घ में सम्मिलित होना एक विचित्र बात है। क्योंकि रूम का अधिकांश भाग एशिया में है और उसकी राजधानी भी एशिया में ही है। तुर्क लोग धार्मिक दृष्टि से मुस्लिम जगत के एक अङ्ग हैं। यूरोपीय सङ्गठन में सम्मिलित होने पर क्या वे काम पड़ने पर मुस्लिम जगत के हितों का विरोध करेंगे? यदि ऐसा किया तो इस्लाम के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व घटना होगी। रूस का राज्य उत्तरी और पश्चिमी एशिया में फैला हुआ है। यहाँ पर अनेक स्वतन्त्र साम्यवादी राज्य उसने स्थापित कर दिए हैं, परन्तु ये अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में स्वतन्त्र नहीं हैं। यूरोपीय सङ्गठन में सम्मिलित होने पर रूस इन एशियाई प्रदेशों से सम्बन्ध छोड़ देगा या बनाए रक्खेगा, यह भी एक राजनैतिक उलझन है। ऐसी ही समस्या भारतवर्ष के विषय में भी यूरोप के सामने उपस्थित है।

गत २२ जनवरी को इन २१ यूरोपीय राष्ट्रों के पर-राष्ट्र सचिवों ने इस आर्थिक स्थिति को सुगम बनाने के निमित्त तीन कमिटियाँ बैठाई हैं। पहली कमिटी गेहूँ की खपत तथा उस पर कर आदि लगाने के विषय में विचार करके अपनी रिपोर्ट देगी। इस कमिटी में ग्यारह

(शेष मैटर ३३वें पृष्ठ पर देखिए)

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

सीमा-प्रान्त के "गाँधी" और उनका सङ्गठन

सीमा-प्रान्त निवासियों के हृदय-सम्राट ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

सीमा-प्रान्त के "गाँधी" और उनका सङ्गठन
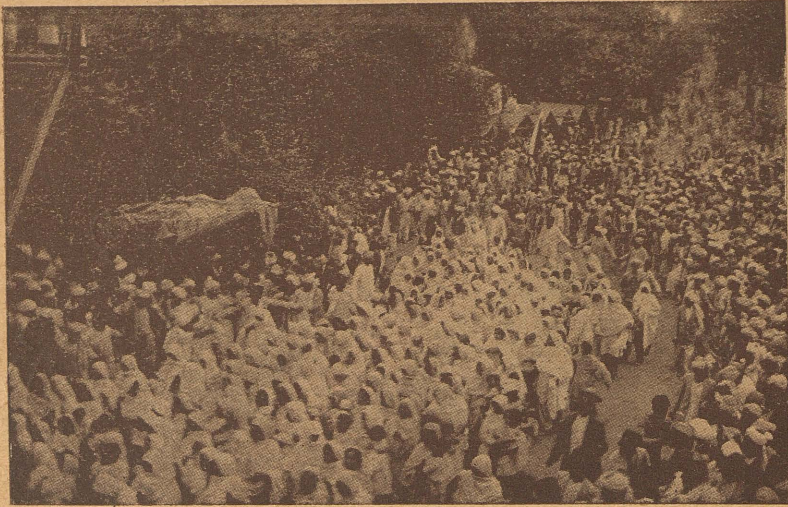
पेशावर की महिलाओं के राष्ट्रीय जुलूस का दृश्य

.खुदाई ख़िदमदगारों से घिरा हुआ सीमा-प्रान्त के 'गाँधी'—ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ—का निवास-स्थान (उतमानज़ई)

पेशावर के पठान नेताओं सहित—
श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ

बाईं ओर से बैठे हुए—श्री० ख़ान अब्दुल अम्बर ख़ाँ; श्री० सय्यद लाल बादशाह; लाहौर के राष्ट्रीय पञ्जाबी नेता—श्री० के० सन्तानम; श्री० ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ और श्री० ख़ान अलीगुल ख़ाँ।

पाठकों को स्मरण होगा, अभी हाल ही में श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब ने फ़र्माया है, कि आगामी राष्ट्रीय युद्ध में, जब कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई, तो वे अहिंसात्मक युद्ध के लिए एक लाख .खुदाई ख़िदमतगार भेंट करेंगे।

वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर अपने अनुयायियों (.खुदाई ख़िदमदगारों) सहित सीमा-प्रान्त के 'गाँधी'—श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ
[आप ही बीच में शुद्ध खादी की पोशाक में खड़े हैं]

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

पेशावर के नौजवान भारत-सभा के नेता—
कॉमरेड अब्दुल रहमान राया

चारसद्दा के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर—
ख़ान अहमद ख़ाँ साहब
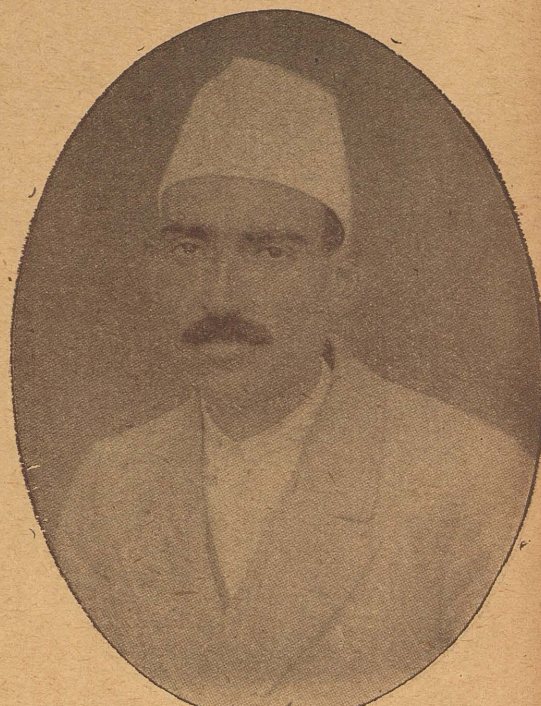
पेशावर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
कॉमरेड अलीगुल ख़ाँ

उत्तमानज़ई के राष्ट्रीय नेता—
लाला चरणदास जी

पेशावर के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर और राष्ट्रीय नेता—
ख़ान अब्दुल अब्बर ख़ाँ

लून ख़बर (तहसील मर्दन) के नेता—
कॉमरेड ग़ुलाम मोहम्मद

सीमा-प्रान्त के 'गाँधी' ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ के
भाई—डॉक्टर ख़ाँ साहब
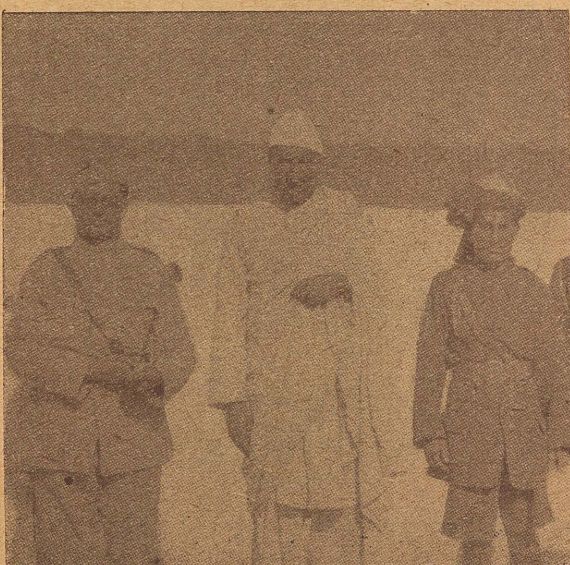
अपने लालकुर्ती वाले संरक्षकों के साथ सीमा-प्रान्त के
'गाँधी'—ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ
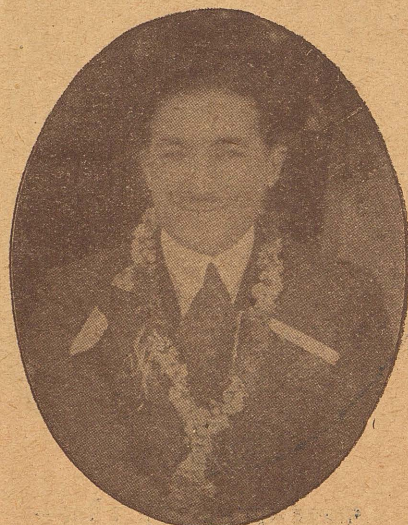
डॉक्टर ख़ाँ के पुत्र-रत्न—कॉमरेड
सैदुल्ला ख़ाँ

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

पेशावर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
कॉमरेड पीरबख़्श ख़ाँ

पेशावर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता लाला निहालचन्द की
कन्या-रत्न—श्रीमती सरस्वती देवी

डेरा इस्माइल ख़ाँ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
सरदार भगवानसिंह जी

पेशावर में निकलने वाले स्वर्गीय सरदार भगतसिंह के मातमी-जुलूस का दृश्य

पेशावर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
कॉमरेड ग़ुलाम रब्बानी सेठी

डेरा इस्माइल ख़ाँ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
लाला प्यारे ख़ाँ
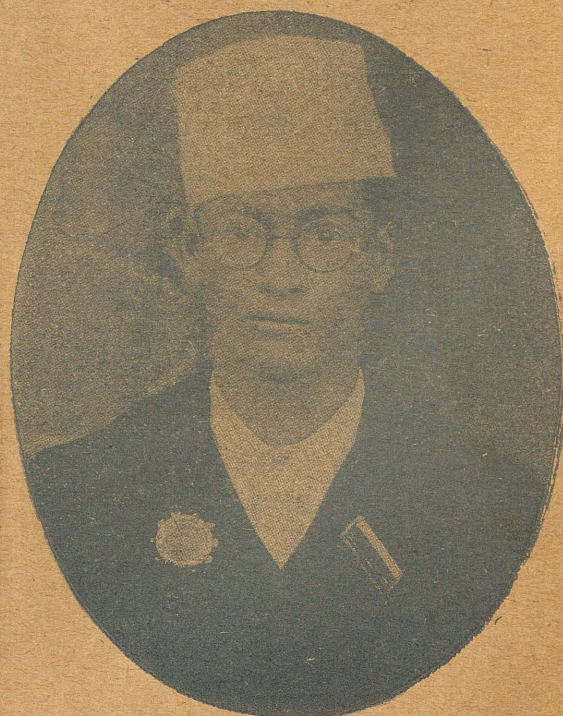
पेशावर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—कॉमरेड
अल्लाहबख़्श बर्क़ी

कुछ न हो ग़म, कुछ न हो परवाए-बरबादी मुझे, ख़ाक में मिल कर अगर मिल जाय आज़ादी मुझे।
सब से कहते फिरते हैं, वह मेरी बरबादी का हाल; कर रही है इस तरह मशहूर बरबादी मुझे।

आज़ादी

फिर हुआ है, ताज़ा शौक़े ख़ाना-बरबादी[1] मुझे,
देखिए ज़िन्दाँ[2] से कब मिलती है आज़ादी मुझे !
बदवे[3] फ़ितरत से है, ज़ौक़े ख़ाना-बरबादी मुझे,
दी है मेरी रूह ने, तालीमे आज़ादी मुझे।

—"अज़ीज़" लखनवी

हो गया जिस वक़्त कुछ एहसास[4] अपनी क़ैद का,
हर नफ़स[5] देने लगा, पैग़ामे आज़ादी मुझे।
और लोगों की गिरफ़्तारी मुहब्बत में हुई,
चश्मे[6] क़ातिल से मिला फ़रमाने[7] आज़ादी मुझे।
रूह क़ैदे जिस्म में "अख़गर" बहुत घबरा गई,
मुन्तज़िर[8] हूँ दे अजल[9] फ़रमाने-आज़ादी मुझे।

—"अख़गर" लखनवी

ज़िन्दगी गर ख़त्म हो, ज़िन्दाँ में तो परवा नहीं,
मर के तो मिल जायगी, दुनिया से आज़ादी मुझे।

—"इन्दर" गवालियारी

क्यों नज़र आए न बरबादी में, आबादी मुझे,
ज़र्रा-ज़र्रा दे रहा है, दरसे[10] आज़ादी मुझे।
छोड़ कर दैरो[11] हरम[12] के इस तिलस्मे-राज़ को,
और भी कुछ दूर ले चल जोशे आज़ादी मुझे।

—"जमाल" इटावी

रञ्ज दुनिया, फ़िक्रे उक़्बा,[13] हिज्रे[14] जानाँ बेकसी,
या इलाही इनसे होगी कब तक आज़ादी मुझे।

—"शाकिर" गवालियारी

बेख़ुदीये[15] शौक़े बातिन[16] ने किया है मुझको गुम,
मिल गई दोनों जहाँ, से ख़ूब आज़ादी मुझे।

—"शैदा" देहलवी

ग़म का कुछ ग़म है, न शादी की है कुछ शादी मुझे,
है मगर मद्दे नज़र भारत की आज़ादी मुझे।
इम्बिसातो[17] ख़ुर्रमी[18] पैदा न हो क्यों क़ल्ब को,
ईद के दिन से है बढ़ कर यूमे[19] आज़ादी मुझे।

—"ऐश" अमरोही

कुछ न हो ग़म, कुछ न हो परवाए-बरबादी मुझे,
ख़ाक में मिल कर अगर मिल जाय आज़ादी मुझे।
यह है तन में क़ैद, जब तक मैं भी हूँ दुनिया में क़ैद,
रूह निकलेगी तो मिल जाएगी आज़ादी मुझे।
फूल तो हैं फूल, मैं दो-चार तिनके चुन सकूँ,
बाग़े-आलम[20] में नहीं, इतनी भी आज़ादी मुझे !
रूह जब से ख़ानए तन में मेरे दाख़िल हुई,
है कहाँ पहिला सा हासिल, लुत्फ़े-आज़ादी मुझे !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—घर का बरबाद होना २—क़ैदख़ाना, ३—आदि ४—ध्यान ५—साँस ६—आँख ७—हुक्म ८—जोहना ९—मौत १०—सबक़ ११—मन्दिर १२—काबा १३—परलोक १४—प्रियतम का विरह १५—आपे में न रहना १६—अन्दरूनी १७—ख़ुशी १८—आनन्द १९—दिन २०—संसार।

बरबादी

ख़ाना वीराँ साज़िए[21] वहशत तमाशा वह करें,
क्या मुबारक हैं, मेरे सामाने बरबादी मुझे।

—"अज़ीज़" लखनवी

राज़ कुछ तख़लीक़[22] का समझा, तो मैं समझा यहाँ,
लाई दुनिया में अदम[23] से, मेरी बरबादी मुझे।

—"इन्दर शर्मा" माछरवी

मैं अदम में, ऐ अदम वालो बहुत मसरूर[24] था,
खींच लाई अर्सए[25] हस्ती में बरबादी मुझे।

—"जमाल" इटावी

हो गई मेरे लिए तर्ज़े-सुकूँ[26] राहत-रसाँ[27],
रास आई है तमन्नाओं की बरबादी मुझे।

—"शैदा" देहलवी

मौत ने आकर दिया, पैग़ामे तजदीदे[28] हयात[29],
वजह तसकीं हो गई, तकमीले[30] बरबादी मुझे।

—"मुनौवर" देहलवी

आप जो भूले हुए हैं, उनसे यह कह दीजिए,
मञ्ज़िलों से आशना, करती है बरबादी मुझे।

—"कामिल" इटावी

मेरी बरबादी को काफ़ी है यही जोशे जुनूँ,
ढूँढ़ने जाना है क्या, सामाने बरबादी मुझे।
सब से कहते फिरते हैं, वह मेरी बरबादी का हाल,
कर रही है इस तरह, मशहूर बरबादी मुझे।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

शादी

एक ज़माना था कि यह दिल पर असर[31] अन्दाज़ थे,
अब तो हैं अलफ़ाज़[32] बे-मानी ग़मों शादी[33] मुझे

—"मुनौवर" देहलवी

बाँधे बैठा हूँ, कफ़न सर से वतन के वास्ते,
झेलना आफ़ात[34] का है बायसे शादी मुझे !

—"अरमान" कानपुरी

इस क़दर ख़ूगर[35] जफ़ाएँ सहते-सहते हो गया,
ख़ार[36] ग़म भी बन रहा है अब गुले[37] शादी मुझे!

—"इन्दर शर्मा" माछरवी

दिल से ऐ "बिस्मिल" फ़िदा मैं उरूसे[38] मर्ग[39] पर
बस इसी से तो पसन्द आती नहीं शादी मुझे !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२१—दीवानगी से भरा हुआ २२—पैदा होना २३—दूसरी दुनिया २४—आनन्द २५—संसार २६—चुप रहना २७—लाभदायक २८—नया २९—ज़िन्दगी ३०—पूरा होना ३१—असर डालने वाले ३२—शब्दों ३३—ख़ुशी ३४—दुःख ३५—आदी ३६—काँटा ३७—फूल ३८—दुलहिन ३९—मौत।

फ़रियादी

आज निकला हूँ किसी महफ़िल से यूँ मायूस[40] मैं,
हिल गए हफ़्त[41] आसमाँ देखा जो फ़रियादी मुझे।

—"अज़ीज़" लखनवी

कर दिया है ख़ामुशी ने ज़ब्त का आदी मुझे,
अब नहीं कहते हैं, फ़रियादी भी, फ़रियादी मुझे !

—"मुनौवर" देहलवी

यह नहीं मुमकिन, कि मैं मिन्नत[42] कशे अग़ियार हूँ,
तुम समझते हो तो समझे जाव फ़र यादी मुझे !

—"ऐश" अमरोही

फूल की तर[43] दामनी पर ही नहीं कुछ मुनहसिर,
बाग़बाँ भी रो दिया, देखा जो फ़रियादी मुझे!

—"महवी" अम्बालवी

है पसन्द इस वजह से इज़हारे बरबादी मुझे,
जानता है कोई अपना, ख़ास फ़रियादी मुझे !
हश्र[44] में भी दीद के क़ाबिल हैं उसकी शोख़ियाँ,
वह बुलाता है तो कह कर, अपना फ़रियादी मुझे !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

आबादी

छोड़ कर शहरे ख़मोशाँ[45] जाऊँ किस ख़लवत में अब,
लो यहाँ भी तो नज़र आती है, आबादी मुझे।
एक मजलिस करके मैंने दिल का मातम कर लिया,
जब नज़र आई कहीं थोड़ी सी आबादी मुझे।
ढूँढ़ने निकला हूँ, मैं गोरे[46] ग़रीबाँ के निशाँ,
देखना है एक नज़र फ़िहरिस्ते आबादी मुझे।

—"अज़ीज़" लखनवी

ऐ दिले नाशाद, चल कोहो[47] बयाबाँ की तरफ़,
काटने को दौड़ती है अब तो आबादी मुझे।

—"शाकिर" गवालियारी

अपने ही रङ्गीं ख़यालों में है, आज़ादी मुझे,
मस्त रखती है, ख़ुदी में दिल की आबादी मुझे।

—"शैदा" देहलवी

हर तरफ़, हर सिम्त, है मजमा ग़मो अन्दोह का,
दिल की दुनिया में नज़र आई यह आबादी मुझे।
चश्मे[48] इबरत में, जो बरबादी की है ज़िन्दा नज़ीर,
याद है शहरे ख़मोशाँ की वह आबादी मुझे।
मैंने जाना मञ्ज़रे गोरे ग़रीबाँ देख कर,
हासिले दुनिया है, यह थोड़ी सी आबादी मुझे।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

*　*　*

४०—निराशा ४१—सात ४२—एहसान लेना ४३—गुनाह ४४—प्रलय ४५—क़ब्रिस्तान ४६—दुखियों की क़ब्रें ४७—पहाड़ी ४८—शिक्षा लेने वाली आँख।

साहित्य का सपूत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—२; दृश्य—१

टेसू—तो आप हँसते क्यों नहीं ?

साहित्यानन्द—जब तू हँसाएगा तब तो हँसूँगा।

टेसू—मैं कैसे हँसाऊँ ?

साहित्यानन्द—यह मैं नहीं जानता। चाहे जैसे हो तुझे हँसाना पड़ेगा, अन्यथा तेरा अपराध क्षमा नहीं हो सकता।

टेसू—यह बड़ी मुश्किल है। रुलाना कहिए तो अभी यह कह कर कि आपका कोई मर गया है, रुला दूँ। गुस्सा दिलाने को कहें तो ऐसी गाली दूँ कि आप लड़ने लगें। क्योंकि यह सब तो आसान मालूम होते हैं, मगर हँसाना बड़ी टेढ़ी खीर है। समझ में नहीं...

साहित्यानन्द—अबे चुप चुप चुप चुप चुप—चुप !

टेसू—मगर क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों—क्यों ?

साहित्यानन्द—एक तो कुछ अनाड़ियों ने हास्य को साहित्य में स्थान देकर साहित्य की दुर्दशा योंही कर डाली है, उस पर तेरी यह वार्ता वह जो कहीं सुन लेंगे, तो हास्य को साहित्य का सबसे कठिन अङ्ग मान बैठेंगे। समझा ?

टेसू—जी हाँ, कठिन है। अब मैं रोटी न खा आऊँ ?

साहित्यानन्द—तेरी ऐसी-तैसी। मैं कहता क्या हूँ और कम्बख़्त—उहुँक—दुष्ट समझता क्या है ? बचा, बिना मुझे हँसाए तू यहाँ से गमन नहीं कर सकता।

टेसू—तो मैं हँसाऊँ कैसे ? क्या आप बच्चा हैं कि लू लू लू लू करके हँसा दूँ ?

साहित्यानन्द—अबे तो थोड़ी देर—उहुँक—विलम्ब के लिए वही समझ ले। हँसा तो किसी प्रकार से।

टेसू—तो फिर हँसिए। हँसो मुन्ना, हँसो मुन्ना, लू लू लू लू। (ताली बजा कर कभी मुँह बिचकाता और कभी चोंच दिखाता हुआ) ऊ—ऊ—ऊ—ऊ—

साहित्यानन्द—(एकाएक गुस्से में आकर) आयँ ? आयँ ? यह क्या ? तू मुझे मुँह बिचकाता है। सुअर का बच्चा—उहुँक—सुअर का शिशु कहीं का ? मारते-मारते मुख अपभ्रंश कर दूँगा। इसीसे मैं अपने नातेदारों को कभी नौकर नहीं रखता था। साले भिखमङ्गे बन कर आते हैं और काम करने को कहो तो मुँह बिचकाते हैं। तेरी ऐसी-तैसी करूँ।

टेसू—अरे ! आप ही ने तो कहा था कि मुझे किसी तरह से हँसाओ, तब मैं (मुँह बिचका कर और चोंच दिखा कर) इस तरह हँसा रहा था।

साहित्यानन्द—इस तरह—उहुँक—इस प्रकार हँसाया जाता है, उल्लू के पट्ठे ?

टेसू—तब किस तरह हँसाऊँ ! आप ही बताइए।

साहित्यानन्द—कोई हँसी की बात कह कर हँसाओ।

टेसू—अच्छा।

साहित्यानन्द—अब ताकता—उहुँक—अवलोकता क्या है ? कहता क्यों नहीं ?

सैनिकों से—

[श्री० शोभाराम जी धेनुसेवक]

बढ़े चलो राष्ट्रीय समर में, सैनिक बन कर।
पीठ दिखाना नहीं, अड़ो अरि सम्मुख तन कर॥
देखो तुम पर वार करेंगे, बैरी हन कर।
सह लेना तुम उन वारों को, प्रमुदित मन कर।

हिंसा का प्रतिकार, अहिंसा से दिखलाना।
होगा तुमको विजय, शुभात्मिक बल से पाना॥
नहीं झिझकना पूर्ण विजय पाकर ही आना।
या माता के लिए वहीं सुख से मर जाना॥

मातृ-भूमि स्वाधीन बने, बस यही ध्यान हो।
पावें हम जो विजय, दिव्य गौरव निधान हो॥
हम भी रखते मान, हमारा पद समान हो।
पल भर भी परतन्त्र न अब हिन्दोस्तान हो॥

* * *

टेसू—अच्छा कहता हूँ। आप हँसने के लिए बिल्कुल तैयार हो जाइए।

साहित्यानन्द—यह ले (हँसने की तैयारी में मुँह खोल कर आ—आ करता है) आ—आ—हा—

टेसू—वाह ! वाह ! (एकाएक हँस पड़ता है) आहाहाहाहा ! आहाहाहाहा ! उफ़ ओ !

साहित्यानन्द—अरे ! तू फिर हँसने लगा ?

टेसू—कहता हूँ, कहता हूँ। सब्र कीजिए। ज़रा हँसी रुक ज—ज—जाए। आहाहाहा ! (हँसता है)

साहित्यानन्द—अच्छा, हँसता है तो हँस डाल। परन्तु धीरे-धीरे, ज़रा—उँहुक—तनिक रुक-रुक कर, ताकि मैं भी देख कर अनुकरण कर सकूँ। (नक़ल करने की कोशिश करता हुआ) आहा-आ—कैसे ? अबे इतनी शीघ्रता से नहीं। खण्ड-खण्ड करके हँस। फिर नहीं सुनता ?

टेसू—आहाहाहा ! बाप रे बाप, दम फूल गया।

साहित्यानन्द—हँस चुका ? अच्छा तो अब मेरे हँसने के लिए हास्य-वार्ता कह।

टेसू—कहता हूँ। हाँ, आपका—मगर मिहर-बानी करके इस तरह मुँह फैला कर मुझे न घूरिए, नहीं फिर हँसी आजाएगी। ऊपर ताकिए ऊपर—मेरी तरफ़ नहीं। हाँ, अब ठीक है। अच्छा कहता हूँ।

साहित्यानन्द—हास्य-वार्ता है न ?

टेसू—बिल्कुल !

साहित्यानन्द—शुद्ध हास्यरस की ?

टेसू—शुद्ध-पुद्ध आप जानिए। मैं कहता हूँ। बस अब हँसने के लिए तैयार हो जाइए। हाँ, आसमान की ओर देखिए।

साहित्यानन्द—तैयार हो गया।

टेसू—सुनिए। आपका मुँह ..

साहित्यानन्द—(ऊपर मुँह उठाए हुए) अच्छा ?

टेसू—बिल्कुल...

साहित्यानन्द—अच्छा। परन्तु हँसी नहीं आई।

टेसू—घबड़ाइए नहीं, अब आती ही है। हाँ, आपका मुँह बिल्कुल...

साहित्यानन्द—(मुँह ऊपर किए हुए) आगे कह आगे। मैं हँसने के लिए मुँह फैलाए तैयार हूँ।

टेसू—बनबिलाव सा है।

साहित्यानन्द—अबे मेरा मुँह ?

टेसू—हाँ-हाँ, आप ही का।

साहित्यानन्द—(गुस्से में मारने को झपटता हुआ) तेरी ऐसी-तैसी, सूअर का बच्चा कहीं का, तुझे मैं कच्चा चबा जाऊँ।

टेसू—(पिछड़ता हुआ) झूठ नहीं सच। आप ख़ुद देख लीजिए।

साहित्यानन्द—अच्छा दिखा साले। न हुआ तो बताता हूँ।

टेसू—हाँ-हाँ, देख लीजिए। मैं झूठ थोड़े ही कहता हूँ। यहाँ से देखिए जहाँ मैं हूँ।

साहित्यानन्द—(जहाँ टेसू खड़ा था वहाँ जाकर) कहाँ है मेरा मुँह बनबिलाव सा ? दिखला।

टेसू—अब दिखलाऊँ कैसे ? आप तो अपने साथ अपने मुँह को भी लेते आए। अच्छा अब इधर आकर देखिए, और ईमान-धरम से आप ही कहिए कि है न बनबिलाव सा। मगर हाँ, यह क्या ? अपना मुँह वहीं छोड़ कर आइए, तब दिखलाई पड़ेगा।

साहित्यानन्द—अबे यह कैसे हो सकता है ?

टेसू—तब मेरी बात मान लीजिए।

साहित्यानन्द—(झपटता हुआ) परन्तु प्रथम तुझे भली-भाँति ताड़न कर लूँ, तब सत्य-असत्य का निर्णय होगा।

टेसू—(भागता हुआ) हाँ-हाँ, इस तरह मुझ

पर न झपटिए, नहीं तो आपको हँसाने के लिए जो अभी-अभी एक बढ़िया तरकीब सोची है, उसे भूल जाऊँगा।

साहित्यानन्द—(रुक कर) हाँ ? अच्छा वह क्या है, शीघ्र बता।

टेसू—आप उधर मुँह करके खड़े होइए।

साहित्यानन्द—यह ले।

(टेसू पीछे से साहित्यानन्द की कमर गुदगुदाता है। और साहित्यानन्द एकाएक बड़े ज़ोरों से हँस पड़ता है।)

साहित्यानन्द—आहाहाहाहा ! आहाहाहा ! यह युक्ति नि-नि-निसन्देह अनुपम है। आहाहा ! मेरा हास्य-भण्डार खु-खु-खुल गया। आहाहाहा ! अरे बस-बस-बस-बस। आहाहाहा ! (भागता है)

टेसू—(गुदगुदाता हुआ पीछा करता है) थोड़ा और, ताकि आपका भण्डार फिर कभी ख़ाली न होने पावे।

साहित्यानन्द—(भागता हुआ) नहीं-नहीं, बहुत हो गया बहुत। आहाहाहा। आहाहा ! बस, अरे ! अब लिख लेने दे। आहाहाहा !

टेसू—हाँ-हाँ लिखिए। मना कौन करता है ?

साहित्यानन्द—(काग़ज़, क़लम, दावात के पास बैठ कर लिखने का उद्योग करता हुआ बीच-बीच में टेसू की ओर चौंक कर देखता जाता है।) देख, कहीं गुद-गुदा न देना। हाँ, लेखनी महारानी अब हास्य की धारा बहाओ। (ज़ोर लगाता हुआ) हूँहूँ ! हूँहूँ !

टेसू—अरे ! यह हूँहूँ क्या ?

साहित्यानन्द—चुप रह। हास्य निकालने के लिए ज़ोर—ऊहूँक—बल लगा रहा हूँ। हाँ, चल-चल-चल। अरे ! लेखनी तो चलती ही नहीं। ओ टेसुआ। टेसुआ ! टेसुआ !

टेसू—जी, कहिए कहिए कहिए !

साहित्यानन्द—अबे जल्दी से ज़रा—ऊँह—तनिक और तो कूक भर देना।

टेसू—क्या मसाला ख़ाली हो गया ? अच्छा अभी लीजिए, अच्छी तरह से भरे देता हूँ ! (साहित्यानन्द को गुदगुदाता है।)

साहित्यानन्द—आहाहाहाहा ! हीहीहीही ! बस-बस अरे ! उहूहूहूहू ! अबे ठहर-ठहर-ठहर। (लिखने की कोशिश करता है।)

टेसू—वाह ! यह तो लिखने का अजब निराला ढङ्ग है। एक आदमी जब इधर से गुदगुदावे, तब उधर क़लम चले। ऐसा तो मैंने न कभी देखा था और न सुना। मैंने भी दूसरी किताब तक पढ़ा था, मगर कभी किसी ने मुझे इस तरह लिखना-पढ़ना नहीं सिखाया।

साहित्यानन्द—अबे बक-बक मत कर।

टेसू—क्या लिख चुके आप ?

साहित्यानन्द—नहीं, अभी तो एक शब्द भी नहीं निकला। हुःहू ! हुःहू ! अरे ! फिर भी कुछ नहीं, जानो लेखनी में मोर्चा लग गया है।

टेसू—जी हाँ, यही बात है। नाच न जाने आँगन टेढ़।

साहित्यानन्द—(क़लम देता हुआ) अच्छा इसे तनिक साफ़—उहूँ ! शुद्ध तो कर दे, तो एक बार किटकिटा कर सारा बल लगा दूँ। यदि तब भी कुछ न निकले तो समझूँगा कि हास्य हम ऐसे उच्चकोटि के साहित्य-मर्मज्ञों के लिखने का पदार्थ नहीं है।

टेसू—(क़लम साफ़ करता हुआ) बेशक। अङ्गूर खट्टे हैं।

साहित्यानन्द—इसीलिए इसे हम लोगों को अनादर की दृष्टि से अवलोकना चाहिए और इसे अश्लील, अशुद्ध, अपवित्र, चरित्र-नाशक, कुत्सित प्रभावजनक इत्यादि-इत्यादि बताना चाहिए।

टेसू—हाँ-हाँ, सही है, खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।

साहित्यानन्द—और यह भी कहना चाहिए कि हमारे साहित्य में शुद्ध हास्य-रस का बड़ा अभाव है और जिसे लोग हास्य मानते भी हैं, उसमें अधिकांश अंश तो अनुवादित है। ताकि हास्य का मान न बढ़े।

समाधि-लेख

(Epitaph)

[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, 'कुसुमाकर' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

यदि ज़िन्दगी में था मुझे तो,
बस यही अभिमान था।
पैदा हुआ जिस देश में,
वह देश हिन्दुस्तान था॥
जिस देश में गाँधी सरीखे,
देव के दर्शन किए।
वह दिव्य-वाणी नित्य उसकी,
सुन सके, जब तक जिए॥
उसकी अहिंसा सैन्य का मैं,
क्षुद्र सेवक एक था।
जिसकी विजय थी मार खाना,
मृत्यु ही अभिषेक था॥
मैं लाठियों की मार खाकर,
हो गया बलिदान हूँ।
बारह बरस का दुधमुँहा हूँ,
आर्य की सन्तान हूँ॥

* * *

टेसू—जो हाँ, घोड़ा परखें भवन चमार।

साहित्यानन्द—जानता है, क्यों हमें ऐसा करना चाहिए ? इसलिए कि इस बार हम भी साहित्य-सम्मेलन के सभापति हो जाएँ। डेढ़-डेढ़ हाथ के शब्द प्रयोग करके भाषा को दुर्गम्य बना ही रहा हूँ, बस जहाँ हास्य पर भी तुच्छ दृष्टि डालना आरम्भ कर दिया, तहाँ तो सभा-पतित्व मिल ही जायगा।

टेसू—क्यों नहीं। अन्धेर-नगरी चौपट राजा।

साहित्यानन्द—अबे तू प्रत्येक वार्ता के अन्त में क्या बुदबुदा देता है, जो बुद्धि ग्रहण नहीं कर पाती।

टेसू—यह तुर्कीबतुर्की है सरकार, न आपकी मैं समझूँ न मेरी आप। अच्छा लीजिए क़लम, अब लिखिए-लिखिए।

साहित्यानन्द—लिखता हूँ बे। कोलाहल क्यों करता है ? यह हास्य है, कुछ ठट्ठा नहीं। इसको तेरे बाप भी नहीं लिख सकते।...अच्छा, तनिक और तो गुदगुदा दे।

(भीतर के दरवाज़े पर थपथपी)

टेसू—वह देखिए, भीतर का दरवाज़ा कोई खुलवाना चाहता है।

साहित्यानन्द—(क़लम फेंक कर) धत् तेरे की, फिर विघ्न पड़ गया। मत खोल। वही राँड होगी—उहूँक—विधवा होगी चपला की माँ।

(बाहर के द्वार अर्थात दूसरी ओर थपथपी)

टेसू—अरे ! अब इधर कोई खटखटा रहा है।

साहित्यानन्द—यह तो बाहर का द्वार है। जानो कोई मिलने वाला आया। ठहर जा, लेई की प्याली छिपा दे।......अब रोशनदान से झाँक के देख कि खद्दरधारी है या नौकरशाही।

टेसू—कैसे देखूँ ? बहुत ऊँचा है।

साहित्यानन्द—मेरी ग्रीवा पर आरूढ़ होकर देख। (टेसू को अपनी गर्दन पर सवार करा कर उठाता है।) देखा ?

टेसू—हाँ।

साहित्यानन्द—(टेसू को उतार कर) बता, वह क्या पहने है, देशी या विलायती ?

टेसू—यह हम क्या जानें ?

साहित्यानन्द—तब देखा क्या अपना मुण्ड ? आ फिर आरूढ़ हो। (टेसू को गर्दन पर फिर चढ़ाता है।)

(द्वार पर फिर खटखटाहट)

टेसू—(साहित्यानन्द की गर्दन पर से रोशनदान की ओर) ठहरिए, इत्तला मिल गई है। फ़ुरसत मिलने पर बुलाहट होगी। (साहित्यानन्द से) ठीक कहा न ?

साहित्यानन्द—(टेसू को उतार कर) हाँ। अच्छा बोल क्या पहने है ?

टेसू—बहुत बढ़िया कपड़ा है।

साहित्यानन्द—तब विदेशी होगा। कोई नौकरशाही जान पड़ता है। अच्छा देना तो मेरा सम्पादकीय अँगरखा विलायती सासनलेट वाला।

(टेसू मेज़ के नीचे से एक चमकदार कुरता देता है, जिसमें खद्दर का अस्तर लगा हुआ है। उसे साहित्या-नन्द जल्दी-जल्दी पहनता है)

टेसू—(साहित्यानन्द के कुर्ता पहनने के बाद) मगर उसका कपड़ा ऐसा थोड़े ही है। वह तो बहुत बढ़िया खद्दर मालूम होता है।

साहित्यानन्द—उल्लू कहीं का। तब पहिले क्यों नहीं बताया कि खद्दरधारी है राम ! राम ! (कुर्ते को उतारता है और फिर उसी को उलट कर पहनता है और जेब से गाँधी टोपी निकाल कर पहनता है।)

टेसू—मैं समझा यह रूमाल है।

साहित्यानन्द—अबे यह दोनों है। सासन-लेट की ओर यह रूमाल का काम देता है और खद्दर की ओर टोपी। देख, मैं अब तो देश का सपूत बन गया।

टेसू—हाँ, इसमें क्या शक है। मगर वह देश का सपूत नहीं, कोई सपूतनी सी जान पड़ती है।

(द्वार पर खटखटाहट)

साहित्यानन्द—क्या वह कोई स्त्री है ?

टेसू—हाँ, ऐसी ही कुछ दिखाई पड़ी थी। मगर इस वक्त ठीक याद नहीं।

साहित्यानन्द—हाय! हाय! तब इतना समय तूने क्यों नष्ट किया मूर्ख? और अब कहता है कि ठीक याद नहीं। चल इधर आ और आँखें फाड़ कर भली-भाँति देख। (गर्दन पर फिर सवार करा कर उठाता है।) बोल, स्त्री है या पुरुष?

टेसू—हमें तो न स्त्री न पुरुष, बल्कि कुछ गपड़चौथ सा दिखाई पड़ता है। और ऊपर उठाइए तो साफ़ दिखाई पड़े।

साहित्यानन्द—तेरी ऐसी-तैसी! जी चाहता है, यहीं से पटक दूँ।

टेसू—देखा-देखा, स्त्री है स्त्री।

साहित्यानन्द—(टेसू को उतार कर जल्दी-जल्दी कुर्ता-टोपी उतार कर मेज़ से नीचे फेंकता है और वहाँ से एक कोट निकाल कर पहनता हुआ) यह कोई लेखिका होगी। पहिले इनके लेख आते थे, तब चित्र, अब स्वयं यह लोग आने लगीं। धन्य भाग! इतने दिवसों पर्यन्त मेरी आशा सफल होती देख पड़ी। अब अवश्य ही मैं किसी साहित्य-पण्डिता से अपना पुनर्विवाह कर सकूँगा। क्योंकि जितनी सुगमता से सम्पादकों को उच्च शिक्षिता रमणियाँ मिल सकती हैं, उतनी अन्य किसी को नहीं, इसी उद्देश्य से तो हमने यह पत्र निकाला है। परन्तु हाय! वह कहीं चली न जाए। अरे! जल्दी से मेरा टोप निकाल टोप, इसी दिन के लिए उसे आज ही मोल लिया है। क्योंकि टोप-कोट में सुन्दरता द्विगुण हो जाती है। ठहर जा, जब मैं कुर्सी पर सम्हल कर बैठ जाऊँ। तब इसे पहनाना। (कोट पहन कर कुर्सी पर बैठता है।)

टेसू—पतलून तो आपने पहनी ही नहीं।

साहित्यानन्द—उसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि टाँगें तो मेज़—उहुँक—उच्च चौकी के नीचे छिपी—उँह—गुप्त रहेंगी। हाँ, पहिले मेरा कोष यहाँ रख दे। यद्यपि अब तो भाषा बोलने का इतना अभ्यास हो गया है कि कोष की आवश्यकता नहीं पड़ती; तथापि अस्त्र-विहीन रहना उचित नहीं। (कुर्सी पर से उठ कर) हाँ, बहुत सी स्त्रियों के चित्र जो मैंने ऐसे शुभ अवसरों के लिए एकत्रित कर रक्खे हैं, उन्हें फैला कर रख दूँ, जिसमें वह जाने कि मैं लेखिकाओं का कैसा उपासक हूँ। (ऑफ़िस-बक्स में से कई फ़ोटो निकाल कर मेज़ पर फैलाता है।)

(द्वार पर फिर खटखटाहट)

साहित्यानन्द—(कुर्सी पर बैठ कर) अब शीघ्रता के साथ मुझे टोप पहना दे। क्योंकि कुर्सी टूटी होने के कारण दोनों हाथों से इसे ग्रहण किए रहना आवश्यकीय है।

टेसू—(टोप साहित्यानन्द की खोपड़ी पर बेड़ा करके पहनाता हुआ) अरे! इसमें तो आपकी खोपड़ी ही नहीं जाती। (टोप के ऊपर दो-चार घूँसे जमा कर) टस से मस नहीं होती।

साहित्यानन्द—प्रातःकाल को जब इसे मैंने ख़रीदा—उहुँक—क्रय किया था तब तो मेरा मुण्ड उसमें घुस गया था।

टेसू—इतनी देर में आपकी खोपड़ी बढ़ गई होगी। अच्छा ठहर जाइए। (दौड़ कर एक कोने से बसुला लाता है।)

साहित्यानन्द—अबे यह क्या करेगा?

टेसू—ज़रा सी आपकी खोपड़ी छील दूँ। तब यह टोप मज़े में बैठ जाएगा। हाँ-हाँ, इस तरह मत चौंकिए, कुर्सी टूटी हुई है।

साहित्यानन्द—नहीं बे, ऐसा कहीं अनर्थ न कर देना। वह ले, द्वार फिर भड़भड़ाने लगा। बसुला नीचे फेंक।

(टेसू बसुला मेज़ के नीचे रखता है। द्वार पर लगातार भड़भड़ाहट, उसके बाद सरला का गुस्से में आना)

टेसू—जानो भड़भड़ाहट से सिटकिनी खुल गई।

सरला—उधर भी बन्द और इधर भी बन्द। और घण्टों भड़भड़ाने पर भी कोई नहीं सुनता। आख़िर हो क्या रहा है यहाँ? (मेज़ पर तस्वीरों को देख कर ठिठुक पड़ती है। अरे! यह क्या?

साहित्यानन्द—(सरला को देख कर बड़े ज़ोर से चौंकता हुआ) यह चुड़ैल यहाँ कहाँ.........
(चौंकने में कुरसी के साथ आप भी गिर पड़ता है) अरे! बाप रे बाप! हाय! दादा रे दादा! सर फूट गया।

टेसू—यह आप क्या ग़ज़ब करते हैं। आप साहित्य-सम्मेलन के सभापति होने वाले हैं, भाषा में रोइए भाषा में, बाप-बाप नहीं, बल्कि कहिए अरे! पिता रे पिता! हाय पितामह रे पितामह! मुण्ड फूटम।

साहित्यानन्द—(काँख-कूँख कर उठता हुआ) चुप बदमाश! (सरला से) तू यहाँ क्या करने फट पड़ी?

सरला—(अनसुनी करती हुई, तस्वीरों को दिखाती हुई) यह किन नानियों की तस्वीरें हैं। द्वार बन्द करके इन्हीं की पूजा की जा रही थी। क्यों, घिग्घी क्यों बँध गई? बोलते क्यों नहीं?

टेसू—ज़रा खोपड़ी तो सहला लेने दीजिए।

साहित्यानन्द—(अलग) हाय! हाय! यह तो बड़ा अनर्थ हुआ, जो इस दुष्टा की इन चित्रों पर कुदृष्टि पड़ गई। अब यह आकाश-पाताल एक कर देगी। क्या करूँ?

(चुपके-चुपके खसकता है)

सरला—बुढ़ापे में अब तुम्हें यह शौक़ पैदा हुआ? उधर कहाँ खसके जाते हो?

साहित्यानन्द—(बिना देखे हुए) अभी आता हूँ।

सरला—पहिले मुझे बताते जाओ कि यह किन चुड़ैलों की तस्वीरें हैं, तब कहीं जाना।

साहित्यानन्द—(जल्दी-जल्दी जाता हुआ) पेट बहुत गड़बड़ा रहा है।

(भाग जाता है)

सरला—(तस्वीरों को बटोरती हुई) तुम्हारे पेट की गड़बड़ाहट अभी ठीक करती हूँ। तुम भाग कर जाओगे कहाँ?

(तस्वीरें लेकर पीछा करती हुई जाती है)

टेसू—आहाहाहाहा! यह अच्छा उलटे लेने के देने पड़ गए। चलो मैं भी चल कर ज़रा इसका तमाशा देखूँ।

(जाता है)

(क्रमशः)

* * *

रजत-रज

[श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

ऐ कारुणिक हृदय! निर्मम से ममता की करुण कहानी कह कर तू अज्ञान क्यों बनता है?

❀

बलवान प्रायः धैर्यवान होता है।

❀

निर्बल सबल द्वारा सताए जाने से सबल होता है। बालू के कण जल के साथ बहते-बहते नदियों द्वारा समुद्र में पहुँच, जल-गर्भ के भीतर पर्वत का निर्माण करते हैं!

❀

मनुष्य के मुख-मुकुर में उसकी चित्त-वृत्तियाँ झलकती हैं।

❀

कौमुदी से सिक्त जलाशय के तट पर प्रेम-मुग्ध कवि अर्द्ध-निमेलित नेत्रों से कभी स्मृति-पट पर और कभी चन्द्र-किरणों में हृदय के देवता की मूर्ति खोजता है।

❀

उषा अपने प्रियतम सूर्य के स्वागत में लीन होकर अपने अस्तित्व को मिटा देती है।

❀

पत्ते समीर से कहते हैं—हम सबके शरीर को हठपूर्वक झकझोर कर तुम किसका सन्देश देते हो?

❀

निद्रा सन्तोष की चेरी है; वासना की बैरिन।

❀

सुन्दरता हृदय को आकर्षित कर लेती है। यदि दीपक की शिखा चमकीली न होती, तो पतिङ्ग उस पर क्यों निछावर होते?

❀

देश के दीवानों के लिए मृत्यु का भय कहाँ?

❀

माली गुलाब को पनपाता है, परन्तु वह उसकी सुरभि को अपने ही तक सीमित नहीं रख सकता। वह किसी भी समीर के झोंके के साथ बह जाती है।

❀

जिस मनुष्य को अपनी वाणी पर अधिकार नहीं, वह अपनी इच्छा पर क्या अधिकार रख सकता है?

❀

विद्युत-प्रकाश में दीपक मलिन पड़ जाता है।

❀

संसार में जो मनुष्य अपनी रक्षा नहीं कर सकता, वह सदैव स्वार्थी और अन्यायी मनुष्यों का शिकार बना रहेगा।

❀

चन्द्र-किरणें पत्तों और पुष्पों पर छोटी बालिका की भाँति आनन्द से थिरकती हैं।

❀

जीवन के तूफ़ान में मनुष्य मनोविकारों के साथ मारा-मारा फिरता है।

❀

बल-प्रयोग में बल का सदा क्षय होता है।

❀

हे मेरे प्रिय! मेरी आत्मा को त्राण दो। मेरी आत्मा प्रेम की वेदना तथा भार से वर्षा के मारे हुए पुष्प की शोभा की भाँति म्लान है। अब तो दर्शन देकर मेरी आत्मा को त्राण दो।

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास भेजे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बङ्गला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पत्नि-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र !

सफल माता

आज हमारे अभागे देश में शिशुओं की मृत्यु-संख्या अपनी चरम-सीमा तक पहुँच चुकी है। अन्य कारणों में माताओं की अनभिज्ञता, शिक्षा की कमी तथा शिशु-पालन सम्बन्धी साहित्य का अभाव प्रमुख कारण हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय गृहों की एकमात्र मङ्गल-कामना से प्रेरित होकर, सैकड़ों अङ्गरेज़ी, हिन्दी, बङ्गला, उर्दू, मराठो, गुजराती तथा फ्रेञ्च पुस्तकों को पढ़ कर लिखी गई है।

गर्भावस्था से लेकर ६-१० वर्ष के बालक-बालिकाओं की देख-भाल किस तरह करनी चाहिए, उन्हें बीमारियों से किस प्रकार बचाया जा सकता है, बिना कष्ट हुए दाँत किस प्रकार निकल सकते हैं, रोग होने पर क्या और किस प्रकार इलाज और शुश्रूषा करनी चाहिए, बालकों को कैसे वस्त्र पहनाने चाहिएँ, उन्हें कैसा, कितना और कब आहार देना चाहिए, दूध किस प्रकार पिलाना चाहिए, आदि-आदि प्रत्येक आवश्यक बातों पर बहुत उत्तमता और सरल बोल-चाल की भाषा में प्रकाश डाला गया है। मूल्य २); स्था० ग्रा० से १।।) मात्र !

छप रही है ! प्रकाशित हो रही है !!

[लेखक—अध्यापक ज़हूरबख़्श जी 'हिन्दी-कोविद']

'स्फुलिङ्ग' विद्याविनोद-ग्रन्थमाला की एक नवीन पुस्तक है। आप यह जानने के लिए उत्कण्ठित होंगे, कि इस नवीन वस्तु में है क्या ? न पूछिए कि इसमें क्या है ! इसमें उन अङ्गारों की ज्वाला है, जो एक अनन्त काल से समाज की छाती पर धधक रहे हैं, और जिनकी सर्व-संहारकारी शक्ति ने समाज के मन-प्राण निर्जीव-प्राय कर डाले हैं। 'स्फुलिङ्ग' में वे चित्र हैं, जिन्हें हम नित्य देखते हुए भी नहीं देखते और जो हमारे सामाजिक अत्याचारों का नग्न प्रदर्शन कराते हैं। 'स्फुलिङ्ग' देख कर समाज के अत्याचार आपके नेत्रों के सामने सिनेमा के फ़िल्म के समान घूमने लगेंगे। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि 'स्फुलिङ्ग' के दृश्य देख कर आपकी आत्मा काँप उठेगी, और हृदय ? वह तो एक-बारगी चीत्कार कर मूर्छित हो जायगा। 'स्फुलिङ्ग' वह वैतालिक रागिनी है, जो आपके सदियों के सोए हुए मन-प्राणों पर थपकियाँ देगी। 'स्फुलिङ्ग' में प्रकाश की वह चमक है, जो आपके नेत्रों में भरे हुए घनीभूत अन्धकार को एकदम विनष्ट कर देगी।

'स्फुलिङ्ग' में कुशल-लेखक ने समाज में नित्य घटने वाली घटनाएँ कुछ ऐसे अनोखे ढङ्ग से अङ्कित की हैं, कि वे सजीव हो उठी हैं। उन्हें पढ़ने से ऐसा बोध होता है, जैसे हमारे नेत्रों के सामने दीनों पर पाशविक अत्याचार हो रहा हो तथा हमारे कानों में उनकी करुण चीत्कार-ध्वनि गूँज रही हो। भाषा में ओज, माधुर्य और करुणा की त्रिवेणी लहरा रही है। हमारा अनुरोध है, कि यदि आपके हृदय में अपने समाज तथा देश के प्रति कुछ भी कल्याण-कामना शेष है, तो आज ही 'स्फुलिङ्ग' की एक प्रति ख़रीद लीजिए। पुस्तक छप रही है। शीघ्र ही ऑर्डर रजिस्टर करा लीजिए !

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक इलाहाबाद
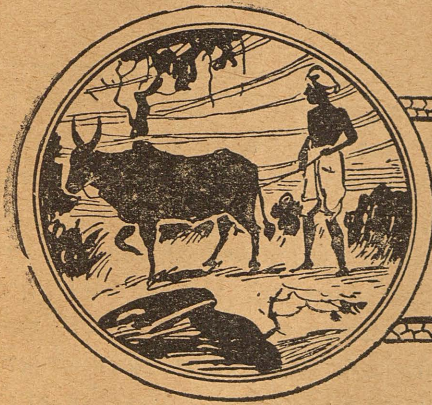
भारतीय भारत
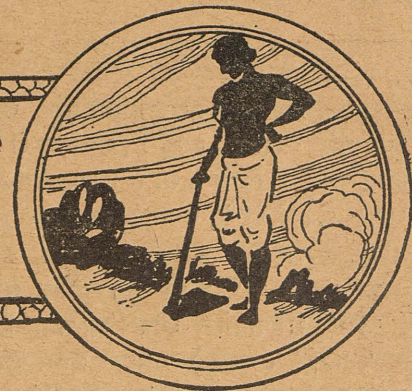
राजपूताना के जागीरदार

[एक भूतपूर्व उच्च कर्मचारी]
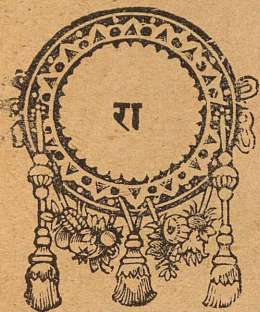
राजपूताने में जागीरदार लोग बड़े प्रभावशाली हैं। वहाँ इन्हीं का प्रभुत्व है और इन्हीं की प्रतिष्ठा ; इन्हीं के पास शक्ति है और इन्हीं के पास लक्ष्मी। रियासतों की नीति और शासन तथा पतन और उत्थान में इन जागीरदारों का बड़ा हाथ होता है। राज्य के ये स्तम्भ, हाकिमों के हाकिम और प्रजा के लिए निरन्तर व्याधि हैं।

अधिकांश जागीदार राजवंश के दूरस्थ या निकटस्थ सम्बन्धी होते हैं, और शेष वे लोग होते हैं जिन्होंने राजघराने की कोई विशेष सेवा की हो या किसी अवसर पर विशेष स्वामि-भक्ति का परिचय दिया हो। जब किसी महाराजा के एक से अधिक पुत्र होते हैं तो बड़े पुत्र को तो राज्यसिंहासन मिलता है और अन्य पुत्रों को प्रतिष्ठा-पूर्वक निर्वाह के लिए कुछ गाँव दे दिए जाते हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति विशेष को उसके निर्वाह के लिए या उसकी विशेष सेवाओं के लिए जो गाँव दिए जाते हैं, उसे 'जागीर' कहते हैं। जिसके पास 'जागीर' होती है वह 'जागीरदार' कहलाता है। महाराजा के छोटे पुत्रों में भी सबको बराबर जागीर नहीं मिलती। उनमें जो बड़ा होता है, उसे अधिक मिलती है और उससे छोटे को उससे कम। जिसके पास जितनी अधिक जागीर हो, उसे उतना ही राजवंश का निकटवर्ती सम्बन्धी समझना चाहिए, परन्तु सर्वत्र ऐसा नहीं है। कभी-कभी सङ्कट-समय में जिन लोगों ने असाधारण वीरता से या स्वामि-भक्ति से राजवंश की रक्षा की है, उनको राजा के सगे सम्बन्धियों से भी अधिक जागीरें दी गई हैं। जयपुर में खेतड़ी और सीकर के जागीरदार बहुत बड़े हैं, किन्तु राजगद्दी पर उनका कोई हक़ नहीं है। खेतड़ी और सीकर की वार्षिक आय लगभग बीस लाख रुपए है, परन्तु ये कहलाते हैं 'ठिकाने' (जागीरदार का मुख्य गाँव) ही। वर्तमान महाराजा जयपुर, जिस ठिकाने से गोद आए हैं, उसकी वार्षिक आय केवल १ लाख के लगभग है, परन्तु उसका सम्बन्ध राजवंश से अत्यन्त निकट का है। कोटा रियासत में सब से बड़ा ठिकाना या जागीर इन्द्रगढ़ है। परन्तु वर्तमान महाराव एक अत्यन्त साधारण परिवार से गोद आए हैं, जो राजवंश का नज़दीकी है। बीकानेर में यह बात नहीं है। वहाँ महाजन ठाकुर की जागीर सब से बड़ी है और वे ही महाराजा के निकटस्थ भाई हैं। उदयपुर और जोधपुर के भी सब से बड़े जागीरदार राजवंश से अत्यन्त दूर हैं।

जिन लोगों को विशेष सेवाओं के लिए जागीरें मिली हैं, वे सब राजपूत नहीं हैं और जो राजपूत हैं भी वे सब उस शाखा के नहीं हैं, जिसके हाथ में राज्य-सिंहासन है। राजपूत रियासतों में कितने ही ब्राह्मण, गूजर और मुसलमान तक जागीरदार हैं। टोंक, जो कि एक मुसलमानी रियासत है, वहाँ भी कई हिन्दू जागीरदार हैं। इनमें कई एक पुराने हैं और कई नए। जोधपुर में पण्डित सर शुकदेवप्रसाद, जयपुर में बाबू कान्तिचन्द्र मुकर्जी, और बूँदी में बाबू भट्टाचार्य अभी कल के जागीरदार हैं।

प्रत्येक रियासत में जागीरदारों की तीन श्रेणियाँ हैं। (१) ताज़ीमी, (२) नीमताज़ीमी, और (३) साधारण। ताज़ीमी जागीरदार या सरदार वह कहलाता है, जिसको महाराजा उठ कर अभिवादन करता है। नीमताज़ीमी का अभिवादन स्वीकार करते समय महाराजा पूरा नहीं उठता, किन्तु उठने की केवल चेष्टा मात्र करता है। साधारण जागीरदार की ओर महाराजा या तो थोड़ा सिर हिला देता है या केवल आँख से ही उसका अभिवादन स्वीकार कर लेता है। ताज़ीमी और नीमताज़ीमी सरदार एक पैर में सोने का ठोस कड़ा या 'लङ्गर' पहने रहते हैं, जो महाराजा का 'बख़्शा' (प्रदान किया) हुआ होता है। राजपूताने में यह सोने का कड़ा प्रतिष्ठा का सब से बड़ा चिह्न है। इन सरदारों की स्त्रियाँ भी राजप्रासादों में महारानियों के पास पैर में सुवर्ण के अलङ्कार पहन कर जा सकती हैं। अन्य लोगों का पैर में सोना पहनना राज-विद्रोह समझा जाता है, और ऐसे लोगों को भारी दण्ड मिलता है। कभी-कभी ऐसे लोगों को भी सोना पहनने की इजाज़त मिल जाती है जो जागीरदार तो नहीं, परन्तु सम्पन्न होते हैं और साथ ही महाराजा के विशेष कृपा-पात्र होते हैं। धनवान परिवारों की उन रमणियों को भी पैर में सोने का ज़ेवर पहनने की इजाज़त हो जाती है, जिनका राजमहलों में विशेष मान होता है। ऐसी महिलाओं के पतियों को भी सोना 'बख़्शा' दिया जाता है। पैर में सोना पहनने की इजाज़त देने को राजपूताने में "सोना बख़्शना" कहते हैं। जिन जागीरदारों के पैर में सोना नहीं होता, उनको इसकी बड़ी लालसा रहती है। जिन लोगों की महाराजा तक गति हो जाती है और प्रतिष्ठित बन जाते हैं, वे सुवर्ण-प्राप्ति के लिए बड़े लालायित रहते हैं। कुछ वर्ष पूर्व जब लेखक एक रियासत में उच्च कर्मचारी था तो एक विद्वान चारण (भाट) सज्जन ने सुवर्ण-प्राप्ति की बड़ी लालसा प्रकट की। सोना बख़्शने में महाराजा का कम से कम ५०० या ६०० रुपया ख़र्च होता है और महाराजा थे परले सिरे के कृपण, अतः उन्होंने स्वीकार नहीं किया। अन्त में यह ठहरा कि सोने का कड़ा स्वयं चारण महाशय अपने ख़र्चे से बनवा कर महाराजा को चुपके से दे दें और महाराजा उसको आम दरबार में चारण को बख़्श दें। इस प्रकार सोना प्राप्त करके ये सज्जन अत्यन्त प्रसन्न हुए। साथ ही महाराजा को भी कम ख़ुशी नहीं हुई।

जागीरदार अपने महाराजा को 'अन्नदाता' कह कर सम्बोधित करते हैं और महाराजा भी उनसे सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है। परन्तु कुछ महाराजे ऐसे भी हैं जो अपने जागीरदारों का सलाम तक नहीं लेते। ब्रिटिश-राज्य की स्थापना से पूर्व जागीरदारों की ख़ूब चलती थी। नरेश उन्हें अपनी सत्ता के स्तम्भ मानते थे और शासन-सञ्चालन बहुत कुछ उनके अधीन रहता था। रियासतों की सेवा में जागीरदार ही युद्ध के समय उच्चाधिकारी बनाए जाते थे। परन्तु सन् १८१८ के बाद से जागीरदारों की महत्ता क्षीण होने लगी। अङ्गरेज़ी सरकार ने रियासतों की, बाहरी शत्रुओं से रक्षा करने की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले ली, और आन्तरिक उत्पातों को शान्त करने में भी सहायता देने का वचन दे दिया। महाराजा के निस्सन्तान होने पर राज्यसिंहासन का उत्तराधिकारी कौन हो, इसका निर्णय भी सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया। ऐसी अवस्था में जागीरदार का काम ही क्या रह गया ? फलतः इस समय जागीरदार रियासत की शोभा मात्र हैं। वे राज-दरबार के अनावश्यक उपकरण बन गए हैं और इतिहासवेत्ताओं को अतीत काल का स्मरण मात्र दिलाते हैं।

इस समय महाराजा लोग जागीरदारों का वैसा सम्मान नहीं करते जैसा कि पूर्व समय में किया करते थे। महाराजा बीकानेर ने अभी कुछ समय पूर्व अपने राज्य के दो उच्च सरदारों को, जो उनके अत्यन्त निकटस्थ सम्बन्धी हैं, किसी कारण से अप्रसन्न होकर, देश से निर्वासित कर दिया है और उनका सर्वस्व छीन कर उन्हें बर्बाद कर डाला है। ये लोग जयपुर की राजमाता के भाई होते हैं; इसलिए वहाँ अपना जीवन-निर्वाह मात्र कर रहे हैं। एक अन्य जागीरदार को महाराजा बीकानेर ने किसी अपराध में क़ैद भी कर रक्खा है। जयपुर के भूतपूर्व महाराजा ने भी एक बड़े जागीरदार को किसी व्यक्तिगत मामले में अप्रसन्न होकर अपनी रियासत से निकाल दिया था, जो आजकल अपनी ससुराल काशी में बैठे हुए दिन व्यतीत कर रहे हैं। वर्तमान महाराजा जयपुर की गोदनशीनी का झगड़ा जिस समय चल रहा था, उस समय भूतपूर्व महाराजा जयपुर ने कई बड़े-बड़े जागीरदारों को उच्च पदों से हटा दिया था, उनकी जागीरें ज़ब्त कर ली थीं और उन पर भारी जुर्माना भी किया था। एक जागीरदार अर्से तक सलाम करने नहीं गया, इसलिए टोंक के नवाब ने उसकी जागीर ज़ब्त कर ली थी। नीमूचाणा के जागीरदार से कुपित होकर महाराजा अलवर ने तो उसके मकान पर तोपों के गोले तक बरसाए थे।

जब कोई जागीरदार निस्सन्तान मर जाता है तो उसके ठिकाने का किसको मालिक बनाया जावे या उसको रियासत में मिला लिया जावे, यह सब अधिकार महाराजा के हाथ में है। प्रायः मृतक जागीरदार की विधवा अपने पति-कुल में से किसी को गोद ले लेती है, परन्तु जब तक महाराज इसको स्वीकार न कर ले तब तक वह ठिकाने का मालिक नहीं समझा जाता। ऐसे अवसर पर ठिकाने की तरफ़ से महाराजा को जब ख़ासा नज़राना दिया जाता है, तब वह प्रसन्न होता है। जब कोई बड़ा जागीरदार मर जाता है तो

महाराजा उसके मकान पर सहानुभूति प्रकट करने जाते हैं। यह एक प्रकार का दस्तूर है, जो मृत्यु से १५ दिन के पश्चात् कभी भी किया जाता है। जब तक महाराजा यह दस्तूर पूरा न कर दें, तब तक मृतक जागीरदार का उत्तराधिकारी चाहे वह दत्तक हो या औरस, अपने सिर पर सफ़ेद पगड़ी बाँधे रहता है। सफ़ेद साफ़ा या पगड़ी बाँधना राजपूताने में शोक-चिह्न माना जाता है। परन्तु 'धाबाई' (गूजर) नाम के जाति वाले प्रायः सफ़ेद ही पगड़ी सदैव बाँधते हैं। यदि कोई जागीरदार अपने पिता की मृत्यु के बाद अधिक समय तक सफ़ेद पगड़ी पहने हुए दिखाई दे तो लोग समझने लगते हैं कि महाराजा उससे नाराज़ हैं। यों तो रियासतों में किसी के लिए भी कोई अटल और निश्चित क़ानून नहीं है, परन्तु जागीरदारों का मिताक्षरा और दायभाग तो महाराजा की ही वाणी है। प्राचीन हिन्दू रियासतों में परम्परागत शास्त्र-व्यवस्था का अभाव वास्तव में आश्चर्यकारी है। तभी तो इतिहासकार कहते हैं कि राजपूत वैदिक क्षत्रियों की सन्तानें नहीं हैं, बल्कि शक, हूँण और भीलों के वंशज हैं।

रहन-सहन में जागीरदार यथासम्भव अपने महाराजा का अनुकरण करता है। उसका मकान गढ़ कहलाता है और उसका अन्तःपुर रावला। उसके ज़नाने में उसी प्रकार दासियाँ होती हैं और उसकी व्यक्तिगत सेवा के लिए उसी प्रकार पासवान या दरोगा। विशेष अवसरों पर वह दरबार करता है और अपने कर्मचारियों तथा अन्य नौकरों से नज़रें लेता है। महाराजा के समान उसको भी शिकार और शराब का व्यसन होता है और एक स्त्री से शायद ही किसी जागीरदार को सन्तोष होता हो। खान-पान और रहन-सहन सब उसका राजसी ठाट का होता है। इस अनुकरण-प्रवृत्ति के कारण जागीरदारों की दशा अत्यन्त दयनीय और उपहास्य होती जा रही है। जागीरदारों में सीकर और खेतड़ी जैसे सम्पन्न ठिकाने अधिक नहीं हैं। जयपुर में प्रायः सब जागीरदार भरे-पूरे हैं, परन्तु परिमित और अल्प आय वाले जागीरदारों की संख्या किसी भी रियासत में कम नहीं है। लेखक ने ऐसे भी ताज़ीमी सरदार देखे हैं, जिनकी आय केवल पाँच सौ रुपए वार्षिक है। ऐसे लोग भी ज़नाने और मर्दाने का ढोंग, दास और दासी का आडम्बर तथा शिकार और शराब का चसका नहीं छोड़ते। इन पर भारी क़र्ज़ लदा रहता है और ये लोग वारुणी के प्रभाव में अपनी स्थिति की वास्तविकता को भूले रहते हैं। ऐसे निर्धन जागीरदारों के यदि दो-तीन पुत्र हो गए तो समस्या और भी अधिक कड़ी हो जाती है। ५००) की आय में से अधिकांश बड़े को मिलता है और १००) या १५०) रुपए छोटे को। इस प्रकार होते-होते कभी ताज़ीमी सरदार नितान्त अकिञ्चन और दरिद्रावस्था में पहुँच जाते हैं! शिक्षा और हुनर इन लोगों में है ही नहीं। अतः चपरासी, दरबान, बस्ताबर्दार और कोचवान आदि बन कर अपना निर्वाह करते हैं। तिस पर भी अपनी ताज़ीम की आन इनका पीछा नहीं छोड़ती। लेखक को मेरठा (जोधपुर) में इसका अत्यन्त रोचक दृष्टान्त मिला। एक सेठ के यहाँ एक राजपूत दरबान था। जब उससे कहा गया कि बक्स उठा कर अन्दर पहुँचा दो, तो उसने लाल-पीली आँखें करके कहा—"थें जाणूँ नहीं कि म्हूँ ताज़ीमी ठिकाणारो भाई हूँ।" लेखक को ऐसे लोगों के दर्शन करने का यह प्रथम सौभाग्य था, अतः उसके कुछ समझ में नहीं आया। फिर सेठ जी ने सब मतलब समझाया।

जैसे ब्रिटिश भारत में 'महाराज' शब्द की दुर्गति है, उसी प्रकार राजपूताने में "महाराजा" "ठाकुर" तथा "डीलाँ" शब्दों की दुर्दशा है। वास्तव में 'महाराजा' शब्द का प्रयोग "नरेश" के लिए ही होना चाहिए। परन्तु राजवंश के छोटे कुमार, जो जागीरदार बना दिए जाते हैं वे भी महाराजा ही कहलाते हैं। फिर उनके कई पुत्र होते हैं, तो छोटे पुत्रों को जागीर में से थोड़ा-थोड़ा भाग देकर अलग कर दिया जाता है। फिर भी यह लोग 'महाराजा' ही कहलाते रहते हैं। इस प्रकार अत्यन्त अकिञ्चन और दरिद्र हो जाने पर भी 'महाराजा' शब्द का रोग इनके चिपका ही रहता है। ब्रिटिश भारत में भोजन पकाने वाले 'महाराज' होते हैं, इसी प्रकार राजपूताने में पहरा देने वाले, और गाड़ी हाँकने वाले "महाराजा" होते हैं। "ठाकुर" और "डीलाँ" शब्द का प्रयोग नरेश के लिए नहीं होता, ये शब्द ख़ास जागीरदारों के लिए हैं। परन्तु नामधारी जागीरदारों को यदि इन शब्दों से अभिहित न करके उनके व्यक्तिगत नाम से पुकारा जावे तो कभी-कभी कलह उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है। महाराजा का लड़का 'महाराज-कुमार' और जागीरदार का लड़का 'कुँवर साहिब' कहलाता है। परन्तु लड़की चाहे राजवंश की हो या जागीरदार की, वह केवल "बाई साहब" ही कहलाती है—महाराजा की पुत्री को "महा-

हर रङ्ग के हम फूल चुना करते हैं

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बैठे हुए सर अपना धुना करते हैं,
अच्छी-बुरी बातों को सुना करते हैं।
है बाग़े-जहाँ में यही काम ऐ "बिस्मिल",
हर रङ्ग के हम फूल चुना करते हैं।

❀

हर वक्त नया राज़ सुना करता हूँ,
बजता हुआ एक साज़ सुना करता हूँ।
"बिस्मिल" नहीं ग़मख़्वार कोई दिल के सिवा,
आप अपनी ही आवाज़ सुना करता हूँ।

❀

दिल दिल से मिलाते थे मगर दिल न मिला,
आपस में मिला दे, कोई कामिल न मिला।
"बिस्मिल" नज़र आए हमें लाखों बिस्मिल,
यह बात तो है झूठ कि क़ातिल न मिला।

❀

वल्लाह यह मुश्किल कोई मुश्किल में नहीं,
रहबर की ज़रूरत किसी मञ्ज़िल में नहीं।
"बिस्मिल" भी पहुँच जायँगे गिरते-पड़ते,
जब शौक़ नहीं दिल में, तो कुछ दिल में नहीं।

बाई" नहीं कहा जाता। सब जागीरदारों की स्त्रियों को "ठकुराणी जी साहब" या "भीतर का सरदार" कहा जाता है। पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि राजपूताने में "राजा" शब्द का प्रचार अत्यन्त कम है। प्रसिद्ध जागीरदारों में केवल दो ही राजा कहलाते हैं। महाजन (बीकानेर) के राजा और जावली (अलवर) के राजा। कोई-कोई जागीरदार रावल, राव और रावत भी कहलाते हैं। कोटा राज्य के कुछ जागीरदारों के लिए "आपजी" शब्द व्यवहृत होता है, जैसे रावल संग्रामसिंह, राव गणपतसिंह, रावत नारायणसिंह और आपजी भूलसिंह।

जागीरदारों के रावले (अन्तःपुर) प्रायः विलास, कलह आदि पाशविकता की प्रयोगशालाएँ हैं। राजपूताने में शायद ही कोई जागीरदार हो, जिसने केवल एक ही विवाह किया हो। प्रत्येक जागीदार के घर में दो-तीन स्त्रियाँ विवाहिता होती हैं और कुछ "ख़्वासें"। जब कोई जागीरदार अपनी स्त्रियों की किसी दासी से या गाँव की अन्य किसी स्त्री से प्रेम करने लगता है और प्रत्यक्ष में इस कार्य को स्वीकार करने लगता है तो वह स्त्री 'ख़्वास' बन जाती है। दासियाँ और गाँव की स्त्रियाँ ठाकुर साहिब की ख़्वास बनने में अपना परम सौभाग्य समझती हैं। ख़्वास बन जाने पर वह स्त्री पर्दा करने लगती है और जागीरदारों के घर में उसका अधिकार माना जाने लगता है। ऐसी स्त्रियों से उत्पन्न होने वाली सन्तानें 'ख़्वासीणो भाई' या 'ख़्वासीणी बाई' कहलाती हैं। राजपूत इन लोगों को एक थाली में अपने साथ खाना नहीं खिलाते और जाति के पंक्ति में इनको दूर बैठना पड़ता है। ख़्वासों के अतिरिक्त अन्य दासियाँ के जाल में भी जागीरदार प्रायः फँसे रहते हैं। रावले में सबसे अधिक माहात्म्य शराब का रहता है। जागीरदार, उसकी ठकुराणी और ख़्वासें तथा प्रेम-पात्राएँ और कभी-कभी कुँवर साहिब और बाई साहिब तक शराब का सेवन करते हैं। जयपुर और जोधपुर में मद्यपान का बहुत ही प्रचार है। हमारा अनुमान है कि जागीरदारों में ५० प्रतिशत मौतें मद्यपान के कारण होती हैं। परस्पर ठकुराणियों में, ठकुराणी और ख़्वासों में, इनकी दासियों में और दासियों की सन्तानों में निरन्तर कलह बना रहता है। कई जागीरदारों में इतनी स्त्रियों के भरण-पोषण की शक्ति नहीं होती, इसलिए अनेक आर्थिक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। जागीरदार के विलासिता और पाशविकता से तङ्ग आकर ठकुरानियाँ अपने-अपने निर्वाह के वास्ते निश्चित मासिक रक़म माँगने लगती हैं, उधर ख़्वासों और पात्रियों का तक़ाज़ा होने लगता है, ठाकुर साहब को बाजीकरण औषधियों के लिए तथा अपने आन्तरिक रोगों का इलाज कराने के लिए निरन्तर एक विश्वसनीय वैद्य की आवश्यकता होने लगती है। उधर कुँवर साहिब की शादी हो जाने पर दो रावले बन जाते हैं और पिता की लीलाओं का अनुकरण पुत्र भी करने लगता है। खाना, पीना, ज़ेवर, सन्तान, सम्बन्ध, विवाह आदि सबके लिए रावलों में युद्ध रहा करता है। इन टण्टों का निवारण करने के लिए प्रायः रियासत को हस्तक्षेप करना पड़ता है।

जिस समय तीन स्त्रियों के पति और पाँच ख़्वासों के प्रेमी ठाकुर साहब ६५ वर्ष की अवस्था में एक २० वर्षीया यौवन-गर्विता रमणी को ब्याह कर घर पधारते हैं, तो अन्तःपुर में असली लङ्का-काण्ड आरम्भ हो जाता है। एक ओर बाजा बजता है, दूसरी ओर रोना आरम्भ होता है। दासियों के मङ्गल-गान और वञ्चित स्त्रियों के करुण-क्रन्दन के संयुक्त स्वर से 'बाबा-बधू' का अभिनन्दन होता है। वृद्ध ठाकुर और नव-विवाहिता बधू शीघ्र ही मद्य की तरङ्गों पर सवार होकर आलोचना-सागर से पार हो जाते हैं। इस प्रकार मद्य, विलास, कलह और अनेक पत्नियों तथा उप-पत्नियों से परिपूर्ण अन्तःपुर में अनाचार और व्यभिचार का होना कौन सी आश्चर्य की बात है? अतृप्त काम का दुर्दम्य आवेश कठोर पर्दे की दीवार और जागरूक दरबानों की तलवारों में भी मार्ग ढूँढ लेता है। इधर ठाकुर साहब दासियों पर मोहित होते हैं तो उधर ठकुराणी जी किसी पासवान (दास) पर प्राण न्यौछावर कर देती हैं। बहुत कुछ छिपाने पर भी ऐसी कई घटनाएँ प्रकट हो चुकी हैं। आख़िर मानव-हृदय की दुर्बलता, नैसर्गिक आवेग, क़ुदरती प्यास और मद्य द्वारा भड़की हुई कामाग्नि को भी तो कोई रास्ता चाहिए! हमारे शास्त्रकारों ने कहा है कि यौवन, सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक, इनमें से प्रत्येक विनाश करने के लिए पर्याप्त हैं। फिर जहाँ चारों का गुट हो वहाँ तो ख़ुदा हाफ़िज़!!

* * *

यूरोपीय सङ्गठन और शस्त्र-निरोध के थोथे प्रयत्न

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

देशों के प्रतिनिधि हैं। दूसरी कमिटी कृषि की उन्नति तथा कृषि-बैङ्क आदि सुविधाओं के विषय में अपनी विचारपूर्ण सम्मत पेश करेगी। तीसरी कमिटी का काम होगा, कार्य-प्रणाली निर्धारित करना। इन दोनों कमिटियों में भी प्रत्येक में, ११ देशों के प्रतिनिधि हैं। अन्तिम कमिटी कार्य-प्रणाली और तत्सम्बन्धी अन्य विषयों पर विचार करने के अतिरिक्त पासपोर्ट, डाकख़ाने, परदेशी व्यापारियों के साथ बर्ताव आदि कई अन्य विषयों पर भी अपनी राय देगी। सङ्गठन-कमिटी ने श्रीयुत ब्रियण्ड को यह अधिकार दे दिया है कि वह गेहूँ की निकासी करने वाले तथा ख़रीदने वाले देशों के प्रतिनिधियों की एक कमिटी बुला कर इस बात की योजना तैयार करें कि सन् १९३० के पुराने गेहूँ को क्या किया जावे। सङ्गठन-कमिटी ने सर्व-सम्मति से निम्न-लिखित प्रस्ताव भी पास किया है :—

"गत कुछ दिनों की बातचीत से यह विदित हुआ है कि भावी राजनैतिक स्थिति के विषय में जो व्यापक अविश्वास फैला है, उसके कारण वर्तमान आर्थिक कठिनाइयाँ हल नहीं होने पातीं। भावी अन्तर्राष्ट्रीय समर के विषय में नाना प्रकार की कल्पनाएँ हमारी सरकारों के मार्गों में सब से बड़े विघ्न हैं। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि यूरोप में इस समय अनेक राजनैतिक समस्याएँ उपस्थित हैं, जो विश्वव्यापी आर्थिक सङ्कट के कारण और भी उग्र बनती जाती हैं। ऐसी स्थिति में हमारा सर्व-प्रथम कर्तव्य यह है कि हम समस्त यूरोप को यह विश्वास दिला दें कि यूरोप में युद्ध होने की कोई वर्तमान सम्भावना नहीं है। अतः इक्कीस यूरोपीय राष्ट्रों के पर-राष्ट्र सचिवों या ज़िम्मेदार प्रतिनिधियों की हैसियत से हम सूचित करते हैं कि जब कभी लड़ाई का मौक़ा आया तो हम राष्ट्र-सङ्घ की मध्यस्थता का उपयोग करवा कर रक्तपात को रोक सकेंगे।"

उपर्युक्त प्रस्ताव से पता चलता है कि यूरोप का वायु-मण्डल कैसा है। पारस्परिक सङ्घर्ष के कारण किसी समय समराग्नि धधक सकती है। इसकी सम्भावना कम करने के लिए तथा आर्थिक गुत्थियों को सुलझाने के लिए ही यह यत्न किया जा रहा है कि यूरोप का सङ्गठन हो। सङ्गठन का आरम्भिक कार्य सन्तोषप्रद हुआ है। सम्पूर्ण देशों के प्रतिनिधि इस विषय में एकमत थे कि आर्थिक उलझनों को शीघ्रातिशीघ्र सुलझाने की आवश्यकता है। ये लोग आगामी मई मास में जेनेवा नगर में उपस्थित होंगे और उप-कमिटियों की रिपोर्टों पर विचार करेंगे। यदि सङ्गठन दृढ़ हो गया तो राष्ट्र-सङ्घ का अधिकांश समय यूरोपीय विषयों पर ही व्यय हुआ करेगा। लीग (राष्ट्र-सङ्घ) के इस स्वरूप-परिवर्तन के विषय में गत जनवरी में बीकानेर के महाराज सर गङ्गासिंह ने अपना धीमा विरोध प्रकट किया था। उनका कहना था कि लीग या तो सार्वभौम ही रह सकती है या यूरोपीय ही।

इधर यह हो रहा है और उधर यूरोप की आर्थिक समस्याएँ अधिकाधिक उलझती जाती हैं। प्रत्येक देश आयात पर कर बढ़ा रहा है। इस विषय में किसी सन्धि के प्रस्ताव पर कोई ध्यान नहीं देता और लीग के ध्येयों की सर्वत्र अवहेलना की जा रही है। सन् १९२७ से अब तक इस स्थिति को सुधारने के लिए निरन्तर प्रयत्न किया जा रहा है, पर सफलता प्राप्त नहीं होती। इस हालत को देख कर लीग के आर्थिक विभाग के विद्वान मन्त्री सर आर्थर साल्टर ने अपने पद से, दिसम्बर सन् १९३० में, इस्तीफ़ा दे दिया था। उनका कहना था कि पारस्परिक आर्थिक सङ्घर्ष के स्वार्थनाद में सर्वहित का उपदेश किसी को सुनाई नहीं देता। जिस समय यह इस्तीफ़ा पेश हुआ, उसी समय भारत-सरकार और चीन-सरकार ने लीग से प्रार्थना की कि उनकी आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए उनको कोई विशेषज्ञ दिया जावे। यह प्रार्थना लीग ने स्वीकार कर ली और सर आर्थर को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया गया। ये महाशय इस समय चीन में हैं और वहाँ आर्थिक समस्याओं को हल करने में चीन-सरकार को सहायता दे रहे हैं।

आगामी मई के अधिवेशन में लीग के सामने अनेक गम्भीर प्रश्न उपस्थित होंगे। इनमें सब से कड़े प्रश्न हैं, शस्त्र-निरोध और यूरोपीय सङ्गठन। शस्त्र-निरोध का प्रश्न पिछले दस बरस से लीग के हाथ में है, परन्तु इसका फ़ैसला होता हुआ दिखाई नहीं देता। बल्कि यह उत्तरोत्तर अधिक जटिल होता जा रहा है। संयुक्त अमेरिका, ब्रिटिश साम्राज्य और जापान में जल-सेना-निरोध के विषय में गत वर्ष के अन्त में समझौता हो चुका था, जिसकी घोषणा राष्ट्रपति हूवर ने बड़े दिन को की थी। इस समझौते में यह एक स्पष्ट शर्त थी कि फ़्रान्स और इटली इसके अनुसार आपस में समझौता करके अपनी सेनाएँ सीमित करें, तभी यह सफल हो सकता है। यदि ये दोनों देश अपनी-अपनी सेनाओं को बढ़ाते जावें तो अमेरिका, ब्रिटेन और जापान अपनी जल-सेनाओं को सीमित कैसे रख सकते हैं? फ़्रान्स और इटली में शस्त्र-निरोध विषयक पारस्परिक समझौता हो जावे, इस अभिप्राय से जल-सेना के विशेषज्ञ अङ्गरेज़ श्रीयुत क्रेग पेरिस और रोम में कुछ समय तक रहे, परन्तु फल कुछ नहीं हुआ। इटली और फ़्रान्स का पारस्परिक अविश्वास दिन-दिन बढ़ता जाता है और भावी संग्राम की तैयारी के लिए दोनों अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाते जाते हैं। इसलिए समझौते की बातचीत विफल हो गई और गत २० जनवरी को दोनों सरकारों ने इस विषय की एक विज्ञप्ति भी निकाल दी। दोनों देशों में पुनः तेज़ी के साथ शस्त्र-निर्माण होने लग गए हैं। यदि फ़्रान्स एक जहाज़ बनवाता है तो इटली भी फ़ौरन एक जहाज़ बनवाता है; यदि वहाँ एक तोप ढलवाई जाती है तो यहाँ भी वैसी ही तोप तैयार करवाई जाती है। इसको देखते हुए अमेरिका, ब्रिटेन व जापान का समझौता भी रद्द सा हो गया है। गत ४ फ़रवरी को हाउस ऑफ़ कॉमन्स में नौसेना के सरदार श्री० ए० बी० एलेक्ज़ेण्डर ने कहा था कि—"हमने फ़्रान्स और इटली को शस्त्र-निरोध के सिद्धान्तों को स्वीकार करवाने का भरसक यत्न किया है। परन्तु हम अपने प्रयास में विफल हो गए हैं, इसलिए अपनी स्थिति पर पुनः विचार करेंगे।

* * *

दीनबन्धु सी० एफ़० ऐण्ड्रयूज़

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

पढ़े-लिखे भारतवासियों में शायद ही कोई ऐसा हो, जिसने भारत-भक्त महात्मा ऐण्ड्रयूज़ का नाम न सुना हो या उनके भारत-प्रेम से परिचित न हो। क्योंकि अङ्गरेज़ होकर भी महात्मा ऐण्ड्रयूज़ भारत-प्रेमी—भारत-भक्त हैं और भारत की सेवा ही उनके जीवन का लक्ष्य है। अगर कभी ईश्वर की कृपा होगी, हम स्वतन्त्र होकर अपने इन दुर्दिन के सहायकों तथा हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने का सुअवसर पा सकेंगे, तो उस समय हमें सब से पहले महात्मा ऐण्ड्रयूज़ का नाम याद आएगा। क्योंकि ऐसे महापुरुषों में आपका ही आसन सर्वश्रेष्ठ है और आपने ही इस पर-पद-दलित, पराधीन और दुख-दैन्य-पीड़ित देश के उद्धार के लिए सब से अधिक और सब से पहले चेष्टा की है। अङ्गरेज़ होकर भी अङ्गरेज़ों के स्वार्थपरता-पूर्ण पञ्जे से भारत-भूमि को विमुक्त करने में महात्मा ऐण्ड्रयूज़ ने घोर परिश्रम किया है। हमारे वे लाखों अभागे भाई, जो विदेशों में तरह-तरह की लाञ्छनाएँ सहते हैं, जिन्हें हम 'प्रवासी-भारतवासी' के नाम से याद करते और जिनके घोर अपमान की रोमाञ्चकारी कहानी सुन कर, विवशता के अश्रु बहाया करते हैं, उनके लाञ्छना और अपमान के इतिहास से इस ईसाई साधु का बड़ा ही घनिष्ट सम्बन्ध है। भारत-माता के इन अभागे पुत्रों को विदेशियों की घृणित विद्वेषाग्नि से बचाने के लिए महात्मा ऐण्ड्रयूज़ ने केवल कठिन परिश्रम ही नहीं किया है, बल्कि अपना समस्त जीवन अर्पण कर दिया है और यथेष्ट लाञ्छन और अपमान भी भोग चुके हैं। शर्तबन्द मज़दूर-प्रथा का मूलोच्छेद करने में इस महापुरुष ने जो काम किया था, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। यदि अत्युक्ति न समझी जावे तो हम कहेंगे कि यदि महात्मा ऐण्ड्रयूज़ न होते तो उस घृणित प्रथा का अस्तित्व भी इस धराधाम से विलुप्त न होता।

वास्तव में वह हृदय बड़ा ही गुणग्राही और कृतज्ञ है, जिसने सब से पहले महात्मा ऐण्ड्रयूज़ को 'दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज़' की अवस्था प्रदान की थी। क्योंकि 'दीनबन्धुता' ही आपके जीवन का प्रधान लक्ष्य है। दीन-दुखियों की सेवा करने में आप अपार सुख का अनुभव करते हैं। प्राणिमात्र को कष्ट में देख कर आपका हृदय द्रवीभूत हो उठता और आँखें पसीज जाती हैं। फिर तो आप सब कुछ भूल कर उसकी सेवा में लग जाते हैं। हमारे इस कथन की पुष्टि केवल एक घटना से ही हो जाती है।

दक्षिण अफ़्रिका के प्रवासी भारतवासियों पर निर्दयी और निष्ठुर गोरों का घोर अत्याचार जारी था। दक्षिण अफ़्रिका के ऊजड़, अनुर्वर भूमि को मानव-वासोपयोगी बनाने के अपराध (!!!) में वहाँ के स्वार्थपर गोरे भारतीयों का मूलोच्छेद करने पर तुले हुए थे। महात्मा गाँधी ने इन अत्याचारों के प्रतिकार के लिए सत्याग्रह संग्राम जारी कर दिया था। महात्मा ऐण्ड्रयूज़ उनके प्रधान सहकर्मी के रूप में उनकी सहायता कर रहे थे और उनकी वृद्ध माता इङ्गलैण्ड में मृत्यु-शय्या पर पड़ी थीं। उनकी बुढ़ौती की लाठी—उनका प्यारा ऐण्ड्रयूज़ उनसे हज़ारों कोस दूर था। इस समय माता को उसकी तथा उसकी सेवाओं की बड़ी आवश्यकता थी। जीवन के अन्तिम दिन थे। पक्का आम कब चू पड़े, कौन जानता था? महात्मा ऐण्ड्रयूज़ ने दुर्दशाग्रस्त प्रवासी भारतीयों तथा उन पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों का हाल माता को लिखा और पूछा—"क्या मैं आपके पास आकर आपकी सेवा-शुश्रूषा करूँ?" माता—विश्व-माता—ने उत्तर दिया—"नहीं, भारतीयों की सहायता करो और जब तक तुम्हारा काम समाप्त न हो जाय, तब तक मत आओ!" धन्य हो करुणामयी—स्नेहमयी और धन्य है, तुम्हारा पुत्र!

दीनबन्धु को भारतीय बच्चों और भारतीय विद्यार्थियों से अपार प्रेम है। समय-समय पर उनके कल्याण के लिए भी आप बहुत-कुछ किया करते हैं।

आख़िर 'चाँद' में गुण क्या है ?

'चाँद' के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखाना सद्विचारों को आमन्त्रित करना है ।

'चाँद' ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली पत्र रहा है, जिसने अपने थोड़े से ही जीवन में समाज तथा देश में खलबली मचा दी है ।

'चाँद' की प्रशंसा सभी श्रेणी के विचारशील व्यक्तियों, राजाओं, महाराजाओं, बड़े-बड़े प्रसिद्ध नेताओं और आला अफ़सरों ने की है । सभी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं ने जितनी प्रशंसा 'चाँद' की की है, उतनी किसी पत्र को नहीं ।

'चाँद' ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली एवं भाग्यशाली पत्र है, जो निर्धन की कुटिया से लेकर राजा-महाराजों की अट्टालिकाओं तक आपको मिलेगा ।

'चाँद' तथा इस संस्था ने पत्र-पत्रिकाओं तथा अपने प्रकाशनों द्वारा थोड़ी-बहुत—जो भी सेवा भारतीय समाज और देश की की है, वह सहज ही विस्मरण करने की बात नहीं है ।

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में आपको गम्भीर से गम्भीर राजनैतिक एवं सामाजिक लेखमालाओं के अतिरिक्त, सैकड़ों एकरङ्गे, दुरङ्गे और तिरङ्गे चित्र तथा कार्टून मिलेंगे, जो किसी भी पत्र-पत्रिका में आपको नहीं मिल सकते ।

'चाँद' में प्रकाशित कविताओं के सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है । जिस पत्रिका की उर्दू शायरी का सम्पादन कविवर "बिस्मिल" करते हों और हिन्दी कविताओं का सम्पादन करते हों कविवर आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव और प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, जैसे सुविख्यात कवि, उस पत्रिका की कविताओं से कौन टक्कर ले सकता है !

'चाँद' में प्रकाशित लेखों के सम्बन्ध में पाठकों को स्वयं निर्णय करना चाहिए । हम इस सिलसिले में केवल इतना ही निवेदन करना चाहते हैं, कि सभी सुप्रसिद्ध लेखकों का अभिन्न सहयोग 'चाँद' को प्राप्त है । फिर श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, श्री० विजयानन्द (दुबे जी) और हिज़ होलीनेस श्री० १०८ श्री० जगद्गुरु के चुटीले विनोद आपको किस पत्र-पत्रिका में मिलेंगे !!

❀ ❀ ❀

यदि अभी तक आप 'चाँद' के ग्राहक नहीं हैं, तो इन्हीं पंक्तियों को हमारा निमन्त्रण समझें और इष्ट-मित्रों सहित 'चाँद' के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा कर हमें और भी उत्साह से सेवा करने का अवसर प्रदान करें ।

विज्ञापनदाता भी भरपूर लाभ उठा सकते हैं

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

महात्मा ऐण्ड्रयूज़ सरलता, साधुता, सत्यता और सहृदयता की मूर्ति हैं। आपके अपार गुणों और भारत-सेवा सम्बन्धी कार्यों का वर्णन इस छोटे से लेख में नहीं हो सकता और न वैसा करके सागर को गागर में भरने का हास्यास्पद प्रयास करना हमारा उद्देश्य ही है। हम तो नीचे लिखी पंक्तियों में उनका थोड़ा सा परिचय मात्र 'भविष्य' के पाठकों को देना चाहते हैं और साथ ही उनसे यह अनुरोध करना चाहते हैं कि वे एक बार महात्मा ऐण्ड्रयूज़ का सम्पूर्ण जीवन-चरित अवश्य पढ़ जायँ।*

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

श्री० ऐण्ड्रयूज़ का पूरा नाम चार्ल्स फ्रीअर ऐण्ड्रयूज़ है। आपका जन्म सन् १८७१ की १२ फ़रवरी को इङ्गलैण्ड के कार्लाइल नामक नगर में हुआ था। आपके पितामह जॉन ऐण्ड्रयूज़ एक नामी शिक्षक और बड़े दयालु थे। ईसाई धर्म के जिस सम्प्रदाय में आपका जन्म हुआ था, उसके सिद्धान्त आपके अन्तःकरण के विरुद्ध थे, इसलिए आप उसे परित्याग करके दूसरे सम्प्रदाय में सम्मिलित हो गए थे। परन्तु ऐसा करने के कारण आप को बड़ी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी और आप नितान्त निर्धन हो गए। यहाँ तक कि उस निर्धनता ने अन्त तक आपके परिवार का पिण्ड नहीं छोड़ा।

आपके पिता जॉन ऐड्विन ऐण्ड्रयूज़ भी पिता की भाँति ही सरल स्वभाव और स्वतन्त्र विचार के थे तथा उन्हीं की तरह अपने सम्प्रदाय का त्याग किया था। फलतः इस मत-परिवर्तन के कारण आपको भी निर्धनता आदि कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

श्री० ऐण्ड्रयूज़ की माता का नाम मेरी शार्लोट था। आप एक आदर्श ईसाई रमणी थीं। विमल मातृ-स्नेह से आपका हृदय ओत-प्रोत था, आपके पाँच लड़के और नौ लड़कियाँ हुईं। हमारे चरित-नायक अपने माता-पिता की चौथी सन्तान हैं। बाल्यावस्था में ही आपके माता-पिता आपको धार्मिक शिक्षा दिया करते थे। छोटी ही उमर में इन धर्मोपदेशों का आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसके लिए आप अपने माता-पिता के अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

नौ वर्ष की उमर में आपको पढ़ने के लिए स्कूल में भर्ती कराया गया। इससे पहले घर पर ही पढ़ा-लिखा करते थे। यद्यपि बीमारी आदि के कारण लड़कपन में आप बड़े दुर्बल थे। परन्तु आपकी मेधा-शक्ति तीव्र थी। स्कूल की शिक्षा समाप्त करके आपने कॉलेज में अध्ययन आरम्भ किया और २५ वर्ष की उमर में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की अन्तिम परीक्षा में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए। विद्यार्थी-जीवन में आपको बराबर छात्र-वृत्तियाँ और पारितोषिक आदि मिलते रहे।

विद्यार्थी-जीवन में पाठ्य पुस्तकों के सिवा आप बाहरी पुस्तकें भी बहुत पढ़ा करते थे। लैटिन और ग्रीक भाषा में कविता करने का भी आपको बड़ा शौक़ था। बहुत पढ़ने तथा गम्भीरतापूर्वक रहने के कारण सहपाठियों ने आपको 'प्रोफ़ेसर' की उपाधि दी थी। इसके सिवा आप चित्र-कला के भी बड़े प्रेमी थे और इसके लिए आर्ट स्कूल से कई बार पारितोषिक भी प्राप्त किया था।

आपके सहपाठी अपने स्कूल से एक मासिक पत्र निकाला करते थे। आपको उससे बड़ा प्रेम था और बहुत दिनों तक आप उसके सहकारी सम्पादक भी रहे।

* मि० ऐण्ड्रयूज़ का 'एक भारतीय आत्मा' लिखित विस्तृत और विश्वस्त जीवन-चरित, दाम २) । मिलने का पता—व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद।

श्री० ऐण्ड्रयूज़ का भारत-प्रेम

भारत से श्री० ऐण्ड्रयूज़ की सहानुभूति बहुत दिनों से है। आप अपनी बहुत छोटी उमर में अपनी माता से कहा करते थे—"माँ, मैं हिन्दुस्तान जाऊँगा।" आपने सुन रक्खा था कि हिन्दुस्तानी चावल अधिक खाते हैं, इसलिए आप भी बहुधा अपनी माता से चावल बनवा कर खाया करते थे। जब आप भात खाने बैठते तो आपकी माता हँसती और कहती—चार्ली, तुम कभी न कभी हिन्दुस्तान अवश्य जाओगे। जब आप कॉलेजों में पढ़ते थे, उन दिनों आपकी भारत जाने की लालसा और भी बढ़ गई थी। कारण यह था कि उन्हीं दिनों आपके एक मित्र मि० वैसिल वैस्टकौट केम्ब्रिज-मिशन के मिशनरी बन कर भारत आए थे। उस समय आपकी बड़ी इच्छा थी कि आप भी उनके साथ भारत आवें। मि० वैसिल वैस्टकौट स्वयं भी भारत-भक्त थे और प्रसङ्ग आने पर मि० ऐण्ड्रयूज़ से भारत की प्रशंसा किया करते थे। उनकी बातों का ऐण्ड्रयूज़ साहब के मन पर विशेष प्रभाव पड़ता था और तभी से आप भारत के प्रेमी बन गए। आपके एक और साथी मि० ई० डी० ब्राउन थे! ये पूर्वीय देशों की कई बार यात्रा कर चुके थे। उन्होंने भारतवर्ष भी देखा था। श्री० ऐण्ड्रयूज़ रात के एक-एक बजे तक उनकी यात्रा की मनोरञ्जक कहानियाँ सुना करते थे। इसके सिवा भारत से लौटे हुए ईसाई-

"सी० एफ़० ऐण्ड्रयूज़ से ज़्यादा सच्चा, उनसे बढ़ कर विनीत, और उनसे बढ़ कर भारत-भक्त इस भूमि में दूसरा कोई देश-सेवक विद्यमान नहीं।"

—म० गाँधी

"केवल एक अङ्गरेज़ ऐसा है, जिसका नाम हमें कृतज्ञतापूर्वक लेना चाहिए और वह है मि० सी० एफ़० ऐण्ड्रयूज़। वे अब हमीं में से एक हैं।"

—ला० लाजपतराय

"रेवरेण्ड ऐण्ड्रयूज़ केवल हमारे मध्य ही नहीं रहते, बल्कि वे हमारे ही हैं।"

—श्री० विजय राघवाचार्य

मिशनरियों से भी आप मिला करते और उनसे भारत के सम्बन्ध में बातचीत किया करते थे। ये लोग भारत का बड़ा ही अन्धकारमय चित्र खींचा करते थे।

श्री० ऐण्ड्रयूज़ के मन पर इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता था और भारत देखने की उनकी अभिलाषा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी।

दीन-सेवा और धर्म-प्रचार

विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद आपने दीन-दुखियों की सेवा की ओर मन लगाया और सण्डरलैण्ड तथा वालसवर्थ आदि स्थानों में प्रायः चार वर्षों तक बड़ी लगन के साथ यह कार्य करते रहे। इसके बाद आप धर्म-प्रचारक (पादड़ी) बने। आपकी प्रवृत्ति स्वभावतः ही धार्मिक थी। इसीलिए आपने धर्म-प्रचार तथा दीन-दुखियों की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। आपने ऊँची परीक्षा पास की थी। अगर चाहते तो कोई अच्छी नौकरी मिल जाती अथवा कोई और ही व्यवसाय करके धनवान और सुखी बन जाते। परन्तु आपको लक्ष्मी का ग़ुलाम बनना पसन्द नहीं था। आप लन्दन के मज़दूरों का दुख दूर करने की चेष्टा में लगे और चार वर्ष तक उन्हीं के साथ, उन्हीं की सेवा और सहायता में लगे रहे। इन मज़दूरों की दशा बड़ी दयनीय थी। दुराचार और दुर्व्यसन के ये शिकार बन गए थे। इनकी स्त्रियाँ तक शराबख़ोरी किया करती थीं। श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने बहुत दिनों तक इनके साथ रह कर इनका सुधार किया!

भारत-यात्रा

मज़दूरों की सेवा में अत्यधिक परिश्रम करने के कारण श्री० ऐण्ड्रयूज़ का स्वास्थ्य बिगड़ गया। इसलिए डॉक्टरों की सलाह से आप केम्ब्रिज लौट आए और पैम्ब्रोक कॉलेज के फ़ैलो बन गए। यहाँ आप अध्यात्म-विद्या (Theology) का अध्ययन करते और धर्म के इतिहास पर व्याख्यान दिया करते थे। इसके सिवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में धर्म-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ा करते थे। इस समय आपका जीवन बड़ी शान्ति और आराम से व्यतीत होता था, परन्तु भारत-प्रेम ने आपको इस अवस्था में अधिक दिनों तक नहीं रहने दिया। आपने भारत आने की तैयारी आरम्भ कर दी। मित्रों ने मना किया, परन्तु आपने उसका कुछ ख़्याल नहीं किया। माता, भाइयों, बहिनों तथा अपने प्यारे मज़दूरों से मिल कर आप भारत के लिए चल पड़े।

इस समय एक बड़ी मज़ेदार घटना हुई। आप वालसवर्थ में अपने ग़रीब भाई-बहिनों (मज़दूरों) से मिलने गए। ये बिलकुल अशिक्षित और दक़ियानूसी विचार के थे। एक बुढ़िया ने, जो इन्हें अत्यधिक प्यार करती थी, जब सुना कि आप भारत जा रहे हैं, तो आँखों में आँसू भर कर कहने लगी—"मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान वाले आदमियों को खा जाते हैं। मैं रात-दिन तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी कि वे तुम्हें न खा जाएँ।"

ऐण्ड्रयूज़ को इस पर बड़ी हँसी आई। उन्होंने भोली बुढ़िया को समझाया कि प्रायः हिन्दू लोग किसी प्रकार का मांस छूते भी नहीं। तब उसे सन्तोष हुआ।

२७ फ़रवरी, १९०४ को, अपनी आयु के ३४वें वर्ष में आपने इङ्गलैण्ड से भारत के लिए प्रस्थान किया और २० मार्च को भारत पहुँचे। उस दिन को आप एक पवित्र दिन मानते और कभी-कभी उसकी याद किया करते हैं।

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रेम

भारत आने पर मि० ऐण्ड्रयूज़ दिल्ली के मिशनरियों के सेण्ट स्टीफ़ेन्स कॉलेज में प्रोफ़ेसर हुए। कॉलेज के अधिकारियों ने आपको कॉलेज के प्रिन्सिपल का पद देना चाहा। परन्तु उस पद के अधिकारी कोई श्री० सुशील-कुमार रुद्र थे, इसलिए आपने उसे स्वीकार नहीं किया। स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि अगर श्री० रुद्र को वह पद न दिया जायगा, तो मैं कॉलेज से कोई सम्बन्ध न रक्खूँगा।

यहाँ आने पर यूरोपियनों ने आपको समझाया कि काले आदमियों से कदापि न दबना और न उनको बराबरी का दर्जा प्रदान करना। परन्तु आपने ऐसे सङ्कीर्ण विचारों को कभी भी प्रश्रय नहीं दिया।

एक बार गर्मी के दिनों में आपको दिल्ली से शिमला आने का अवसर मिला। यहाँ का चरित्र—अङ्गरेज़ों की फ़िज़ूलख़र्ची देख कर आपको बड़ा आश्चर्य हुआ। आपने अपनी एक पुस्तक में लिखा है—हिन्दुस्तान जैसे दरिद्र देश में, जहाँ लाखों आदमी भूखों मरते हैं, लाखों आदमियों को भरपेट मोटा अन्न भी नहीं मिलता, वहाँ ऐङ्ग्लो-इण्डियनों की फ़िज़ूलख़र्ची और भोग-विलास-पूर्ण जीवन वास्तव में बड़ा ही निन्दनीय है।"

सन् १९०६ में आप सनावर के फ़ौजी विद्यालय में अध्यापक थे। उन दिनों लाहौर का 'सिविल एण्ड मिलेटरी गज़ट' भारतवासियों की बड़ी निन्दा किया करता था। श्री० ऐण्ड्रयूज़ को इस पर बड़ा क्रोध आया और उन्होंने कई ज़ोरदार लेख लिख कर उसके विचारों का खण्डन किया। इसी समय से आपका झुकाव भारतीय

राष्ट्रीयता की ओर हुआ। इसी समय आपने 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में भारत की राष्ट्रीयता पर एक गवेषणापूर्ण निबन्ध लिखा, जो भारत के राजनीतिज्ञों में बड़े ध्यान और आदर के साथ पढ़ा गया था।

इस साल कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ था। केम्ब्रिज मिशन के अधिकारियों के मना करने पर भी आप इस कॉङ्ग्रेस में शामिल हुए। पहले-पहल 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग इसी कॉङ्ग्रेस में हुआ था। यहीं आपकी स्वर्गवासी गोपालकृष्ण गोखले से पहले पहल मुलाक़ात हुई थी। इस कॉङ्ग्रेस का एक महत्वपूर्ण वर्णन आपने अख़बारों में लिखा था। कॉलेज के अधिकारियों को श्री० ऐण्ड्रयूज़ का भारतीयों के राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्ध रखना बहुत बुरा मालूम होता था और इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १९१४ में आप कॉलेज से अलग हो गए।

इस सम्बन्ध में और भी कई मज़ेदार बातें हुईं। आपके भारत-प्रेम की ख़बर लाट साहब तक पहुँची। लाट साहब सख़्त नाराज़ हुए और लॉर्ड बिशप को लिखा कि क्या उस आदमी (मि० ऐण्ड्रयूज़) में मनुष्यत्व भी नहीं है? 'सिविल ऐण्ड मिलेटरी गज़ट' ने आपको 'भयङ्कर आन्दोलनकारी' की पदवी दी। अस्तु।

इन्हीं दिनों सरकार ने लाला लाजपतराय को देश से निर्वासित करके मण्डाले भेज दिया। मि० ऐण्ड्रयूज़ ने अपने लेखों और व्याख्यानों में इसकी घोर निन्दा की। जिस समय लाला जी का छुटकारा हुआ, उस समय ऐण्ड्रयूज़ साहब दिल्ली के सैण्ट स्टीफ़ेन्स कॉलेज के प्रोफ़ेसर थे। कॉलेज के प्रिन्सिपल अनुपस्थित थे। विद्यार्थी प्रोफ़ेसर साहब के पास पहुँचे और कहा कि हम अपने श्रद्धेय नेता के छुटकारे की ख़ुशी में रोशनी करना चाहते हैं। ऐण्ड्रयूज़ साहब ने प्रसन्न होकर कहा—"अवश्य आप लोग ख़ूब दीवाली मनाइए, इसके साथ ही दीवाली का सामान लाने के लिए आपने पास से पैसे भी दिए। इससे दिल्ली का यूरोपियन समाज आप पर सख़्त नाराज़ हुआ। सरकार के रिज़्ले सरक्यूलर की आपने कड़ी निन्दा की थी। अन्त में तो भारतीय अन्दोलन का आप पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आपने मिशन से इस्तीफ़ा दे दिया और सारा समय भारत की हित-चिन्ता में व्यय करने लगे! साथ ही सरकार की पुलिस भी आपको राजद्रोही समझने लगी और सी० आई० डी० वालों ने आपकी कड़ी रखवाली आरम्भ की

दक्षिण अफ़्रिका की यात्रा

इस समय श्री० ऐण्ड्रयूज़ श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बोलपुरस्थ शान्ति-निकेतन में रह कर शान्तिमय जीवन बिताना चाहते थे। परन्तु उसी समय महात्मा गाँधी ने दक्षिण अफ़्रिका का सुप्रसिद्ध सत्याग्रह संग्राम आरम्भ कर दिया। इसकी ख़बर पाते ही श्री० ऐण्ड्रयूज़ श्री० गोखले महाशय से सलाह लेकर दक्षिण अफ़्रिका चले गए और महात्मा गाँधी के लेफ़्टिनेण्ट के रूप में, बड़ी तत्परता के साथ इस संग्राम में भाग लिया। दुख है कि उस अपूर्व संग्राम का विवरण इस छोटे से लेख में देना सम्भव नहीं है, इसलिए इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि इस महान अवसर पर महात्मा ऐण्ड्रयूज़ ने जिस त्याग, लगन और भारत-प्रेम का परिचय दिया था, वह अलौकिक, अद्भुत और उनकी महत्ता का परिचायक है। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि इस संग्राम में मि० ऐण्ड्रयूज़ और मि० पोलक महात्मा गाँधी की दोनों भुजाएँ थे। दक्षिण अफ़्रिका के अत्याचारियों के कराल कवल से भारत-वासियों की रक्षा करने में इन दोनों अङ्गरेज़ वीरों ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया था। उस समय मि० ऐण्ड्रयूज़ की स्नेहमयी जननी बीमार थीं। आपका उनकी सेवा के लिए इङ्गलैण्ड जाना अत्यावश्यक था। परन्तु दक्षिण अफ़्रिका के विपद्-ग्रस्त भारतीयों की सेवा छोड़ कर आप माता की सेवा करने नहीं गए। माता ने भी वहीं रहने की आज्ञा दे दी। जनरल स्मट्स के साथ महात्मा गाँधी का समझौता कराने में भी श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने बड़ी चेष्टा की। समझौता हुआ और उसके कुछ दिन बाद ही आपकी माता का देहान्त हो गया।

दक्षिण अफ़्रिका का सत्याग्रह-संग्राम समाप्त हो जाने पर आप अपने पिता का दर्शन करने इङ्गलैण्ड गए और वहाँ से फिर भारत लौट कर क़ुली-प्रथा बन्द कराने की चेष्टा में लगे। उसके बाद फ़िजी गए और वहाँ के भारतीयों की सेवा की। क़ुली-प्रथा को बन्द कराने में श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने स्तुत्य प्रयत्न किया था। इसके बाद मलाया स्टेट के भारतवासी मज़दूरों की दुर्दशा दूर करने में लगे।

पञ्जाब में श्री० ऐण्ड्रयूज़ के कार्य

रौलट ऐक्ट के कारण पञ्जाब जिन अमानुषिक अत्याचारों का शिकार बना था, वह एक इतिहास-प्रसिद्ध घटना है। इस समय श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने पञ्जाब की बड़ी सेवा की थी। इस सम्बन्ध में 'एक भारतीय हृदय' लिखते हैं:—

"इसमें सन्देह नहीं, कि पञ्जाब की आपत्ति के दिनों में श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने पञ्जाबी भाइयों की जो सेवा की, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।"

अन्यान्य कार्य

वास्तव में भारत श्री० ऐण्ड्रयूज़ का चिरऋणी है और शायद इससे कभी मुक्त भी नहीं हो सकता। दक्षिण अफ़्रिका, पूर्व अफ़्रिका, फ़िजी, सीलोन, चाँदपुर तथा अन्यान्य स्थानों के अत्याचार-पीड़ित भारतीय मज़दूरों की सहायता के लिए जितना परिश्रम श्री० ऐण्ड्रयूज़ ने किया है, उतना किसी भारतीय ने भी न किया होगा। आप नीरव-कर्मी हैं; चुपचाप काम करना अधिक पसन्द करते हैं। आपकी वाणी और लेखनी में अपूर्व शक्ति है। आप साहित्य के भी परम प्रेमी और अच्छे कवि हैं। आपने बहुत सी पुस्तकें भी लिखी हैं और लिखते रहते हैं। परन्तु आपका प्रत्येक कार्य दीन-दुखियों की सेवा के लिए ही होता है। आपका रहन-सहन भारतीय और स्वभाव सरल है। इसीलिए महात्मा गाँधी ने आपको 'दीनबन्धु' की उपाधि से विभूषित किया है और विश्व-प्रेमी कवि-सम्राट श्री० रवीन्द्र गाते हैं:—

प्रतीचीर तीर्थ हते प्राणरस धार,
हे बन्धु, एनेछो तुमि, करि नमस्कार।
प्राची दिलो कण्ठे तव बरमाल्य तार,
हे बन्धु, ग्रहण करो, करि नमस्कार।
खुलेछे तोमार प्रेमे आमादेर द्वार,
हे बन्धु प्रवेश करो, करि नमस्कार।
तोमारे पेयेछि मोरा दान रूपे जाँर,
हे बन्धु, चरणे तार करि नमस्कार।

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

बाद मुद्दत के राज़ अफ़शा हुआ ! आख़िरश मियाँ ज़हूर अहमद साहब ने दिल की बात कह ही डाली। हम भी सोचा करते थे कि या इलाही, माजरा क्या है? क्यों कुछ मुसलमान भाई पृथक् निर्वाचन के लिए मत्था पटक रहे हैं? परन्तु कुछ समझ में ही नहीं आता था।

❀

परन्तु भगवान—लाहौल बिला क़ूव्वत तौबा इल्ला-बिल्ला, ख़ुदा—भला करे मियाँ ज़हूर साहब का, आपने पृथक् निर्वाचन के सारे समीचीन कारणों को एक साथ ही उगल कर सारा भ्रम दूर कर दिया है। अब ज़रा दिल लगा कर उन्हें सुन लीजिए और मियाँ साहब को दाद पर दाद देना आरम्भ कर दीजिए। ख़बरदार, जो इस मामले में ज़रा भी कञ्जूसी कीजिएगा तो मियाँ साहब नाराज़ हो जाएँगे।

❀

हाँ तो आप फ़रमाते हैं—(१) मुसलमानों की ज़बान उर्दू है और कॉङ्ग्रेस समर्थन करती है हिन्दी का, (२) मुसलमान मांस खाते हैं और पं० जवाहरलाल तथा गाँधी जी जैसे आदमी मांस खाना छोड़ रहे हैं, (३) कॉङ्ग्रेस वाले मुसलमानी पहनावा छोड़वा रहे हैं, क्योंकि पण्डित मोतीलाल जी पहले मुसलमानी पोशाक पहनते थे, परन्तु-गाँधी आन्दोलन धोती का प्रचार कर रहा है, इसके सिवा (४) अब लोग मुसलमानी ढङ्ग की इमारतें भी नहीं बनवाते! बस जनाब, इन्हीं महत्वपूर्ण कारणों से मुसलमानों को चाहिए कि पृथक् निर्वाचन पर डटे रहें।

❀

निस्सन्देह पृथक निर्वाचन के कारण-निर्देश में मियाँ जी दूर की कौड़ी लाए हैं। परन्तु न जाने अन्यान्य बहुत सी बातें आप कैसे भूल गए! अजी जनाब, हिन्दू दाढ़ी नहीं रखते, सुन्नत नहीं कराते, रोज़ा नहीं रखते और न नमाज़ ही पढ़ते हैं! और तो और, कमबख़्त पाख़ाने से आकर मिट्टी से हाथ साफ़ किया करते हैं! अब आप ही 'ईमान-धरम' से बतलाइए, कोई भला आदमी इनके साथ सम्मिलित निर्वाचन की बात कैसे स्वीकार कर सकता है?

❀

लेहाज़ा अगर आप चाहते हैं, कि मुसलमान पृथक निर्वाचन की माँग त्याग दें तो सब से पहले अपने लिए 'सुथना' और अपनी श्रीमती जी के लिए 'सुथनी' सिलवाइए तथा अपने चिरञ्जीव—उहुँक—सल्लमहू को 'ख़ालिक़ बारी, सिरजनहार ; वाहिद एक, बदा करतार' का पाठ पढ़ाइए। हाँ, इस्तिञ्जा के लिए थोड़ी सी मिट्टी पहले से ही रखवा लीजिएगा।

❀

इसीलिए श्रीजगद्गुरु ने तो अभी से 'पीरे-मुग़ाँ' की पदवी प्राप्त कर ली है और दोनों वक़्त तसबीह लेकर 'लाइल्लाह-इल्-लिल्लाह' जपने लगे हैं। श्रीमती हर होलीनेस ने भी 'उतरना' पहनने के लिए कानों को छेदवा लिया है और कहती हैं, चन्द्रहार तुड़वा कर जड़ाऊ तौक़ बनवा दो। आख़िर, किया क्या जाए? क्योंकि हिन्दू जब तक हिन्दू रहेंगे, तब तक मिस्टर ज़हूर भी अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी नहीं छोड़ेंगे। लेहाज़ा मजबूरी है।

❀

मगर जनाब ; श्रीजगद्गुरु तो मुग्ध थे उस महफ़िल पर, जिसके सामने ऐसी मार्केदार बातें कही गई थीं। सोचा था, निश्चय ही पृथक निर्वाचन के सम्बन्ध में ज़हूर साहब की ये अकाट्य युक्तियाँ या ग़ैर-तरदीद दलीलें सुन कर जनता मुग्ध हो गई होगी और आपके दीर्घजीवन के लिए अल्लाह ताला से दुआ माँगने लगी होगी।

❀

परन्तु एक कुँजड़े भय्या ने उठ कर सारा गुड़ गोबर कर दिया! पृथक निर्वाचन के लिए जनाब ज़हूर साहब को यों पाजामे और धोती में भटकते देख कर उसने कहा—"यह सब आगामी म्युनिसिपल निर्वाचन के लिए हो रहा है। लोग चाहते हैं कि म्युनिसिपैलिटी की मेम्बरी मिल जाए। इसीलिए ऐसी बातें कहते हैं।" उफ़ रे ज़ालिम, तेरी बेरहमी! आख़िर तरकारी बेचने वाला कुँजड़ा ही तो ठहरा। एक ही जुमले में बैरिस्टर साहब की सारी दलीलों को कद्दू की तरह काट कर रख दिया। दईमारे को दया भी न आई!

❀

ख़ैर, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। आपकी 'लीडरी' का रङ्ग गठा हुआ है। अल्लाह के फ़ज़ल से दर्जनों कुँजड़े और क़साई आपके अनुयायी हैं। एक अपवाद निकल ही गया तो क्या हुआ? 'क़द्र गौहर शह बेदानद या बेदानद जौहरी!' इस पाजामे और धोती की दलील का मर्म समझना सब का काम नहीं। फड़क तो उठे होंगे, हमारे मोटे मौलाना इन दलीलों को सुन कर; और आशा है कि सेण्ट्रल ख़िलाफ़त कमिटी की ओर से जनाब ज़हूर साहब के लिए मुबारकबादी का तार भी आता होगा।

❀

बङ्गाल के ब्राह्मण-कुल-भूषण श्री० कृष्णहरि बैनर्जी ने सात शादियाँ की हैं। माल 'सेकेण्ड हैण्ड' होते ही उसे फ़ौरन 'रिजेक्ट' करके दूसरा लाते हैं। अर्थात् इस घोर कलिकाल में भी आपने बड़ों के नाम और धर्म की रक्षा कर रक्खी है। सच पूछिए तो ऐसे ही धर्मात्माओं की कृपा से यह धरित्री शेषनाग के मस्तक पर टिकी है, नहीं तो अब तक अवश्य ही रसातल चली गई होती।

❀

परन्तु यह कलियुग कमबख़्त भी क्या कम बदमाश है? दुष्ट ने उनकी चतुर्थी धर्मपत्नी को बहका कर अलीपुर की मैजिस्ट्रेटी में नालिश करा दी है कि 'जब से श्रीमती 'सातवीं' आई हैं, तब से "अली कली ही ते विंध्यो" का व्यापार हो रहा है। पण्डित जी बेचारी 'पुरानियों' को पूछते भी नहीं।' क्यों पूछें? एक तो 'रिजेक्टेड' माल के लिए बेचारे को व्यर्थ ही गोदाम-भाड़ा देना पड़ता होगा, ऊपर से यह शिकायत कि 'पूछते भी नहीं!' हत् तेरी दुनिया की!

❀

दरख़्वास्त में कहा गया है, कि सन्तान होते ही बनर्जी महाशय बीबी बदल दिया करते हैं—"जिमि नूतन पट पहिरि के नर परिहरै पुरान!" भई, आजकल फ़ैशन का ज़माना है। फ़्रान्स और अमेरिका वाले शौक़ीन नित्य ही पुराने फ़ैशन को छोड़ते और नए को ग्रहण करते जाते हैं। इसलिए अगर बैनर्जी महाशय भी हर 'सीज़न' में बीबी बदल देते हैं तो क्या बुरा करते हैं?

❀

पुराने ज़माने में लोग सौ-सौ बीबियाँ करते थे। आजकल भी राजे-महाराजे दर्जनों बीबियाँ करते हैं। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द-कन्द के सोलह हज़ार, एक सौ और आठ पटरानियाँ थीं, तो क्या आप चाहते हैं, कि उनके भक्त सात बीबी भी न करें? अरे भाई, एकदम धर्म के साथ ही पूर्वजों का नाम भी मिटा देना चाहते हो क्या?

❀

अलीगढ़ के अब्दुल रज़्ज़ाक हज्जाम ने अपनी तीन लड़कियों को एक साथ ही कुएँ में डाल दिया! इसके लिए अदालत ने उसे सात साल तक कठिन कारागार की सज़ा दी है। इसलिए ठण्ढा मौसिम आने पर श्रीजगद्गुरु ने इस फ़ैसले के विरुद्ध जेहाद करने का इरादा किया है, क्योंकि मियाँ हज्जाम का काम, इनकी राय में, उन लाखों हिन्दुओं के कामों की अपेक्षा अधिक दयापूर्ण, मनुष्यत्वपूर्ण, धर्मपूर्ण, सहृदयतापूर्ण और सलज्जतापूर्ण है, जो अपनी लड़कियों को बहत्तर सालों को अर्पण कर देते, बाल-विवाह को धार्मिक बताते और बाल-विधवाओं को ज़बर्दस्ती दाम्पत्य सुख से बञ्चित करके समाज में व्यभिचार फैलाते हैं।

❀

अलीगढ़ी नाई—नहीं 'न्यायी', उन धर्मढोंगी महामहोपाध्यायों से लाख दर्जे बढ़ कर न्यायी और धर्मात्मा है, जिन्होंने सारदा-क़ानून के विरोध में चार-चार और छः-छः महीने के शिशुओं तक का विवाह कर डाला है। ऐसे मानव-कुल-कलङ्क, घोर नारकीयों और पापियों को छोड़ कर क़ानून को कोई अधिकार नहीं था, अब्दुल रज़्ज़ाक को दण्ड देने का। फलतः श्रीजगद्गुरु आपाद-मस्तक से इस फ़ैसले की निन्दा करते हैं।

❀

हः हः हः हः! 'इन्तहाए नशा में आता है होश, होशियारी इन्तहाए नशा है।' बूटी जहाँ खोपड़ी छोड़ कर लघुशङ्का करने या ज़रा सा दम लेने गई नहीं, कि हज़रत जामे से बाहर हुए। क्या लिखने को और क्या लिख गए! अमाँ, छोटी-छोटी, भोली-भाली, आलुलायित कुन्तला और धूलि-धूसरित : स्नेह, ममता और प्रेम की पुतलियाँ विधवाएँ ही तो इस समाज की शोभा हैं। डाल दो मुट्ठी भर पिसा हुआ 'राई-नून' उन 'बदबीं'

आँखों में, जिन्हें वह अठारह इञ्च का सुन्दर वर और चौदह इञ्च की गुड़िया-सी दुलहिन अच्छी नहीं लगती, और नरक में पड़ें उस कम्बख़्त नास्तिक के सात पुरखे, जिनकी फूटी आँखें बेचारे बूढ़ों को, वर-वेश में देखना पसन्द नहीं करतीं।

❀

तुम्हें चाहिए था जगद्गुरु, कि इन अनुपम—अलौकिक दृश्यों के लिए सनातन-धर्म के आचार्यों की ख़ैर मनाते, उनके स्वास्थ्य का 'टोस्ट' पान करते, उनके दीर्घ-जीवन के लिए शाह मदार की मज़ार पर फूल-बताशे चढ़ाते! इष्ट देवता से प्रार्थना करते कि भगवन, ये चिकनी खोपड़ियाँ इतनी चिकनी हो जायँ, कि जिस तरह कमल के पत्ते पर पानी की बूँद चक्कर काटा करती और ठहर नहीं पाती, उसी तरह बुद्धि भी उन खोपड़ियों पर चक्कर मारा करे और ठहर न सके।

❀

मगों के मुल्क, अर्थात् ब्रह्मदेश से शुभ समाचार आया है, ये कि एक दिन थायेटमऊ की पुलिस-छावनी पर प्रायः ५०० सशस्त्र विद्रोहियों ने हमला किया। कैम्प में मिलिटरी पुलिस के थोड़े से सिपाही और तीन अङ्गरेज़ अफ़सर थे। उन्होंने झटपट २५-३० विद्रोहियों को मार गिराया और बाक़ी विद्रोही भाग गए। परन्तु धर्म की महिमा देखिए, कि इस युद्ध में पुलिस का कोई आदमी घायल तक नहीं हुआ।

❀

होता कैसे जनाब, इधर से छोड़ी जाती थीं गोलियाँ और अभागे विद्रोही छोड़ते थे, मथुरा के पेड़े और खुरचन के लड्डू। फलतः गोली लगते ही विद्रोही तो मर जाते थे और हमारी सरकार की पुलिस खुरचन की मिठाई चाभ कर मस्त हो जाती थी।

❀

इसी वजह से तो महीनों हो गए; मगर बरमा का विद्रोह शान्त नहीं हुआ। आख़िर ये मिठाई के मज़े छोड़े क्यों जाएँ? वरना जब 'थोड़े से सिपाही' ५०० विद्रोहियों को मार कर भगा सकते हैं, तो इस विद्रोह के दमन करने में धरा ही क्या है? इसलिए जगद्गुरु की राय है, कि इसे कुछ दिन योंही चलने दिया जाय, ताकि खुरचन खा-खाकर सिपाहियों की तोंदें श्री० जगद्गुरु की तोंद को भी मात करने लगें।

❀

महात्मा गाँधी भी, माशा अल्लाह, अजीब तर्ज़ो-अन्दाज़ के आदमी हैं। मौक़ा पाते ही बेचारे सनातन-धर्मावलम्बियों पर एक छींटा छोड़ देते हैं। उस दिन बम्बई की एक सभा में कहने लगे—"अस्पृश्यता हिन्दू जाति का कलङ्क है और जब तक यह दाग़ नहीं मिट जाएगा, तब तक हम स्वराज्य के योग्य नहीं हो सकते।" बला से नहीं हो सकते। आपको मालूम नहीं कि सारन और चम्पारन की देहाती स्त्रियाँ गलगण्ड (घेघा) रोग को हँसली का अड्डा समझती हैं और उसे सौन्दर्य का एक आवश्यक अङ्ग मानती हैं। फलतः वह 'कलङ्क' का 'दाग़' नहीं, 'वरन्' हिन्दुत्व के मस्तक का कौस्तुभ है। अस्पृश्यता ही न रही, तो इस धर्म में रहा क्या जायेगा जनाब?

* * *

[आलोचक—श्री० अवध उपाध्याय]

आँखों में—लेखक हरिकृष्ण 'प्रेमी'। प्रकाशक कलाधर-किरण-मण्डल, लश्कर ग्वालियर। सोल एजेण्ट साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या लगभग ८०; मूल्य १।)

यह कविता की एक छोटी सी पुस्तक है। जैसा कि पुस्तक के नाम से प्रकट है। इस ग्रन्थ के सभी पद्य आँख के सम्बन्ध में लिखे गए हैं और कुछ पद्य वास्तव में बड़े मनोहर हैं। ग्रन्थकार की वेदनाएँ सच्ची, स्वाभाविक तथा अपनी हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही निम्न-लिखित पद बहुत सुन्दर है :—

पीछे इस दुखिया जीवन के
ये पागल पन्ने खोलो,
पहले कलुषित हृदय-वेदना—
के निर्मल जल में धोलो।

कहीं-कहीं पर प्रेमी जी की भाषा अत्यन्त अधिक सरस, सुन्दर तथा मनोहर हो जाती है, जैसा कि नीचे के पदों के पढ़ने से ज्ञात होगा :—

आँखों में प्यारे दर्शन हैं
अङ्कित है पहली तस्वीर !
भले मिटाओ, पर न मिटेगी—
यह पत्थर की अमिट लकीर।
निष्ठुरता की रगड़ लगा कर—
व्यर्थ मिटाने का है यत्न,
जितनी रगड़ो, उज्ज्वल होगी
हाँ, चलने दो यही प्रयत्न !
तोड़-तोड़ कर शत-शत बन्धन
लाँघ-लाँघ कर लाखों कोट !
मेरा प्यार सदा तव चरणों—
पर बरबस जावेगा लोट !
मेरे आँसू के धागों से,
पानी की ज़ञ्जीरों से
काली पुतली के पिंजरे में
बन्दी हो तुम कीरों-से !
अन्तरपट पर अङ्कित है जो,
हो कैसे आँखों की ओट ?
तुम्हें क़ैद रखने को काफ़ी—
है मेरी आँखों का कोट।
बहुत झिझकते थे तुम मुझसे
सेवा करवाने में नाथ !
आँखों में ही अब तो तुम हो,
सब कुछ है मेरे ही हाथ।

इसी प्रकार इस पुस्तक में अनेक सुन्दर पद्य हैं। इस पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता मुझे यह प्रतीत होती है कि लेखक के विचार मौलिक कवितामय हैं। आजकल के कवियों के सिर पर काठिन्य दोष प्रायः मढ़ा जाता है, परन्तु इस पुस्तक की भाषा अत्यन्त ही सरल तथा सुन्दर है। 'प्रेमी' जी की कुछ उपमाएँ वास्तव में अत्यन्त अधिक मनोहर हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी-साहित्य में इस ग्रन्थ को अच्छा स्थान प्राप्त होगा और 'प्रेमी' जी उच्च-श्रेणी के कवि मान लिए जायँगे। इस ग्रन्थ के अधिक छन्द ताटङ्क हैं और कुछ वीर भी हैं।

* * *

क़ैसर की रामकहानी—अनुवादक श्री० पारसनाथ सिंह। प्रकाशक भारती पब्लिशर्स लिमिटेड, पटना। पृष्ठ-संख्या १४४; मूल्य १)

जर्मन देश के सम्राट क़ैसर को सब लोग जानते हैं। गत यूरोपीय महाभारत का वही प्रधान सूत्रधार था। उसने अपनी रामकहानी स्वयं लिखी है। उसने अपने ग्रन्थ में इस बात के सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि यूरोपीय महाभारत में सब दोष इङ्गलैण्ड का है और स्वयं क़ैसर दूध का धुला हुआ है। क़ैसर ने इस पुस्तक में वास्तव में जर्मनी के लोगों के सामने अपनी कैफ़ियत पेश की है और अपने को निर्दोष सिद्ध करने का घोर प्रयत्न किया है।

* * *

'विशाल भारत' कार्यालय की पुस्तकें

(१) **कुमुदिनी**—लेखक श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर। अनुवादक धन्यकुमार जैन। प्रकाशक "विशाल-भारत" पुस्तकालय, १२०।२ अपर सरकूलर रोड, कलकत्ता। पृष्ठ-संख्या ३८४; मूल्य ३)

(२) **गल्पगुच्छ**—लेखक श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर। अनुवादक श्री० धन्यकुमार जैन। प्रकाशक "विशाल-भारत" पुस्तकालय। पृष्ठ-संख्या २२२; मूल्य १॥)

(३) **भेड़ियाधसान**—लेखक श्री०परशुराम। अनुवादक श्री० धन्यकुमार जैन। प्रकाशक "विशाल-भारत" पुस्तकालय। पृष्ठ-संख्या १७८, मूल्य १।)

'विशाल-भारत' ने श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सब पुस्तकों का अनुवाद करना प्रारम्भ किया है। वास्तव में यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अब हिन्दी के पाठकों को श्री० रवीन्द्र बाबू की सब पुस्तकें पढ़ने के लिए मिलेंगी। कुछ लोग अनुवाद के विरुद्ध जान पड़ते हैं। परन्तु वास्तव में यह भयङ्कर भूल है। मेरा विचार है कि सब भाषाओं के सर्व-श्रेष्ठ लेखकों की सब कृतियों का हिन्दी भाषा में अनुवाद होना, लाभदायक ही नहीं, वरन् आवश्यक भी है। ऐसी पुस्तकें आदर्श का भी काम देती हैं और उनसे यह भी पता चलता है कि दूसरी भाषा के सर्वश्रेष्ठ लेखक किस प्रकार लिखते हैं। उनसे यह भी पता चलता है कि सर्व-श्रेष्ठ लेखक की सब कृतियाँ भी अच्छी नहीं होतीं। 'कुमुदिनी' श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक उपन्यास है और गल्प-गुच्छ उनके गल्पों का संग्रह तथा भेड़ियाधसान ६ छोटी-छोटी हास्यात्मक कहानियों का संग्रह है। इन सब पुस्तकों के अनुवादक श्री० धन्यकुमार जी जैन हैं। अनुवाद वास्तव में बड़ा सुन्दर हुआ है।

* * *

दीपावली—लेखक बाबू चन्द्रभानुसिंह, भूमिका-लेखक श्री० रामचरित उपाध्याय। प्रकाशक हिन्दी पुस्तकालय, बलिया। पृष्ठ-संख्या ६६; मूल्य ।)

यह छोटी-सी पुस्तक श्री० चन्द्रभानुसिंह की कविताओं का संग्रह है। कविताएँ अच्छी तथा सरस हैं। कहीं-कहीं पर लेखक की कविताएँ वास्तव में बड़ी सरस तथा मनोहर हैं। धन के सम्बन्ध की कविता वास्तव में बड़ी सुन्दर है :—

काम का है धन नहीं वह भार है, दुःख सार है।
कोष में सञ्चित जो रहता—आलसी व्यापार है॥
भूख से पीड़ित हुए ही भ्रातृवर मर जायँ सब।
पास से निकले न कौड़ी—सम्पदा वह क्षार है॥

श्री० चन्द्रभानुसिंह में कवि-हृदय का अस्तित्व पाया जाता है।

* * *

वीर-शिरोमणि यतीन्द्रनाथ दास—संग्रहकर्ता मुकुन्दराम शर्मा। प्रकाशक नवयुवक हितैषी पुस्तकालय, देहरादून। पृष्ठ-संख्या १०४; मूल्य ।॥)

इस पुस्तक में वीर-शिरोमणि यतीन्द्रनाथ दास का अच्छा तथा रोचक जीवन-चरित्र है।

* * *

प्राप्ति-स्वीकार

(१) **सांसारिक सुख**—लेखक पं० सोमेश्वरदत्त शुक्ल, बी० ए०। प्रकाशक अभ्युदय प्रेस प्रयाग; मूल्य ।)

(२) **पारलौकिक मनोवृत्ति का दुष्परिणाम**—लेखक प्रो० जे० आर० पाण्डेय। प्रकाशक व्रजलाल 'आर्य' (जज), ईश्वर-भवन, लुधियाना। पृष्ठ-संख्या २८; मूल्य ।)

(३) **उपन्यास-कुसुम**—सम्पादक श्री० दुलारेलाल श्रीवास्तव; मूल्य प्रति अङ्क ।)

(४) **उत्तराखण्ड की यात्रा**—लेखक श्री० मथुराप्रसाद। प्रकाशक राधारमण कान्त, विश्वेश्वरगञ्ज, बनारस सिटी। पृष्ठ-संख्या १५४; मूल्य ॥)

(५) **सन्त-जीवनी**—लेखक—गिरिजाकुमार घोष। प्रकाशक साहित्य-परिषद् कार्यालय, गुरुकुल काँगड़ी। पृष्ठ-संख्या १०२; मूल्य ।॥)

(६) **साम्य-तत्व**—लेखक मास्टर चन्द्रिका प्रसाद वाथप, लखनऊ। प्रकाशक श्री० सरस्वती साहित्य-मन्दिर कार्यालय, ६६८ सआदतगञ्ज रोड लखनऊ। पृष्ठ-संख्या ११८; मूल्य ।=)

(७) **त्रिगर्तोद्धारक शतक काव्य**—लेखक श्री० वृहद्बल 'संयमी' शास्त्री। प्रकाशक व्रजलाल 'आर्य' (जज) ईश्वर-भवन, लुधियाना। पृष्ठ-संख्या ५६; मूल्य ।-)

* * *
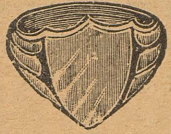
सोने चाँदी के फ़ैन्सी ज़ेवर के लिए

सोनी मोहनलाल जेठाभाई ३२ अरमनी स्ट्रीट, फ़ो० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता से बी व सी केटलॉग ।।) व ।) भेज कर देखिए ।

पसारठकी सर्व प्रकार औषध

सस्ते दरमें बेचना शुरू कर दिया ।

किराना, मशाला, पाचन, काढ़ा, घुटी, सर्व प्रकार काष्ठ औषध जड़ी बूटी (बन औषधियां) हरी और सूखी शुद्ध और ताजा यथार्थ मूल्यपर मिलेगीं । और भी कलकत्तेमें मिलनेवाला देशी विलायती सब तरहका माल थोक और खुदरा कम खर्चेसे और हिफाजतके साथ भेजा जाता है । कुछ दाम अगाड़ी भेज देना होगा और विशेष हाल जाननेके लिये या कोई चीजका भाव मंगाना होवे तो -) आनाका टिकट भेजकर निश्चय कर लीजिये ।

कमीशन एजेण्ट—भारत भैषज्य भण्डार

नं० ९ मल्लिक स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता ।

रजिस्टर्ड भारतीय कैमरा

शीशा काटने की क़लम व जेबी चरख़ा मुफ़्त

हमारा स्वदेशी कैमरा बड़ी आसानी से प्लेट पर चाहे जिस चीज़ की साफ़ और सुन्दर, टिकाऊ तस्वीर खींचता है । बढ़िया फ़ोटो न खिंचे तो दाम वापिस । एक प्लेट, काग़ज़, मसाला, फ्रेम, ३ डिश, सुर्ख़ लालटैन और हिन्दी में तरकीब साथ है । २॥ × ३॥ इञ्च साइज़ की तस्वीर खींचने वाला कैमरा का मूल्य ३॥) रुपया ; डा० म० ॥=); ३। × ४। इञ्च साइज़ की तस्वीर खींचने वाला कैमरा का मूल्य ४) रु०; डा० म० ।॥)

पता—दीन ब्रादर्स, नं० ८, अलीगढ़

कम क़ीमती और छोटा केमरा ख़रीदना रुपया बर्बाद करना है ।

फ़ोटोग्राफ़ी सीख कर

२००) मासिक कमा लो
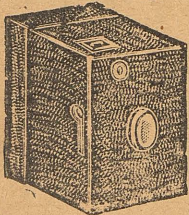
यह नई डिज़ायन का रॉयल हैण्ड केमरा अभी आया है । इसमें असली जर्मनी लैंस न्यू फ़ाइण्डर और स्प्रिङ्ग शटर लगा है तथा ३। × ४। इञ्च के बड़े प्लेट पर टिकाऊ और मनोहर तस्वीर खींचता है । फ़ोटू खींचने में कोई दिक़्क़त नहीं, स्प्रिङ्ग दबाया कि तस्वीर खिंच गई । फिर भी शर्त यह है कि—

यदि केमरे से तस्वीर न खिंचे तो
१००) नक़द इनाम

साथ में कुछ ज़रूरी सामान, प्लेट, सैल्फ़ टोनिङ्ग काग़ज़, प्लेट धोने के तीन मसाले, फ़ोटोग्राफ़िक लालटेन, २ तश्तरी, तस्वीर छापने का फ्रेम, सरल विधि व स्वदेशी जेबी चर्ख़ा मुफ़्त दिया जाता है । मूल्य केवल ४) डाक ख़र्च ।॥)

पता—माधव ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़ नं० ४१

गृहस्थों का सच्चा मित्र

३० वर्ष से प्रचलित, रजिस्टर्ड

बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा । हमेशा पास रखिए । वक़्त पर लाखों का काम देगी । सूची मय कलेण्डर मुफ़्त मँगा कर देखो ।

कीमत ।॥) तीन शीशी २) डा० म० अलग

पताः—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

हिन्दी हैण्ड प्रेस

हिन्दी भाषा प्रेमियो ! आप इसमें कार्ड, लिफ़ाफ़ा, चैक, रोज़मिती के पर्चा, छोटे-छोटे इश्तहार आदि छोटे काम स्वयं तुरन्त छाप कर काम में लाइए । बड़े काम की चीज़ है । शीशा धातु के अक्षर, मात्राएँ व स्पेस मिला कर ४०० टाइप हैं । प्रेस का साइज़ ७ इञ्च लम्बा और ४ इञ्च चौड़ा है । छापने के अन्य सामान, स्याही की डिब्बी और छापने की विधि साथ में मौजूद है । मूल्य ५), डा० म० १) इसके लिए अधिक टाइप और स्याही भी हमारे यहाँ बिकती है ।

पता—मैनेजर देशबन्धु कार्यालय,
मु० बिहारघाट, पो० राजघाट, ज़ि० बुलन्दशहर

एक अजीब पुस्तक

हारमोनियम, तबला व सितार गाइड प्रकाशित हुई है, जिसकी मदद से २-३ माह में अनजान आदमी भी हारमोनियम, तबला व सितार बजाना सीख सकता है । क्योंकि इसमें नई-नई तर्ज़ के गायनों के अलावा राग-रागिनियों का अच्छी तरह से वर्णन किया गया है । मू० १) पोस्ट ख़र्च ।); सच्चा इङ्गलिश टीचर पृष्ठ २६६; मूल्य डाक-व्यय सहित १॥)

पता—सत्यसागर कार्यालय नं० २५, अलीगढ़

घर बैठे एक रुपया रोज़ पैदा करने का उपाय

क़सीदा काढ़ने की मशीन

इस मशीन द्वारा मख़मल पर ऊन के बेल-बूटे प्रत्येक स्त्री-पुरुष घर बैठे बड़ी आसानी से मन-चाहे काढ़ सकते हैं । टोपी, रूमाल, कुर्सी की गद्दियाँ, तकियों के गिलाफ़ भी काढ़े जा सकते हैं, जिससे एक रुपया रोज़ पैदा हो सकता है, चलाने की विधि मशीन के साथ भेजते हैं । मूल्य ५) रु०, डाक-व्यय ।≡)

पता—एस० एन० पाठक एण्ड को०
सराय खिरनी, अलीगढ़

नवीन ! स्प्रिङ्ग वाला ! अद्भुत !

जेब का चरख़ा

यह हमने अभी तैयार किया है । समूचा लोहे का बना है । इससे स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ बड़े शौक़ से सूत कात-कात कर ढेर लगा देते हैं । यह चलने में निहायत हलका और देखने में ख़ूबसूरत है । मू० १) डा० म० ।-)

पता—जी० एल० जैसवाल, अलीगढ़

भूत, भविष्य, वर्त्तमान बताने वाला जादू का

मैस्मेरिज़्म विद्या से भरा हुआ यह प्लानचेट गुप्त प्रश्नों का (जैसे रोग, यात्रा, परीक्षा का परिणाम, चोरी, खोए मनुष्य या गड़े धन का पता, व्यापार, रोज़गार में हानि या लाभ । इस वर्ष फ़सल अच्छी होगी या बुरी, विवाह होगा या नौकरी लगेगी कि नहीं, गर्भ में लड़का है कि लड़की । फ़लाँ काम सिद्ध होगा कि नहीं, इत्यादि) ठीक-ठीक उत्तर पेन्सिल द्वारा जिस भाषा में चाहो, लिख देता है । अभ्यास की तरकीब सहित मूल्य २॥) ; डाक-ख़र्च ॥)

पता—दीन ब्रादर्स अलीगढ़, नं० ११

अति सुन्दर स्वदेशी साड़ियाँ

हमारी सुप्रसिद्ध ख़ालिस टसर की फ़ैन्सी तथा फ़ैशनेबुल नीले तथा लाल चिकदार किनारे वाली साड़ियाँ, जो २), २॥) रु० गज़ की विलायती टसर को मात करती हैं, साइज़ ५ × १। गज़ मूल्य केवल ७।), ५। × १। गज़ ८) और ६ × १। गज़ ८॥) प्रति साड़ी, पैकिङ्ग तथा डाक-महसूल माफ़ । नमूने की लिस्ट मुफ़्त मँगाइए, एजेण्टों की हर स्थान में आवश्यकता है ।

पता—दी इण्डियन ट्रेडिङ्ग कं०, फगवाड़ा, पञ्जाब

दवाइयों में

ख़र्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगा कर देखिए ।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

की

कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें

धार्मिक पुस्तकें

सचित्र हिन्दी महाभारत—महाभारत का ऐसा प्रामाणिक और सुन्दर संस्करण आज तक और कहीं भी नहीं प्रकाशित हुआ। भाषा इतनी सरस और सरल है कि बूढ़े-जवान और स्त्री-बच्चे सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। रङ्ग-बिरङ्गे और भावपूर्ण चित्रों की भरमार है। अब तक इसके २१ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। प्रति अङ्क का मूल्य १।) और स्थायी ग्राहकों से १)

हिन्दी महाभारत—यह पुस्तक महाभारत के अठारह पर्वों की कथा का संक्षिप्त वर्णन है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४)

महाभारत-मीमांसा—महाभारत-सम्बन्धी शङ्काओं का इसमें समाधान किया गया है। महाभारत पढ़ने से पहले यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़ लेनी चाहिए। मूल्य ४), महाभारत के स्थायी ग्राहकों के लिए केवल २॥)

रामचरित-मानस (सटीक)—रामचरित-मानस का यह संस्करण काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रतिष्ठित सदस्यों से शुद्ध करा कर प्रकाशित किया गया है। इसके टीकाकार हैं रायसाहब बाबू श्यामसुन्दर दास जी, बी० ए०। मूल्य ६)

दार्शनिक और आध्यात्मिक पुस्तकें

ज्ञानयोग (प्रथम और द्वितीय खण्ड)—इस पुस्तक में स्वामी विवेकानन्द के ज्ञानयोग-सम्बन्धी उन व्याख्यानों का संग्रह किया गया है जो उन्होंने योरप तथा अमेरिका में दिए थे। प्रत्येक खण्ड का मूल्य २॥)

ज्ञानेश्वरी—मराठी-साहित्य के उद्भट विद्वान् तथा सन्त श्री० ज्ञानेश्वर महाराज कृत गीता की व्याख्या का हिन्दी अनुवाद। मूल्य ४)

कर्मवाद और जन्मान्तर—यह बङ्गाल के सुप्रसिद्ध दार्शनिक बाबू हीरेन्द्रनाथ दत्त, एम० ए०, बी० एल०, 'वेदान्त-रत्न' की बँगला पुस्तक का अनुवाद है। इसके पढ़ने से कर्म के सम्बन्ध में बहुत सी विलक्षण बातें मालूम होंगी और जन्मान्तर होने के विलक्षण उदाहरण देखने को मिलेंगे। मूल्य केवल २॥)

गीता में ईश्वरवाद—यह पुस्तक भी उक्त लेखक की बँगला पुस्तक का अनुवाद है। इसमें ईश्वरवाद के सम्बन्ध में सभी प्रकार के सुप्रसिद्ध दार्शनिकों के मत संग्रहीत किए गए हैं। मूल्य १॥)

साहित्यिक पुस्तकें

हिन्दी-भाषा और साहित्य—इस पुस्तक को रायसाहब बाबू श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ने अपने अनेक वर्षों के अनुभव और परिश्रम-पूर्वक एकत्र की हुई सामग्री की सहायता से बड़ी छानबीन के साथ लिखा है। इसमें हिन्दी-साहित्य के प्रत्येक युग की मुख्य-मुख्य विशेषताओं तथा साहित्यिक प्रगति का उल्लेख किया गया है। मूल्य ६)

हिन्दी-साहित्य का इतिहास—इस पुस्तक में हिन्दी-साहित्य के इतिहास का विवेचनात्मक रूप से वर्णन किया गया है। इसके लेखक हैं, काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी-लेक्चरर पण्डित रामचन्द्र जी शुक्ल, बी० ए०। मूल्य केवल ४॥)

तुलसी ग्रन्थावली—इस पुस्तक में गोस्वामी तुलसीदास जी की समस्त रचनाओं का संग्रह, उनकी जीवनी तथा उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में आलोचनात्मक निबन्ध हैं। पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड का मूल्य २॥) और एक साथ लेने से तीनों का मूल्य ६)

हिन्दी रस-गङ्गाधर—यह संस्कृत के उद्भट विद्वान पण्डितराज जगन्नाथ के ग्रन्थ का हिन्दी-रूपान्तर है। आरम्भ में १०६ पृष्ठों में ग्रन्थकार का परिचय तथा विषय-विवेचन आदि है, जिससे ग्रन्थ को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। मूल्य ३॥)

ऐतिहासिक पुस्तकें

मौर्य साम्राज्य का इतिहास—मौर्यकालीन भारत का यह बहुत प्रामाणिक तथा मौलिक इतिहास है। इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत सत्यकेतु विद्यालङ्कार जी को ऐसी उत्तम और खोजपूर्ण पुस्तक लिखने के लिए हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से १२००) बारह सौ रुपए का मङ्गलाप्रसाद पुरस्कार मिला है। मूल्य ५)

योरप का इतिहास—यह श्रीयुत भाई परमानन्द, एम० ए० द्वारा लिखित योरप का बहुत ही प्रामाणिक और बिलकुल नए ढङ्ग का इतिहास है। मूल्य ४)

फ़्रान्स का इतिहास—फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति में अत्याचार-पीड़ित जनता ने कैसा उग्र रूप धारण किया था और एकसत्तात्मक प्रणाली के पक्ष-पातियों को उनकी करनी का जो मज़ा चखाया था, इस पुस्तक की प्रभाव-शालिनी पंक्तियों में उसका विवरण पढ़ कर आपके हृदय में एक नवीन उत्साह का सञ्चार होगा। मूल्य ३)

विवरण के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए !

मिलने का पता :—

मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

Printed and Published by Tribeni Prasad B. A.—Editor, at The Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad